आचार्य कुन्दकुन्द-रचित

पंचास्तिकाय

(खण्ड-1)

द्रव्य-अधिकार

(मूलपाठ-डॉ. ए.एन.उपाध्ये)

(व्याकरणिक विश्लेषण, अन्वय, व्याकरणात्मक अनुवाद)

संपादन

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

अनुवादक

श्रीमती शकुन्तला जैन

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

राजस्थान

आचार्य कुन्दकुन्द-रचित

पंचास्तिकाय

(खण्ड-1)

द्रव्य-अधिकार

(मूलपाठ-डॉ. ए. एन. उपाध्ये)

(व्याकरणिक विश्लेषण, अन्वय, व्याकरणात्मक अनुवाद)

संपादन

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

निदेशक

जैनविद्या संस्थान-अपभ्रंश साहित्य अकादमी

अनुवादक

श्रीमती शकुन्तला जैन

सहायक निदेशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

राजस्थान

◈ प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

श्री महावीरजी - 322 220 (राजस्थान)

दूरभाष - 07469-224323

◈ प्राप्ति-स्थान

1. साहित्य विक्रय केन्द्र, श्री महावीरजी

2. साहित्य विक्रय केन्द्र

दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी

सवाई रामसिंह रोड, जयपुर - 302 004

दूरभाष - 0141-2385247

◈ प्रथम संस्करण : अगस्त, 2014

◈ सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

◈ मूल्य -400 रुपये

◈ ISBN 978-81-926468-4-8

◈ पृष्ठ संयोजन

फ्रैण्ड्स कम्प्यूटर्स

जौहरी बाजार, जयपुर - 302 003

दूरभाष - 0141-2562288

◈ मुद्रक

जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि.

एम.आई. रोड, जयपुर - 302 001

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
	प्रकाशकीय	v
1.	सम्पादक की कलम से	1
2.	संकेत सूची	6
3.	द्रव्य-अधिकार	11
4.	मूल पाठ	107
5.	परिशिष्ट-1	
	(i) संज्ञा-कोश	119
	(ii) क्रिया-कोश	132
	(iii) कृदन्त-कोश	135
	(iv) विशेषण-कोश	140
	(v) सर्वनाम-कोश	149
	(vi) अव्यय-कोश	150
	परिशिष्ट-2	
	छंद	156
	परिशिष्ट-3	
	सहायक पुस्तकें एवं कोश	159

प्रकाशकीय

आचार्य कुन्दकुन्द-रचित **'पंचास्तिकाय (खण्ड–1) द्रव्य–अधिकार'** हिन्दी-अनुवाद सहित पाठकों के हाथों में समर्पित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

आचार्य कुन्दकुन्द का समय प्रथम शताब्दी ई. माना जाता है। वे दक्षिण के कोण्डकुन्द नगर के निवासी थे और उनका नाम कोण्डकुन्द था जो वर्तमान में कुन्दकुन्द के नाम से जाना जाता है। जैन साहित्य के इतिहास में आचार्य श्री का नाम आज भी मंगलमय माना जाता है। इनकी समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, रयणसार, अष्टपाहुड, दशभक्ति, बारस अणुवेक्खा कृतियाँ प्राप्त होती हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द-रचित उपर्युक्त कृतियों में से 'पंचास्तिकाय' जैनधर्म-दर्शन को प्रस्तुत करनेवाली शौरसेनी प्राकृत भाषा में रचित एक रचना है। इसके पहले **द्रव्य–अधिकार** में 1 से 96 तक की गाथाएँ तथा दूसरे **नव पदार्थ–अधिकार** में 105 से 153 तक की गाथाएँ ही आचार्य द्वारा रचित हैं। 97 से 104 तक की गाथाएँ आचार्य जयसेन द्वारा रचित हाने के कारण अनुवाद में सम्मिलित नहीं की गई है। प्रथम अधिकार में द्रव्य और सत्ता, द्रव्य-गुण-पर्याय, पाँच अस्तिकायः जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश का विशेष प्ररूपण है। इन पाँच द्रव्यों के अतिरिक्त छठे काल द्रव्य का भी कथन किया गया है। दूसरे अधिकार में नव पदार्थ का निरूपण है।

'पंचास्तिकाय' का हिन्दी अनुवाद अत्यन्त सहज, सुबोध एवं नवीन शैली में किया गया है जो पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा। इसमें गाथाओं के शब्दों का अर्थ व अन्वय दिया गया है। इसके पश्चात संज्ञा-कोश, क्रिया-कोश, कृदन्त-कोश, विशेषण-कोश, सर्वनाम-कोश, अव्यय-कोश दिया गया है। पाठक **'पंचास्तिकाय'** के माध्यम से शौरसेनी प्राकृत भाषा व जैनधर्म-दर्शन का समुचित ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, ऐसी आशा है।

प्रस्तुत कृति के दो अधिकारों में से **'द्रव्य-अधिकार'** प्रकाशित किया जा रहा है। जैन दार्शनिक साहित्य को आसानी से समझने और प्राकृत-अपभ्रंश की पाण्डुलिपियों के सम्पादन में पंचास्तिकाय का विषय सहायक होगा। श्रीमती शकुन्तला जैन, एम.फिल. ने बड़े परिश्रम से प्राकृत भाषा सीखने-समझने के इच्छुक अध्ययनार्थियों के लिए **'पंचास्तिकाय (खण्ड-1) द्रव्य-अधिकार'** का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। अतः वे हमारी बधाई की पात्र हैं।

पुस्तक-प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के विद्वानों विशेषतया श्रीमती शकुन्तला जैन के आभारी हैं जिन्होंने **'पंचास्तिकाय(खण्ड-1) द्रव्य-अधिकार'**का हिन्दी-अनुवाद करके जैन दर्शन व शौरसेनी प्राकृत के पठन-पाठन को सुगम बनाने का प्रयास किया है। पृष्ठ संयोजन के लिए फ्रैण्ड्स कम्प्यूटर्स एवं मुद्रण के लिए जयपुर प्रिण्टर्स धन्यवादार्ह है।

न्यायाधिपति नरेन्द्र मोहन कासलीवाल	महेन्द्र कुमार पाटनी	डॉ. कमलचन्द सोगाणी
अध्यक्ष	मंत्री	संयोजक
प्रबन्धकारिणी कमेटी		जैनविद्या संस्थान समिति
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी		जयपुर

वीर निर्वाण संवत्-2540

3.08.2014

ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार

संपादक की कलम से

आचार्य कुन्दकुन्द के अनुसार जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश (पंचण्हं समवाओ) तथा काल (समयो) से लोक निर्मित है। लोक के बाद परिमाण-रहित (अमिओ) अलोक (अलोओ) नामक आकाश (खं) है। लोक के ये घटक अस्तित्व स्वभाववाले हैं, परिणमन-लक्षण-युक्त होते हुए शाश्वत हैं तथा गुण-पर्यायसहित है, इसलिए द्रव्य कहे जा सकते हैं। ये घटक किसी से संरचित नहीं है (अमया) और लोक के आधार हैं।

इस लोक में जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश ये पाँच द्रव्य बहुप्रदेशी हैं, इसलिए अस्तिकाय कहे जाते हैं। काल द्रव्य बहुप्रदेशी नहीं है इसलिये अस्तिकाय नहीं है।

आचार्य का कथन है कि यद्यपि ये सभी द्रव्य एक दूसरे में प्रवेश करते हैं, एक दूसरे के लिए स्थान देते हैं और सदैव मिलते हैं, किन्तु अपने स्वभाव को नहीं छोड़ते हैं।

यहाँ यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि द्रव्यों में परिणमन का निमित्त काल है जो स्वयं अमूर्त और वर्तनालक्षणवाला (स्वयं परिणमनशील) है। यह द्रव्य काल स्वाधीन/शाश्वत है। काल की पर्यायें समय, दिन-रात, मास, वर्ष आदि पराधीन है, नश्वर हैं।

द्रव्य और सत्ता/अस्तित्वः

द्रव्य स्वयं सत्ता है। द्रव्य कि उत्पत्ति तथा विनाश नहीं होता है, किन्तु

द्रव्य तो अस्तित्व ही है। द्रव्य के विविध लक्षणों में से एक लक्षण सब पदार्थों में स्थित अस्तित्व है। सत्ता/अस्तित्व द्रव्य का स्वभाव है। द्रव्य की परिणमन-शीलता के कारण पर्यायें उत्पन्न और विनष्ट होती हैं। आचार्य कहते हैं कि सामान्य सत्ता सब पदार्थों में स्थित है, उनके नाना स्वरूपों में विद्यमान है, उनकी अनन्त पर्यायों में है। उन पर्यायों की उत्पत्ति और व्यय में तथा उन ध्रुव पदार्थों में है। विशेष सत्ता विशिष्ट पदार्थों में स्थित है। उसके नाना स्वरूपों में विद्यमान है। उसकी पर्यायों में है। उस एक पर्याय की उत्पत्ति उसके व्यय में तथा उस ध्रुव पदार्थ में है।

द्रव्य, गुण और पर्याय:

द्रव्य सत् लक्षणवाला है, उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य से युक्त है तथा गुण-पर्याय का आधार है। दूसरे शब्दों में, द्रव्य की उत्पत्ति अथवा विनाश नहीं है, किन्तु द्रव्य का अस्तित्व है। पर्यायें उसमें ही उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यता को करती है। फलस्वरूप पर्याय-रहित द्रव्य नहीं है और द्रव्य-रहित पर्याय नहीं है, द्रव्य और पर्याय अपृथकता से युक्त है। इसी प्रकार, द्रव्य के बिना गुण नहीं है और गुण के बिना द्रव्य नहीं है, द्रव्य और गुणों में अपृथकता है। कहा जा सकता है कि सत् पदार्थ का नाश नहीं है, असत् पदार्थ की उत्पत्ति नहीं है, पदार्थ गुण-पर्यायों में ही उत्पाद-व्यय करते हैं। आचार्य कुन्दकुन्द के अनुसार द्रव्य और गुण में अविभाजित अपृथकता है। उनमें धन और धनी की तरह प्रदेश-भिन्नता नहीं है किन्तु ज्ञान और ज्ञानी की तरह प्रदेश-एकता है। कहने का अभिप्राय है कि उनमें विभाजित पृथकता और तादात्म्य को स्वीकार नहीं किया गया है।

द्रव्य और गुण प्रदेश-रूप से अपृथक होते हुए भी नाम, संरचना, संख्या और उद्देश्य के दृष्टिकोण से पृथक है। अपृथकता में ये पृथकताएँ

विद्यमान रहती है। यदि प्रश्न किया जाए कि द्रव्य और गुणों को पृथक मानने में क्या आपत्ति है? इसके उत्तर में कहा गया है कि यदि द्रव्य गुण से पृथक होता है तो अनंत द्रव्य घटित होंगे अथवा यदि गुण द्रव्य से पृथक होते हैं तो द्रव्य ही अभाव को हासिल/प्राप्त करते हैं (करेंगे)। चूँकि गुण आश्रयरहित नहीं रहते हैं, अतः पृथक अनन्त गुणों के लिए आश्रयरूप अनन्त द्रव्यों की कल्पना करनी होगी जो अर्थहीन होगी अथवा चूँकि द्रव्य गुणों का समूह होता है, अतः गुण की पृथक कल्पना करने से द्रव्य का ही अभाव हो जायेगा। अतः कहा गया है कि द्रव्य और गुण का संबंध प्रदेश-भेद-रहित है और अपृथक्करणीय है। इस तरह उनके संबंध में अनादि वैधता प्रतिपादित है।

पाँच अस्तिकायिक (बहुप्रदेशी) द्रव्यः

जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश बहुप्रदेशी हैं तथा सत्ता से अपृथक हैं, गुण-पर्याय सहित हैं, परिणमन-लक्षण से युक्त हैं। काल एक प्रदेशी है, इसलिए अस्तिकाय में सम्मिलित नहीं है।

जीवः

जीव चेतन व ज्ञान-दर्शन उपयोगमयी है, प्रभु (अपने उत्थान के लिए स्वयं समर्थ) है, कर्ता, भोक्ता और स्वदेह परिमाणवाला होते हुए भी अमूर्त है और वह कर्मों से संयुक्त है। जो जीव कर्मरूपी मैल से छुटकारा पाया हुआ है वह स्वयं सर्वज्ञ हुआ है, सबको जानने-देखनेवाला होकर आत्मोत्पन्न, अखंडित, अतीन्द्रिय/अमूर्त अनन्त सुख को प्राप्त करता है। इस तरह जीव कर्मों का नाश करके सिद्ध होता है और आचार्य कहते हैं कि यह एक अपूर्व घटना है। चार प्राणों (आयु, बल, इन्द्रिय और श्वासोच्छवास) से जीता हुआ संसारी

(कर्मयुक्त) जीव जब सिद्ध होता है तो कर्म-जनित द्रव्य प्राणों से मुक्त होता है और अपनी स्वाभाविक ज्ञानात्मक चेतना का अनुभव करता है। सिद्ध विच्छिन्न देह वाले होते हैं तथा वे वाणी की पहुँच से बाहर हो जाते हैं।

यहाँ यह जानना चाहिये कि समस्त एकेन्द्रिय जीव कर्मों के सुख-दुखरूप फल का ही अनुभव करते हैं और दो इन्द्रियादि जीव इष्ट-अनिष्ट कार्यों से युक्त होकर कर्मों के सुख-दुखरूप फल का अनुभव करते हैं। कर्मों से पूर्णतया मुक्त जीव ज्ञान का ही अनुभव करते हैं। वे लोक के अग्रभाग में स्थित हो जाते हैं।

जीव कर्त्ता और भोक्ता है। अनादिकालीन कर्म-बंध से उत्पन्न आत्मविस्मरण के कारण जीव/आत्मा राग द्वेषादि अशुद्ध भावों को करता है और कर्म पुद्गल समय आने पर अलग होते हुए सुख-दुख देते हैं और जीव उनको भोगता है। इस प्रकार मोह से आच्छादित जीव/आत्मा कर्त्ता या भोक्ता होता है। आत्मस्मरणमय जीव अपने स्वरूप को ही करता है और उसको ही भोगता है।

पुद्गलः

लोक में पुद्गल परमाणु और स्कन्धरूप में अवस्थित होता है। परमाणुओं के मेल का समूह स्कन्ध है और स्कन्धों का अन्तिम भेद परमाणु है। पुद्गल परमाणु मूर्तिक होता है। इसमें एक वर्ण, एक रस, एक गंध तथा दो स्पर्श होते हैं। वह स्कन्ध अवस्था में रूपान्तरित होने पर शब्द का कारण होता है, स्कन्धों से पृथक होने पर स्वयं शब्दरहित होता है। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि सभी द्रव्य इन्द्रिय, द्रव्य मन, सभी प्रकार के शरीर, द्रव्य कर्म, इन्द्रियों द्वारा भोगे जाने योग्य पदार्थ सब ही पुद्गल हैं। परमाणु नित्य है, विभाजन रहित है, तथा चार धातुओं-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु का कारण है।

धर्म, अधर्म और आकाशास्तिकायः

धर्म द्रव्य गमन क्रिया से युक्त जीव और पुद्गलों के लिए कारण है, किन्तु स्वयं किसी कारण का परिणाम नहीं है। लोक में जैसे मछलियों के लिए जल गमन में उपकारी है, वैसे ही जीव और पुद्गलों के लिए धर्म द्रव्य है। अधर्म द्रव्य ठहरने की क्रिया से युक्त जीव और पुद्गलों के लिए पृथ्वी के समान कारण है। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि जीव और पुद्गल स्वपरिणमन से ही गमन और ठहरना करते हैं। लोक में जो सब द्रव्यों को स्थान देता है वह लोकाकाश है किन्तु लोक से अन्य आकाश अलोकाकाश अन्त-रहित है।

पंचास्तिकाय को अच्छी तरह समझने के लिए गाथा के प्रत्येक शब्द जैसे-संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, कृदन्त आदि के लिए व्याकरणिक विश्लेषण में प्रयुक्त संकेतों का ज्ञान होने से प्रत्येक शब्द का अनुवाद समझा जा सकेगा।

संकेत–सूची

अ – अव्यय (इसका अर्थ = लगाकर लिखा गया है)

अक - अकर्मक क्रिया

अनि - अनियमित

कर्म- कर्मवाच्य

नपुं. - नपुंसकलिंग

पु. - पुल्लिंग

भूकृ - भूतकालिक कृदन्त

व - वर्तमानकाल

वकृ - वर्तमान कृदन्त

वि - विशेषण

विधि - विधि

विधिकृ - विधि कृदन्त

संकृ - संबंधक कृदन्त

सक - सकर्मक क्रिया

सवि - सर्वनाम विशेषण

स्त्री. - स्त्रीलिंग

•()- इस प्रकार के कोष्ठक में मूल शब्द रखा गया है।

•[()+()+().....] इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर + चिह्न शब्दों में संधि का द्योतक है। यहाँ अन्दर के कोष्ठकों में गाथा के शब्द ही रख दिये गये हैं।

•[()-()-().....] इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर '-' चिह्न समास का द्योतक है।

•{[()+()+().....]वि} जहाँ समस्त पद विशेषण का कार्य करता है वहाँ इस प्रकार के कोष्ठक का प्रयोग किया गया है।

•जहाँ कोष्ठक के बाहर केवल संख्या (जैसे 1/1, 2/1 आदि) ही लिखी है वहाँ उस कोष्ठक के अन्दर का शब्द **'संज्ञा'** है।

•जहाँ **कर्मवाच्य, कृदन्त** आदि प्राकृत के नियमानुसार नहीं बने हैं वहाँ कोष्ठक के बाहर **'अनि'** भी लिखा गया है।

क्रिया-रूप निम्नप्रकार लिखा गया है-

1/1 **अक** या **सक** - उत्तम पुरुष/एकवचन
1/2 **अक** या **सक** - उत्तम पुरुष/बहुवचन
2/1 **अक** या **सक** - मध्यम पुरुष/एकवचन
2/2 **अक** या **सक** - मध्यम पुरुष/बहुवचन
3/1 **अक** या **सक** - अन्य पुरुष/एकवचन
3/2 **अक** या **सक** - अन्य पुरुष/बहुवचन

विभक्तियाँ निम्नप्रकार लिखी गई हैं–

1/1 - प्रथमा/एकवचन
1/2 - प्रथमा/बहुवचन
2/1 - द्वितीया/एकवचन
2/2 - द्वितीया/बहुवचन
3/1 - तृतीया/एकवचन
3/2 - तृतीया/बहुवचन
4/1 - चतुर्थी/एकवचन
4/2 - चतुर्थी/बहुवचन
5/1 - पंचमी/एकवचन
5/2 - पंचमी/बहुवचन
6/1 - षष्ठी/एकवचन
6/2 - षष्ठी/बहुवचन
7/1 - सप्तमी/एकवचन
7/2 - सप्तमी/बहुवचन

पंचास्तिकाय

(पंचत्थिकायो)

पंचास्तिकाय

(पंचत्थिकायो)

(खण्ड-1)

द्रव्य-अधिकार

1. इंदसदवंदियाणं तिहुअणहिदमधुरविसदवक्काणं।
अंतातीदगुणाणं णमो जिणाणं जिदभवाणं।।

इंदसदवंदियाणं[1]	[(इंद)-(सद) वि- (वंद) भूकृ 4/2]	सौ इन्द्रों द्वारा वंदित
तिहुअणहिदमधुर- विसदवक्काणं[1]	[(तिहुअण)-(हिद) वि- (मधुर) वि-(विसद) वि- (वक्क) 4/2]	तीन लोक में हितकारी, मधुर और स्पष्ट वचनों को
अंतातीदगुणाणं[1]	[(अंत)+(अतीदगुण)] [(अंत)-(अतीद) वि- (गुण) 4/2]	 अन्त-रहित गुणों को
णमो	अव्यय	नमस्कार
जिणाणं[1]	(जिण) 4/2	जिनेन्द्रों को
जिदभवाणं[1]	[(जिद) भूकृ अनि- (भव) 4/2]	जीत लिया संसार को

अन्वय– इंदसदवंदियाणं जिणाणं तिहुअणहिदमधुरविसदवक्काणं अंतातीदगुणाणं जिदभवाणं णमो।

अर्थ– सौ इन्द्रों द्वारा वंदित जिनेन्द्रों को, तीन लोक में (उनके) हितकारी, मधुर और स्पष्ट वचनों को, (उनके) अन्त-रहित गुणों को (तथा) (जिन्होंने) संसार को जीत लिया (है) (उनको) नमस्कार।

---

1. 'णमो' के योग में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

2. समणमुहुग्गदमट्ठं चदुग्गदिणिवारणं सणिव्वाणं।
एसो पणमिय सिरसा समयमियं सुणह वोच्छामि।।

समणमुहुग्गदमट्ठं	[(समणमुह)+(उग्गदं)+(अट्ठं)]	
	[(समण)-(मुह)-	श्रमण के मुख से
	(उग्गद) 2/1 वि]	निकला हुआ
	अट्ठं (अट्ठ) 2/1	सार तत्त्व
चदुग्गदिणिवारणं	[(चदुग्गदि)-(णिवारण)	चारों गतियों को
	2/1 वि]	हटानेवाला
सणिव्वाणं	(स-णिव्वाण) 2/1 वि	निर्वाण-सहित
एसो	(एत) 1/1 सवि	यह
पणमिय	(पणम) संकृ	प्रणाम करके
सिरसा	(सिरसा) 3/1 अनि	सिर से
समयमियं	[(समयं)+(इयं)]	
	समयं (समय) 2/1	सिद्धान्त को
	इयं (इम) 2/1 सवि	इस
सुणह	(सुण) विधि 2/2 सक	सुनो
वोच्छामि	(वोच्छ) भवि 1/1 सक	कहूँगा

अन्वय– एसो इयं समयं समणमुहुग्गदमट्ठं चदुग्गदिणिवारणं सणिव्वाणं सिरसा पणमिय वोच्छामि सुणह।

अर्थ– यह (मैं) (कुन्दकुन्दाचार्य) इस सिद्धान्त को (जो) श्रमण (महावीर) के मुख से निकला हुआ सार तत्त्व (है), (फलस्वरूप) चारों गतियों को हटानेवाला (है) (तथा) (जो) निर्वाण-सहित (प्रदाता) (है) (उसको) सिर से प्रणाम करके कहूँगा। (तुम सब) सुनो।

3. समवाओ पंचण्हं समओ त्ति जिणुत्तमेहिं पण्णत्तं।
सो चेव हवदि लोओ तत्तो अमिओ अलोओ खं।।

समवाओ	(समवाअ) 1/1	समूह
पंचण्हं	(पंच) 6/2 वि	पाँच का
समओ त्ति	[(समओ)+(इति)]	
	समओ (समअ) 1/1	समय (एक प्रदेशी काल द्रव्य)
	इति (अ) =	शब्दस्वरूपद्योतक
जिणुत्तमेहिं	[(जिण)+(उत्तमेहिं)]	
	[(जिण)-(उत्तम) 3/2 वि]	जिनों में श्रेष्ठ द्वारा
पण्णत्तं	(पण्णत्त) भूकृ 1/1 अनि	कहा गया
सो	(त) 1/1 सवि	वह
चेव	अव्यय	ही
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
लोओ	(लोअ) 1/1	लोक
तत्तो	अव्यय	उसके बाद
अमिओ	(अमिअ) 1/1 वि	परिमाण-रहित
अलोओ	(अलोअ) 1/1	अलोक
खं	(ख) 1/1	आकाश

अन्वय– जिणुत्तमेहिं पण्णत्तं पंचण्हं समवाओ समओ त्ति सो चेव लोओ हवदि तत्तो अमिओ अलोओ खं।

अर्थ– जिनों में श्रेष्ठ (तीर्थंकर) द्वारा (यह) कहा गया (है) (कि) (जो) पाँच (बहुप्रदेशी द्रव्यों) का समूह (और) समय (एक प्रदेशी काल द्रव्य) (है) वह ही लोक होता है। उसके बाद परिमाण-रहित अलोक (नामक) आकाश (होता है)।

नोटः संपादक द्वारा अनूदित
इसका अनुवाद परम्परा से भिन्न किया गया है, विद्वान विचार करें।

4. जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा तहेव आयासं।
अत्थित्तम्हि य णियदा अणण्णमइया अणुमहंता।।

जीवा	(जीव) 1/2	जीव
पुग्गलकाया	[(पुग्गल)-(काय) 1/2]	पुद्गल-समूह
धम्माधम्मा	[(धम्म)+(अधम्मा)]	
	[(धम्म)-(अधम्म) 1/2]	धर्म, अधर्म
तहेव	अव्यय	उसी प्रकार
आयासं	(आयास) 1/1	आकाश
अत्थित्तम्हि	(अत्थित्त) 7/1	अस्तित्व में
य	अव्यय	और
णियदा	(णियद) वि 1/2	ध्रुव
अणण्णमइया	(अणण्णमइय) 1/2 वि	अपृथक/अभिन्न बने हुए
अणुमहंता	[(अणु) अ-(महंत) 1/2 वि]	अत्यधिक बड़े

अन्वय- जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा तहेव आयासं अत्थित्तम्हि अणण्णमइया णियदा य अणुमहंता।

अर्थ- जीव, पुद्गल-समूह, धर्म, अधर्म उसी प्रकार आकाश अस्तित्व (सत्ता) में (हैं) अर्थात् सत् हैं। (वे) (सत्ता से) अपृथक/अभिन्न बने हुए हैं, ध्रुव (हैं) और अत्यधिक बड़े (बहुप्रदेशी) (हैं)।

5. जेसिं अत्थिसहाओ गुणेहि सह पज्जएहि विविहेहि।
ते होंति अत्थिकाया णिप्पण्णं जेहि तइलोक्कं।।

जेसिं	(ज) 6/2 सवि	जिनका
अत्थिसहाओ	[(अत्थि) अ-(सहाअ) 1/1]	अस्तित्व स्वभाव
गुणेहि[1]	(गुण) 3/2	गुणों
सह	अव्यय	सहित
पज्जएहि[1]	(पज्जअ) 3/2	पर्यायों
विविहेहि[1]	(विविह) 3/2 वि	नाना प्रकार के
ते	(त) 1/2 सवि	वे
होंति	(हो) व 3/2 अक	होते हैं
अत्थिकाया	(अत्थिकाय) 1/2	अस्तिकाय
णिप्पण्णं	(णिप्पण्ण) भूक 1/1 अनि	संपन्न
जेहि	(ज) 3/2 सवि	जिनके द्वारा
तइलोक्कं	(तइलोक्क) 1/1	तीन लोक

अन्वय- जेसिं विविहेहि गुणेहि पज्जएहि सह अत्थिसहाओ ते अत्थिकाया होंति जेहि तइलोक्कं णिप्पण्णं।

अर्थ- जिन (बहुप्रदेशी द्रव्यों) का नाना प्रकार के गुणों व पर्यायों-सहित अस्तित्व स्वभाव है, वे अस्तिकाय (बहुप्रदेशी अस्तित्ववाले) होते हैं, जिनके द्वारा तीन लोक संपन्न (है)।

---

1. 'सह' के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

6. ते चेव अत्थिकाया तेक्कालियभावपरिणदा णिच्चा।
गच्छंति दवियभावं परियट्टणलिंगसंजुत्ता।।

ते	(त) 1/2 सवि	वे
चेव	अव्यय	निश्चय ही
अत्थिकाया	(अत्थिकाय) 1/2 वि	अस्तिकाय
तेक्कालियभाव-	[(तेक्कालिय) वि-(भाव)-	तीन काल में उत्पन्न
परिणदा	(परिणद) भूकृ 1/2 अनि]	पर्यायों में परिवर्तित हुए
णिच्चा	(णिच्च) 1/2 वि	शाश्वत
गच्छंति	(गच्छ) व 3/2 सक	प्राप्त करते हैं
दवियभावं	[(दविय)-(भाव) 2/1]	द्रव्य के स्वभाव को
परियट्टणलिंग-	[(परियट्टण)-(लिंग)-	परिणमन लक्षण
संजुत्ता	(संजुत्त) भूकृ 1/2 अनि]	से युक्त

अन्वय- तेक्कालियभावपरिणदा ते अत्थिकाया परियट्टणलिंग-संजुत्ता णिच्चा चेव दवियभावं गच्छंति।

अर्थ- तीन काल में उत्पन्न पर्यायों में परिवर्तित हुए वे अस्तिकाय (बहु प्रदेशी अस्तित्ववाले पदार्थ) परिणमन लक्षण (चिह्न) से युक्त (हैं) (और) शाश्वत (हैं)। (इसलिए) निश्चय ही द्रव्य के स्वभाव को प्राप्त करते हैं।

---

1. संपादक द्वारा अनूदित

7. **अण्णोण्णं पविसंता देंता ओगासमण्णमण्णस्स।**
मेलंता वि य णिच्चं सगं सभावं ण विजहंति।।

अण्णोण्णं[1]	(अण्णोण्ण) 2/1→7/1 वि	परस्पर/एक दूसरे में
पविसंता[1]	(पविस) वकृ 1/2	प्रवेश करते हुए
देंता	(दे) वकृ 1/2	देते हुए
ओगासमण्ण-	[(ओगासं)+(अण्णमण्णस्स)]	
मण्णस्स	ओगासं (ओगास) 2/1	स्थान
	अण्णमण्णस्स(अण्णमण्ण)4/1 वि	एक दूसरे के लिए
मेलंता* (मिलन्ता)	(मिल) वकृ 1/2	मिलते हुए
वि	अव्यय	भी
य	अव्यय	और
णिच्चं	अव्यय	सदैव
सगं	(सग) 2/1 वि	अपने
सभावं	(सभाव) 2/1	स्वभाव को
ण	अव्यय	नहीं
विजहंति	(विजह) व 3/2 सक	छोड़ते हैं

अन्वय- अण्णोण्णं पविसंता अण्णमण्णस्स ओगासं देंता य णिच्चं मेलंता वि सगं सभावं ण विजहंति।

अर्थ- (द्रव्य) परस्पर/एक दूसरे में प्रवेश करते हुए, एक दूसरे के लिए स्थान देते हुए और सदैव मिलते हुए भी (वे) अपने स्वभाव को नहीं छोड़ते हैं।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137) या गत्यार्थक क्रिया के योग में द्वितीया भी होती है।

* यहाँ पाठ मिलन्ता होना चाहिए।

8. सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया।
भंगुप्पादधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवदि एक्का।।

सत्ता	(सत्ता) 1/1	सत्ता
सव्वपयत्था	(सव्वपयत्थ) 2/2→7/2	सब पदार्थों में
सविस्सरूवा	(सविस्सरूव) 2/2→7/2	नाना स्वरूपों में विद्यमान
अणंतपज्जाया	[(अणंत)-(पज्जाय) 2/2→7/2]	अनन्त पर्यायों में
भंगुप्पादधुवत्ता	[(भंग)-(उप्पाद)-(धुवत्ता) 2/2→7/2]	उत्पत्ति, व्यय और ध्रौव्यताओं में
सप्पडिवक्खा	(सप्पडिवक्खा) 1/1 वि	प्रतिपक्ष-सहित
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होती है
एक्का	(एक्का) 1/1 वि	सामान्य

अन्वय- एक्का सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया भंगुप्पादधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवदि।

अर्थ- सामान्य सत्ता सब पदार्थों में (स्थित है), (उनके) नाना स्वरूपों में विद्यमान (है), (उनकी) अनन्त पर्यायों में (है) (उन पर्यायों) की उत्पत्ति, और व्यय में तथा (उन) ध्रौव्यताओं (ध्रुव पदार्थों) में (है)। (वह) सत्ता प्रतिपक्ष-सहित होती है। अर्थात् विशेष सत्ता विशिष्ट पदार्थों में स्थित है, (उसके) नाना स्वरूपों में विद्यमान (है), (उसकी) पर्यायों में (है), उस एक पर्याय की उत्पत्ति उसके व्यय में तथा (उस) ध्रुव पदार्थ में हैं।

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

9. दवियदि गच्छदि ताइं ताइं सब्भाव-पज्जयाइं जं।
दवियं तं भण्णंते अणण्णभूदं तु सत्तादो।।

दवियदि[1]	(दविय) व 3/1 सक	गति करता है
गच्छदि	(गच्छ) व 3/1 सक	प्राप्त करता है
ताइं	(त) 2/2 सवि	उन
ताइं	(त) 2/2 सवि	उन
सब्भाव-पज्जयाइं[2]	[(सब्भाव)-(पज्जय) 2/2]	स्वभाव पर्यायों को
जं	अव्यय	जो
दवियं	(दविय) 1/1	द्रव्य
तं	(त) 1/1 सवि	वह
भण्णंते	(भण्ण) व कर्म 3/2 अनि	कहा जाता है
अणण्णभूदं	(अणण्णभूद) भूकृ 1/1 अनि	अपृथक बना हुआ
तु	अव्यय	और
सत्तादो	(सत्ता) 5/1	सत्ता से

अन्वय- जं ताइं ताइं सब्भावपज्जयाइं गच्छदि दवियदि तं दवियं तु सत्तादो अणण्णभूदं भण्णंते।

अर्थ- जो (पदार्थ) उन-उन (अपने) स्वभाव पर्यायों को प्राप्त करता है (उनमें) गति करता है, वह द्रव्य कहा जाता है। और (वह) (द्रव्य) सत्ता से अपृथक बना हुआ (होता है)।

---

1. नाम क्रिया (संज्ञात्मक क्रिया)
   अभिनव प्राकृत व्याकरणः पृष्ठ 313
2. यहाँ 'पज्जय' शब्द नपुंसकलिंग की तरह प्रयुक्त हुआ है।

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

10. दव्वं सल्लक्खणयं उप्पादव्वयधुवत्तसंजुत्तं।
गुणपज्जयासयं वा जं तं भण्णंति सव्वण्हू।।

दव्वं	(दव्व) 2/1	द्रव्य
सल्लक्खणयं	(सल्लक्खण) 2/1 वि	सत् लक्षणवाला
	'य' स्वार्थिक	
उप्पादव्वयधुवत्त-	[(उप्पाद)-(व्वय)-(धुवत्त)-	उत्पाद, व्यय और
संजुत्तं	(संजुत्त) भूकृ 2/1 अनि]	ध्रौव्यता से युक्त
गुणपज्जयासयं	[(गुण)-(पज्जय)-	गुण-पर्याय का
	(आसय) 2/1 वि]	आधार
वा	अव्यय	तथा
जं	(ज) 2/1 सवि	जो
तं	(त) 2/1 सवि	उस (पदार्थ) को
भण्णंति	(भण्ण) व 3/2 सक	कहते हैं
सव्वण्हू	(सव्वण्हु) 1/2 वि	सर्वज्ञ देव

अन्वय- सव्वण्हू तं दव्वं भण्णंति जं सल्लक्खणयं उप्पादव्वय-धुवत्तसंजुत्तं वा गुणपज्जयासयं।

अर्थ- सर्वज्ञ देव उस (पदार्थ) को द्रव्य कहते हैं- जो सत् लक्षणवाला (है), (जो) उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यता से युक्त (है) तथा (जो) गुण-पर्याय का आधार (है)।

11. उप्पत्तीव विणासो दव्वस्स य णत्थि अत्थि सब्भावो।
विगमुप्पाद-धुवत्तं करेंति तस्सेव पज्जाया।।

उप्पत्तीव	(उप्पत्ति) 1/1	उत्पत्ति
	व (अ) = अथवा	अथवा
विणासो	(विणास) 1/1	विनाश
दव्वस्स	(दव्व) 6/1	द्रव्य की
य	अव्यय	किन्तु
णत्थि	अव्यय	नहीं है
अत्थि	अव्यय	है
सब्भावो	(सब्भाव) 1/1	अस्तित्व
विगमुप्पाद-धुवत्तं	[(विगम)-(उप्पाद)-	उत्पाद, विनाश,
	(धुवत्त) 2/1]	और ध्रौव्यता को
करेंति	(कर) व 3/2 सक	करती हैं
तस्सेव	[(तस्स)+(एव)]	
	तस्स[1] (त) 6/1→7/1 सवि	उसके/उसमें
	एव (अ) = ही	ही
पज्जाया	(पज्जाय) 1/2	पर्यायें (परिणमन)

अन्वय- दव्वस्स उप्पत्ती व विणासो णत्थि य सब्भावो अत्थि पज्जाया तस्सेव विगमुप्पाद-धुवत्तं करेंति।

अर्थ- द्रव्य की उत्पत्ति अथवा विनाश नहीं है किन्तु(द्रव्य का) अस्तित्व है। पर्यायें (परिणमन) उसके/उसमें ही उत्पाद, विनाश और ध्रौव्यता को करती हैं।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)

12. पज्जयविजुदं दव्वं दव्वविजुत्ता य पज्जया णत्थि।
दोण्हं अणण्णभूदं भावं समणा परूवेंति।।

पज्जयविजुदं	[(पज्जय)-(विजुद) भूकृ 1/1 अनि]	पर्याय-रहित
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
दव्वविजुत्ता	[(दव्व)-(विजुत्त) भूकृ 1/2 अनि]	द्रव्य-रहित
य	अव्यय	और
पज्जया	(पज्जय) 1/2	पर्यायें
णत्थि	अव्यय	नहीं है
दोण्हं	(दो) 6/2 वि	दोनों के
अणण्णभूदं	(अणण्णभूद) भूकृ 2/1 अनि	अपृथक बने हुए
भावं	(भाव) 2/1	भाव को
समणा	(समण) 1/2	श्रमण
परूवेंति	(परूव) व 3/2 सक	प्रतिपादित करते हैं

अन्वय- पज्जयविजुदं दव्वं य दव्वविजुत्ता पज्जया णत्थि समणा दोण्हं अणण्णभूदं भावं परूवेंति।

अर्थ- पर्याय-रहित द्रव्य (नहीं है) और द्रव्य-रहित पर्यायें नहीं है। श्रमण दोनों (द्रव्य और पर्याय) के अपृथक बने हुए भाव को प्रतिपादित करते हैं।

13. दव्वेण विणा ण गुणा गुणेहिं दव्वं विणा ण संभवदि।
अव्वदिरित्तो भावो दव्वगुणाणं हवदि तम्हा।।

दव्वेण[1]	(दव्व) 3/1	द्रव्य के
विणा	अव्यय	बिना
ण	अव्यय	नहीं
गुणा	(गुण) 1/2	गुण
गुणेहिं[1]	(गुण) 3/2	गुणों के
दव्वं	(दव्व) 1/1	द्रव्य
विणा	अव्यय	बिना
ण	अव्यय	नहीं
संभवदि	(संभव) व 3/1 अक	संभव होता है
अव्वदिरित्तो	(अव्वदिरित्त) 1/1 वि	अपृथक
भावो	(भाव) 1/1	भाव
दव्वगुणाणं	[(दव्व)-(गुण) 6/2]	द्रव्य और गुणों का
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
तम्हा	अव्यय	इसलिए

अन्वय- दव्वेण विणा गुणा ण गुणेहिं विणा दव्वं ण संभवदि तम्हा दव्वगुणाणं अव्वदिरित्तो भावो हवदि।

अर्थ- द्रव्य के बिना गुण नहीं (होते हैं) और गुणों के बिना द्रव्य संभव नहीं होता है। इसलिए द्रव्य और गुणों का अपृथक भाव होता है।

---

1. 'बिना' के योग में द्वितीया, तृतीया तथा पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

14. सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणो य तत्तिदयं।
दव्वं खु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि।।

सिय	अव्यय	किसी प्रकार से
अत्थि	अव्यय	अस्ति
णत्थि	अव्यय	नास्ति
उहयं	(उहय) 1/1 वि	दोनों
अव्वत्तव्वं	(अव्वत्तव्व) 1/1 वि	अवक्तव्य
पुणो	अव्यय	इसके अनन्तर
य	अव्यय	और
तत्तिदयं	(तत्तिदयं) 1/1 वि अनि	वह तीन का समूह
दव्वं	(दव्व) 1/1	वस्तु
खु	अव्यय	ही
सत्तभंगं[1]	(सत्तभंग) 2/1→7/1	सात वाक्यों में
आदेसवसेण	[(आदेस)-(वस) 3/1 वि]	प्रयोजनों/प्रश्न-उत्तर के कारण/अधीन
संभवदि	(संभव) व 3/1 अक	प्रकट होती है

अन्वय- दव्वं आदेसवसेण सत्तभंगं खु संभवदि सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं य पुणो तत्तिदयं।

अर्थ-वस्तु प्रयोजनों/प्रश्न-उत्तर के कारण/अधीन सात वाक्यों में ही प्रकट होती है। किसी प्रकार से अस्ति,(किसी प्रकार से) नास्ति,(किसी प्रकार से) दोनों (अस्तिनास्ति), (किसी प्रकार से) अवक्तव्य और इसके अनन्तर वह तीन का समूह (अस्ति अवक्तव्य,नास्ति अवक्तव्य,अस्तिनास्ति अवक्तव्य)(होती है)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

15. भावस्स णत्थि णासो णत्थि अभावस्स चेव उप्पादो।
गुणपज्जयेसु भावा उप्पादवए पकुव्वंति।।

भावस्स	(भाव) 6/1	सत् पदार्थ का
णत्थि	अव्यय	नहीं है
णासो	(णास) 1/1	नाश
णत्थि	अव्यय	नहीं है
अभावस्स	(अभाव) 6/1	असत् पदार्थ का
चेव	अव्यय	ही
उप्पादो	(उप्पाद) 1/1	उत्पाद
गुणपज्जयेसु	[(गुण)-(पज्जय) 7/2]	गुण-पर्यायों में
भावा	(भाव) 1/2	पदार्थ
उप्पादवए	[(उप्पाद)-(वअ) 2/2]	उत्पाद-व्यय
पकुव्वंति	(पकुव्व) व 3/2 सक	करते हैं

अन्वय– भावस्स णासो णत्थि च अभावस्स उप्पादो णत्थि भावा गुणपज्जयेसु एव उप्पादवए पकुव्वंति।

अर्थ– सत् पदार्थ का नाश नहीं है और असत् पदार्थ का उत्पाद नहीं है। पदार्थ गुण-पर्यायों में ही उत्पाद-व्यय करते हैं।

16. भावा जीवादीया जीवगुणा चेदणा य उवओगो।
सुरणरणारयतिरिया जीवस्स य पज्जया बहुगा।।

भावा[1]	(भाव) 2/2→7/2	पदार्थों में
जीवादीया	[(जीव)+(आदी)+(इया)]	
	*जीव (जीव) 1/1 (मूलशब्द)	जीव
	आदी (आदि) 1/1 वि	प्रथम/प्रमुख
	इया (इ) 2/2→7/2 भूकृ	ज्ञात
जीवगुणा	[(जीव)-(गुण) 1/2]	जीव के गुण
चेदणा	(चेदणा) 1/1	चेतना
य	अव्यय	और
उवओगो	(उवओग) 1/1	उपयोग
सुरणरणारयतिरिया	[(सुर)-(णर)-(णारय)-(तिरिय) 1/2]	देव, मनुष्य, नारकी और तिर्यंच
जीवस्स	(जीव) 6/1	जीव की
य	अव्यय	और
पज्जया	(पज्जय) 1/2	पर्यायें
बहुगा	(बहुग) 1/2 वि	अनेक

अन्वय- इया भावा जीव आदी जीवगुणा चेदणा य उवओगो य जीवस्स सुरणरणारयतिरिया बहुगा पज्जया।

अर्थ- ज्ञात पदार्थों में जीव प्रथम/प्रमुख (है)। (उस) जीव के गुण चेतना और उपयोग (हैं) और जीव की देव, मनुष्य, नारकी और तिर्यंच अनेक पर्यायें (हैं)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

* प्राकृत में किसी भी कारक के लिए मूल संज्ञा शब्द काम में लाया जा सकता है। (पिशलः प्राकृत भाषाओंका व्याकरण, पृष्ठ 517)

17. मणुसत्तणेण णट्ठो देही देवो हवेदि इदरो वा।
उभयत्थ जीवभावो ण णस्सदि ण जायदे अण्णो।।

मणुसत्तणेण	(मणुसत्तण) 3/1	मनुष्यता से
णट्ठो	(णट्ठ) भूकृ 1/1 अनि	नष्ट हुआ
देही	(देहि) 1/1	जीव
देवो	(देव) 1/1	देव
हवेदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
इदरो	(इदर) 1/1 वि	अन्य
वा	अव्यय	अथवा
उभयत्थ	अव्यय	दोनों अवस्थाओं में
जीवभावो	[(जीव)-(भाव) 1/1]	जीवपदार्थ
ण	अव्यय	न
णस्सदि	(णस्स) व 3/1 अक	नष्ट होता है
ण	अव्यय	न
जायदे	(जाय) व 3/1 अक	उत्पन्न होता है
अण्णो	(अण्ण) 1/1 वि	अन्य/नया

अन्वय– मणुसत्तणेण णट्ठो देही देवो हवेदि वा इदरो जीवभावो उभयत्थ अण्णो ण जायदे ण णस्सदि।

अर्थ– मनुष्यता से नष्ट हुआ जीव देव होता है अथवा अन्य (मनुष्य, नारकी तथा तिर्यंच होता है)। जीवपदार्थ दोनों अवस्थाओं में (रहता है)। अन्य/नया (जीव के अलावा) न उत्पन्न होता है न नष्ट होता है।

18. सो चेव जादि मरणं जादि ण णट्ठो ण चेव उप्पण्णो।
उप्पण्णो य विणट्ठो देवो मणुसो त्ति पज्जाओ।।

सो	(त) 1/1 सवि	वह
चेव	अव्यय	ही
जादि	(जा) व 3/1 अक	उत्पन्न होता है
मरणं	(मरण) 2/1	मरण को
जादि	(जा) व 3/1 सक	प्राप्त करता है
ण	अव्यय	न
णट्ठो	(णट्ठ) भूक 1/1 अनि	नष्ट हुआ
ण	अव्यय	न
चेव	अव्यय	ही
उप्पण्णो	(उप्पण्ण) भूक 1/1 अनि	उत्पन्न हुआ
उप्पण्णो	(उप्पण्ण) भूक 1/1 अनि	उत्पन्न हुआ
य	अव्यय	और
विणट्ठो	(विणट्ठ) भूक 1/1 अनि	नष्ट हुई
देवो	(देव) 1/1	देव
मणुसो त्ति	[(मणुसो)+(इति)]	
	मणुसो (मणुस) 1/1	मनुष्य
	इति (अ) = अतः	अतः
पज्जाओ	(पज्जाअ) 1/1	पर्याय

अन्वय– सो चेव जादि मरणं जादि ण उप्पण्णो य ण चेव णट्ठो देवो पज्जाओ उप्पण्णो च मणुसो त्ति विणट्ठो।

अर्थ– वह ही (जीव) उत्पन्न होता है (जो) मरण को प्राप्त करता है। (किन्तु) (वह जीव) न उत्पन्न हुआ (है) और न ही नष्ट हुआ (है)। अतः देव पर्याय ही उत्पन्न हुई (है) और मनुष्य (पर्याय) नष्ट हुई (है)।

19. एवं सदो विणासो असदो जीवस्स णत्थि उप्पादो।
तावदिओ जीवाणं देवो मणुसो त्ति गदिणामो।।

एवं	अव्यय	पूर्वोक्त रीति से
सदो	(सदो) 6/1 वि अनि	सत् का
विणासो	(विणास) 1/1	विनाश
असदो	(असदो) 6/1 वि अनि	असत् का
जीवस्स	(जीव) 6/1	जीव का
णत्थि	अव्यय	नहीं है
उप्पादो	(उप्पाद) 1/1	उत्पाद
तावदिओ	(तावदिओ) 1/1 सवि अनि	वास्तव में यह
जीवाणं[1]	(जीव) 6/2→7/2	जीवों में
देवो	(देव) 1/1	देव
मणुसो त्ति	[(मणुसो)+(इति)]	
	मणुसो (मणुस) 1/1	मनुष्य
	इति (अ) = क्योंकि	क्योंकि
गदिणामो	(गदिणाम) 1/1	गतिनाम

अन्वय– एवं जीवस्स सदो विणासो णत्थि असदो उप्पादो जीवाणं देवो मणुसो त्ति तावदिओ गदिणामो।

अर्थ– पूर्वोक्त रीति से जीव के सत् (स्वभाव) का विनाश नहीं है (और) (जीव के) असत् (स्वभाव) का उत्पाद (नहीं है) क्योंकि जीवों में यह देव (और) मनुष्य वास्तव में गतिनाम (कर्म) (है)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)

20. णाणावरणादीया भावा जीवेण सुट्ठु अणुबद्धा।
तेसिमभावं किच्चा अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो।।

णाणावरणादीया[1]	[(णाणावरण)+(आदीया)]	
	[(णाणावरण)-(आदिय) 1/2] ज्ञानावरण वगैरह	
	'य' स्वार्थिक	
भावा	(भाव) 1/2	द्रव्यकर्म
जीवेण	(जीव) 3/1	जीव के द्वारा
सुट्ठु	अव्यय	भली-भाँति
अणुबद्धा	(अणुबद्ध) भूकृ 1/2 अनि	बाँधे हुए
तेसिमभावं	[(तेसिं)+(अभावं)]	
	तेसिं (त) 6/2 सवि	उनका
	अभावं (अभाव) 2/1	नाश
किच्चा	(किच्चा) संकृ अनि	करके
अभूदपुव्वो	(अभूदपुव्व) 1/1 वि	अपूर्व
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
सिद्धो	(सिद्ध) 1/1	सिद्ध

अन्वय– जीवेण णाणावरणादीया भावा सुट्ठु अणुबद्धा तेसिमभावं किच्चा सिद्धो हवदि अभूदपुव्वो।

अर्थ– जीव के द्वारा ज्ञानावरण वगैरह द्रव्यकर्म भली-भाँति बाँधे हुए (हैं) उनका नाश करके (जीव) सिद्ध होता है (जो) अपूर्व (घटना है)।

---

1. यहाँ छन्द की पूर्ति हेतु 'आदि' का 'आदी' हुआ है।

21. **एवं भावमभावं भावाभावं अभावभावं च।**
गुणपज्जयेहिं सहिदो संसरमाणो कुणदि जीवो।।

एवं	अव्यय	इस प्रकार
भावमभावं	[(भावं)+(अभावं)]	
	भावं (भाव) 2/1	विद्यमान को
	अभावं (अभाव) 2/1	अविद्यमान को
भावाभावं	[(भाव)-(अभाव) 2/1]	विद्यमान का नाश
अभावभावं	[(अभाव)-(भाव) 2/1]	अविद्यमान की उत्पत्ति
च	अव्यय	और
गुणपज्जयेहिं	[(गुण)-(पज्जय) 3/2]	गुणपर्यायों से
सहिदो	(सहिद) 1/1 वि	युक्त
संसरमाणो	(संसर) वकृ 1/1	परिभ्रमण करता हुआ
कुणदि	(कुण) व 3/1 सक	करता है
जीवो	(जीव) 1/1	जीव

अन्वय– गुणपज्जयेहिं सहिदो जीवो संसरमाणो अभावभावं च भावाभावं कुणदि एवं भावमभावं।

अर्थ– गुणपर्यायों से युक्त जीव परिभ्रमण करता हुआ अविद्यमान (पर्याय) की उत्पत्ति और विद्यमान (पर्याय) का नाश करता है। इसप्रकार विद्यमान (पर्याय) का (नाश करता है) (और) अविद्यमान (पर्याय) को (उत्पन्न करता है)।

22. जीवा पुग्गलकाया आयासं अत्थिकाइया सेसा।
अमया अत्थित्तमया कारणभूदा हि लोगस्स।।

जीवा	(जीव) 1/2	जीव
पुग्गलकाया	(पुग्गलकाय) 1/2	पुद्गलकाय
आयासं	(आयास) 1/1	आकाश
अत्थिकाइया	(अत्थिकाइय) 1/2 वि	अस्तिकायिक
सेसा	(सेस) 1/2	शेष
अमया	(अ-मय) 1/2 वि	(किसी से) संरचित नहीं
अत्थित्तमया	(अत्थित्तमय) 1/2 वि	अस्तित्व से युक्त
कारणभूदा	[(कारण)-(भूद) भूकृ 1/2 अनि]	आधार बने हुए
हि	अव्यय	निश्चय ही
लोगस्स	(लोग) 6/1	लोक के

अन्वय- जीवा पुग्गलकाया आयासं सेसा अत्थिकाइया अमया अत्थित्तमया हि लोगस्स कारणभूदा।

अर्थ- जीव (द्रव्य), पुद्गलकाय (द्रव्य), आकाश (द्रव्य) (और) शेष (धर्म द्रव्य और अधर्म द्रव्य) अस्तिकायिक (बहुप्रदेश-सहित) (हैं) (ये) (किसी से) संरचित नहीं (है), अस्तित्व से युक्त (हैं) निश्चय ही लोक के आधार बने हुए (हैं)।

23. **सब्भावसभावाणं जीवाणं तह य पोग्गलाणं च।**
परियट्टणसंभूदो कालो णियमेण पण्णत्तो।।

सब्भावसभावाणं	[(सब्भाव)-(सभाव) 6/2 वि]	अस्तित्व स्वभाववाले
जीवाणं	(जीव) 6/2	जीवों के
तह	अव्यय	उसी प्रकार
य	अव्यय	और
पोग्गलाणं	(पोग्गल) 6/2	पुद्गलों के
च	अव्यय	पादपूरक
परियट्टणसंभूदो	[(परियट्टण)-(संभूद) भूकृ 1/1 अनि]	परिणमन में उपस्थित रहा
कालो	(काल) 1/1	काल
णियमेण	(णियम) तृतीयार्थक अव्यय	नियमपूर्वक/ आवश्यकरूप से
पण्णत्तो	(पण्णत्त) भूकृ 1/1 अनि	कहा गया

अन्वय– सब्भावसभावाणं जीवाणं य तह पोग्गलाणं च परियट्टणसंभूदो णियमेण कालो पण्णत्तो।

अर्थ– अस्तित्व स्वभाववाले जीवों के और उसी प्रकार पुद्गलों के परिणमन में (जो) उपस्थित रहा (है) (वह) नियमपूर्वक/आवश्यकरूप से काल कहा गया (है)।

24. ववगदपणवण्णरसो ववगददोगंधअट्ठफासो य।
अगुरुलहुगो अमुत्तो वट्टणलक्खो य कालो त्ति।।

ववगदपणवण्णरसो	[(ववगद)भूकृ अनि-(पण)वि-(वण्ण)-(रस) 1/1]	पाँच वर्ण और पाँच रस रहित
ववगददोगंध-अट्ठफासो	[(ववगद) भूकृ अनि-(दो) वि-(गंध)-(अट्ठ) वि-(फास) 1/1]	दो गंध और आठ स्पर्श रहित
य	अव्यय	और
अगुरुलहुगो	(अगुरुलहुग) 1/1 वि	अगुरुलघुगुण संयुक्त
अमुत्तो	(अमुत्त) 1/1 वि	अमूर्त
वट्टणलक्खो	[(वट्टणा[1]→वट्टण)-(लक्ख) 1/1 वि]	वर्तना लक्षणवाला
य	अव्यय	पादपूरक
कालो त्ति	[(कालो)+(इति)]	
	कालो (काल) 1/1	काल
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार

अन्वय- ववगदपणवण्णरसो ववगददोगंधअट्ठफासो अगुरुलहुगो अमुत्तो य वट्टणलक्खो य कालो त्ति।

अर्थ- (जो) पाँच वर्ण और पाँच रस रहित, दो गंध और आठ स्पर्श रहित, अगुरुलघुगुण संयुक्त, अमूर्त और वर्तना लक्षणवाला (है) (वह) (स्वाधीन) काल (है)। इस प्रकार (जानो)।

---

1. प्राकृत व्याकरण, पृष्ठ-21

25. समओ णिमिसो कट्ठा कला य णाली तदो दिवारत्ती।
मासोदुअयणसंवच्छरो त्ति कालो परायत्तो।।

समओ	(समअ) 1/1	समय
णिमिसो	(णिमिस) 1/1	निमिष
कट्ठा	(कट्ठा) 1/1	काष्ठा
कला	(कला) 1/1	कला
य	अव्यय	और
णाली	(णाली) 1/1	नाली
तदो	अव्यय	उससे
दिवारत्ती	[(दिवा) अ-(रत्ति)1/1]	दिनरात्रि
मासोदुअयण-	[(मास)+(उदुअयण)-	
संवच्छरो त्ति	(संवच्छरो)+(इति)]	
	[(मास)-(उदु)-(अयण)-	मास, ऋतु, अयन,
	(संवच्छर) 1/1]	वर्ष
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
कालो	(काल) 1/1	काल
परायत्तो	(परायत्त) 1/1 वि	पराधीन

अन्वय- समओ णिमिसो कट्ठा कला य णाली तदो दिवारत्ती मासोदुअयणसंवच्छरो त्ति परायत्तो कालो।

अर्थ- समय, निमिष, काष्ठा, कला और नाली उससे दिनरात्रि, मास, ऋतु, अयन, वर्ष (होते हैं)। इस प्रकार पराधीन काल (वर्णित) है।

नोटः टीका से व्याख्या देखें।

26. णत्थि चिरं वा खिप्पं मत्तारहिदं तु सा वि खलु मत्ता।
पोग्गलदव्वेण विणा तम्हा कालो पडुच्चभवो।।

णत्थि	अव्यय	नहीं है
चिरं	(चिर) 1/1	दीर्घकाल
वा	अव्यय	अथवा
खिप्पं	(खिप्प) 1/1 वि	शीघ्र
मत्तारहिदं[1]	[(मत्ता)-(रहिद) भूकृ 1/1 अनि]	परिमाण के बिना
तु	अव्यय	और
सा	(ता) 1/1 सवि	वह
वि	अव्यय	भी
खलु	अव्यय	निश्चय ही
मत्ता	(मत्ता) 1/1	परिमाण
पोग्गलदव्वेण[2]	[(पोग्गल)-(दव्व) 3/1]	पुद्गल द्रव्य के
विणा	अव्यय	बिना
तम्हा	अव्यय	इस कारणसे
कालो	(काल) 1/1	काल
पडुच्चभवो	[(पडुच्च) अ-(भव) 1/1 वि]	आश्रय करके उत्पन्न

अन्वय– मत्तारहिदं चिरं वा खिप्पं णत्थि तु सा मत्ता वि खलु पोग्गलदव्वेण विणा तम्हा कालो पडुच्चभवो।

अर्थ– परिमाण के बिना दीर्घकाल अथवा शीघ्र नहीं (कहा जा सकता) है और वह परिमाण भी निश्चय ही पुद्गल द्रव्य के बिना (संभव) (नहीं है)। इस कारणसे (जाना गया) काल (पुद्गल द्रव्य का) आश्रय करके उत्पन्न (है)।

---

1. प्रायः समास के अन्त में 'के बिना' अर्थ को प्रकट करता है।

2. 'बिना' के योग में द्वितीया, तृतीया तथा पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

27. **जीवो त्ति हवदि चेदा उवओगविसेसिदो पहू कत्ता।**
भोत्ता य देहमत्तो ण हि मुत्तो कम्मसंजुत्तो।।

जीवो त्ति	[(जीवो)+(इति)]	
	जीवो (जीव) 1/1	जीव
	इति (अ) =	शब्दस्वरूपद्योतक
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
चेदा	(चेद) 1/1 वि	चेतना गुणवाला
उवओगविसेसिदो	[(उवओग)-(विसेसिद) भूकृ 1/1 अनि]	उपयोग से परिभाषित
पहू	(पहु) 1/1 वि	प्रभु (समर्थ)
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	कर्ता
भोत्ता	(भोत्तु) 1/1 वि	भोक्ता
य	अव्यय	और
देहमत्तो	(देहमत्त) 1/1 वि	देह परिमाणवाला
ण	अव्यय	नहीं
हि	अव्यय	भी
मुत्तो	(मुत्त) 1/1 वि	मूर्त
कम्मसंजुत्तो	[(कम्म)-(संजुत्त) भूकृ 1/1 अनि]	कर्मों से युक्त

अन्वय- जीवो त्ति चेदा उवओगविसेसिदो पहू कत्ता भोत्ता देहमत्तो हि मुत्तो ण य कम्मसंजुत्तो हवदि।

अर्थ- जीवः चेतना गुणवाला, उपयोग से परिभाषित, (अपने उत्थान के लिए) प्रभु (समर्थ), कर्ता, भोक्ता (और) देह परिमाणवाला (होते हुए) भी मूर्त नहीं (है) अर्थात् अमूर्त (है) और कर्मों से युक्त होता है।

28. कम्ममलविप्पमुक्को उड्ढं लोगस्स अंतमधिगंता।
सो सव्वणाणदरसी लहदि सुहमणिंदियमणंतं।।

कम्ममलविप्पमुक्को	[(कम्म)-(मल)-(विप्पमुक्को) भूकृ 1/1 अनि]	कर्मरूपी मैल से छुटकारा पाया हुआ
उड्ढं	अव्यय	ऊपर की ओर
लोगस्स	(लोग) 6/1	लोक के
अंतमधिगंता	[(अंतं)+(अधिगंता)]	
	अंतं[1] (अंत) 2/1→7/1	अंत में
	अधिगंता (संकृ अनि)	पहुँचकर
सो	(त) 1/1 सवि	वह
सव्वणाणदरसी	(सव्वणाणदरसी) 1/1 वि अनि	सबको जानने-देखनेवाला
लहदि[2]	(लह) व 3/1 सक	रखता है
सुहमणिंदियमणंतं	[(सुहं)+(अणिंदियं)+(अणंतं)]	
	सुहं (सुह) 2/1	सुख को
	अणिंदियं (अणिंदिय) 2/1 वि	अतीन्द्रिय
	अणंतं (अणंत) 2/1 वि	अनन्त

अन्वय– कम्ममलविप्पमुक्को सो सव्वणाणदरसी उड्ढं लोगस्स अंतमधिगंता अणिंदियं अणंत सुहं लहदि।

अर्थ– (जो) (जीव) कर्मरूपी मैल से छुटकारा पाया हुआ (है) वह सबको जानने-देखनेवाला (हो जाता है)। (और) ऊपर की ओर लोक के अंत में पहुँचकर (भी) अतीन्द्रिय (और) अनन्त सुख को (बनाये) रखता है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)
2. 'लहदि' पाठ विचारणीय है।

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

29. जादो सयं स चेदा सव्वण्हू सव्वलोगदरसी य।
पप्पोदि सुहमणंतं अव्वाबाधं सगममुत्तं।।

जादो	(जा) भूक 1/1	हुआ
सयं	अव्यय	स्वयं
स	(त) 1/1 सवि	वह
चेदा	(चेद) 1/1	आत्मा
सव्वण्हू	(सव्वण्हु) 1/1 वि	सर्वज्ञ
सव्वलोगदरसी	[(सव्व) सवि-(लोग)-	समस्त लोक को
	(दरसी) 1/1 वि अनि]	देखनेवाला
य	अव्यय	और
पप्पोदि	(पप्पोदि) व 3/1 सक अनि	प्राप्त करता है
सुहमणंतं	[(सुहं)+(अणंतं)]	
	सुहं (सुह) 2/1	सुख को
	अणंतं (अणंत) 2/1 वि	अनन्त
अव्वाबाधं	(अव्वाबाध) 2/1 वि	अखंडित
सगममुत्तं	[(सगं)+(अमुत्तं)]	
	सगं (सग) 2/1 वि	आत्मीय (आत्मोत्पन्न)
	अमुत्तं (अमुत्त) 2/1 वि	अमूर्त

अन्वय– स चेदा सयं सव्वण्हू सव्वलोगदरसी जादो य सगं अव्वाबाधं अमुत्तं अणंत सुहं पप्पोदि।

अर्थ– वह आत्मा स्वयं सर्वज्ञ (और) समस्त लोक को देखनेवाला (है) और (वह) आत्मीय (आत्मोत्पन्न), अखंडित (और) अमूर्त (इन्द्रिय रहित) अनन्त सुख को प्राप्त करता है।

30. पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीविस्सदि जो हु जीविदो पुव्वं।
सो जीवो पाणा पुण बलमिंदियमाउ उस्सासो।।

पाणेहिं	(पाण) 3/2	प्राणों से
चदुहिं	(चदु) 3/2 वि	चार
जीवदि	(जीव) व 3/1 अक	जीता है
जीविस्सदि	(जीव) भवि 3/1 अक	जीवेगा
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
हु	अव्यय	निश्चय ही
जीविदो	(जीव) भूक 1/1	जीया
पुव्वं	अव्यय	विगत काल में
सो	(त) 1/1 सवि	वह
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
पाणा	(पाण) 1/2	प्राण
पुण	अव्यय	और
बलमिंदियमाउ	[(बलं)+(इंदियं)+(आउ)]	
	बलं (बल) 1/1	बल
	इंदियं (इंदिय) 1/1	इन्द्रिय
	*आउ (आउ) 1/1	आयु
	(मूल शब्द)	
उस्सासो	(उस्सास) 1/1	श्वासोच्छवास

अन्वय- जो हु चदुहिं पाणेहिं जीवदि जीविस्सदि पुव्वं जीविदो सो जीवो पुण पाणा बलमिंदियमाउ उस्सासो।

अर्थ- जो निश्चय ही चार प्राणों से जीता है, जीवेगा, विगतकाल में जीया (है) वह जीव (द्रव्य है) और (वे) प्राण- बल, इन्द्रिय, आयु (और) श्वासोच्छवास (हैं)।

---

* प्राकृत में किसी भी कारक के लिए मूल संज्ञा शब्द काम में लाया जा सकता है। (पिशलः प्राकृत भाषाओंका व्याकरण, पृष्ठ 517)

31. अगुरुलहुगा अणंता तेहिं अणंतेहिं परिणदा सव्वे।
देसेहिं असंखादा सियलोगं सव्वमावण्णा।।

अगुरुलहुगा	(अगुरुलहुग) 1/2 वि	अगुरुलघुगुण से युक्त
अणंता	(अणंत) 1/2 वि	अनन्त
तेहिं	(त) 3/2 सवि	उन
अणंतेहिं	(अणंत) 3/2 वि	अनन्त के द्वारा
परिणदा	(परिणद) भूक 1/2 अनि	रूपान्तरित
सव्वे	(सव्व) 1/2 सवि	समस्त
देसेहिं	(देस) 3/2	प्रदेशों की दृष्टि से
असंखादा	(असंखाद) 1/2 वि	असंख्यात
सियलोगं	[(सिय) अ-(लोग) 2/1]	किसी एक प्रकार से लोक को
सव्वमावण्णा	[(सव्वं)+(आवण्णा)]	
	सव्वं (सव्व) 2/1 सवि	समस्त
	आवण्णा (आवण्ण) भूक 1/2 अनि	प्राप्त हुए

अन्वय- अणंता अगुरुलहुगा तेहिं अणंतेहिं सव्वे परिणदा देसेहिं असंखादा सियलोगं सव्वमावण्णा।

अर्थ- (जीव) अनन्त अगुरुलघुगुण से युक्त (है), उन अनन्त (अगुरुलघुगुणों) के द्वारा समस्त (जीव) रूपान्तरित (हैं) (और) (वे जीव) प्रदेशों की दृष्टि से असंख्यात (प्रदेशी) है अर्थात् प्रत्येक जीव असंख्यात प्रदेशवाला होता है (किन्तु) किसी एक प्रकार से (कई जीव) समस्त लोक को प्राप्त हुए (हैं)।

32. केचित्तु अणावण्णा मिच्छादंसणकसायजोगजुदा।
विजुदा य तेहिं बहुगा सिद्धा संसारिणो जीवा।।

केचित्तु	[(के)+(चित्त)+(उ)]	
	के (क) 1/2 सवि	कई
	*चित्त (चित्त) 1/2 (मूलशब्द)	जीव
	उ (अ) = किन्तु	किन्तु
अणावण्णा	[(अण)+(आवण्णा)]	
	[(अण) अ-(आवण्ण) भूकृ 1/2 अनि]	नहीं, प्राप्त हुए
मिच्छादंसणकसाय-जोगजुदा	[(मिच्छादंसण)-(कसाय)-(जोग)-(जुद) भूकृ 1/2 अनि]	मिथ्यादर्शन, कषाय और योग से युक्त
विजुदा	(विजुद) भूकृ 1/2 अनि	रहित
य	अव्यय	और
तेहिं	(त) 3/2 सवि	उनसे
बहुगा	(बहुग) 1/2 वि	अनेक
सिद्धा	(सिद्ध) 1/2 वि	सिद्ध
संसारिणो	(संसारि) 1/2 वि	संसारी
जीवा	(जीव) 1/2	जीव

अन्वय- केचित्तु अणावण्णा मिच्छादंसणकसायजोगजुदा बहुगा जीवा संसारिणो य तेहिं विजुदा सिद्धा।

अर्थ- किन्तु कई जीव (जो) (समस्त लोक को) प्राप्त नहीं हुए (हैं) (उन जीवों में से) मिथ्यादर्शन, कषाय और योग से युक्त अनेक जीव संसारी हैं और उन (मिथ्यादर्शन, कषाय और योग) से रहित (जीव) सिद्ध (हैं)।

---

* प्राकृत में किसी भी कारक के लिए मूल संज्ञा शब्द काम में लाया जा सकता है।
(पिशलः प्राकृत भाषाओंका व्याकरण, पृष्ठ 517)

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

33. जह पउमरायरयणं खित्तं खीरे पभासयदि खीरं।
तह देही देहत्थो सदेहमेत्तं पभासयदि।।

जह	अव्यय	जिस प्रकार
पउमरायरयणं	[(पउमराय)-(रयण) 1/1]	लाल रत्न
खित्तं	(खित्त) भूकृ 1/1 अनि	डाला हुआ
खीरे	(खीर) 7/1	दूध में
पभासयदि	(पभास+य) व प्रे 3/1 सक	प्रकाशित करता है
खीरं	(खीर) 2/1	दूध को
तह	अव्यय	उसी प्रकार
देही	(देहि) 1/1	जीव
देहत्थो	(देहत्थ) 1/1 वि	देह में स्थित
सदेहमेत्तं	[(स) वि-(देहमेत्त) 2/1]	अपनी देहमात्र को ही
पभासयदि	(पभास+य) व प्रे 3/1 सक	प्रकाशित करता है

अन्वय– जह खीरे खित्तं पउमरायरयणं खीरं पभासयदि तह देहत्थो देही सदेहमेत्तं पभासयदि।

अर्थ– जिस प्रकार दूध में डाला हुआ लाल रत्न (अपनी प्रभा से) दूध को प्रकाशित करता है उसी प्रकार देह में स्थित जीव अपनी देहमात्र को ही प्रकाशित करता है।

34. सव्वत्थ अत्थि जीवो ण य एक्को एक्ककाए एक्कट्ठो।
अज्झवसाणविसिट्ठो चेट्ठदि मलिणो रजमलेहिं।।

सव्वत्थ	अव्यय	सभी जगह/पर्यायों में
अत्थि•	(अस) व 3/1 अक	रहता है
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
ण	अव्यय	नहीं
य	अव्यय	परन्तु
एक्को	(एक्क) 1/1 वि	समरूप
एक्ककाए	[(एक्क) वि-(काअ) 7/1]	एक शरीर में
एक्कट्ठो	[(एक्क) वि-(अट्ठ) 1/1]	एकरूप/उसी पर्याय रूप
अज्झवसाणविसिट्ठो	[(अज्झवसाण)-(विसिट्ठ) भूकृ 1/1 अनि]	मानसिक संकल्पों से युक्त
चेट्ठदि	(चेट्ठ) व 3/1 अक	रहता है
मलिणो	(मलिण) 1/1 वि	मलिन
रजमलेहिं	[(रज)-(मल) 3/2]	कर्मधूलरूपी मैल से

अन्वय– जीवो एक्ककाए सव्वत्थ एक्कट्ठो अत्थि य एक्को ण अज्झवसाणविसिट्ठो रजमलेहिं मलिणो चेट्ठदि।

अर्थ– (संसारी) जीव एक शरीर में सभी जगह/पर्यायों में एकरूप/उसी पर्यायरूप (होकर) रहता (है), परन्तु (वह) समरूप नहीं (है/होता है)। (जीव जब) (उस पर्याय में) (रागद्वेषात्मक) मानसिक संकल्पों से युक्त (होता है) (तब) कर्मधूलरूपी मैल से मलिन रहता है।

•नोटः 'अत्थि' अस्तित्वसूचक अव्यय के रूप में भी माना जाता है।

35. जेसिं जीवसहावो णत्थि अभावो य सव्वहा तस्स।
ते होंति भिण्णदेहा सिद्धा वचिगोयरमदीदा।।

जेसिं[1]	(ज) 6/2→7/2 सवि	जिनमें
जीवसहावो	[(जीव)-(सहाव) 1/1]	(द्रव्य) प्राण-धारण-स्वभाव
णत्थि	अव्यय	नहीं है
अभावो	(अभाव) 1/1	सर्वथा अस्तित्वरहित/अनुपस्थित
य	अव्यय	किन्तु
सव्वहा	अव्यय	बिल्कुल
तस्स	(त) 6/1 सवि	उसका
ते	(त) 1/2 सवि	वे
होंति	(हो) व 3/2 अक	होते हैं
भिण्णदेहा	[(भिण्ण) भूकृ अनि-(देह) 1/2 वि]	विछिन्न देहवाले
सिद्धा	(सिद्ध) 1/2	सिद्ध
वचिगोयरमदीदा	[(वचिगोयरं)+(अदीदा)]	
(वइ)	वचिगोयरं (वचिगोयर) 2/1	वाणी की पहुँच को
	अदीदा (अदीद) 1/2 भूकृ अनि	पार किये हुए/शब्दातीत

अन्वय- जेसिं जीवसहावो सव्वहा णत्थि य तस्स अभावो ते सिद्धा होंति भिण्णदेहा वचिगोयरमअदीदा।

अर्थ- जिनमें (संसारी जीवों की तरह) (कर्मजनित) (द्रव्य) प्राण-धारण-स्वभाव बिल्कुल नहीं है किन्तु (जिनमें) उसका (मूल चेतन-स्वभाव) सर्वथा अस्तित्वरहित/अनुपस्थित (नहीं है) वे सिद्ध हैं (जो) विछिन्न देहवाले (तथा) वाणी की पहुँच को पार किये हुए/शब्दातीत (हैं)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)

नोटः संपादक द्वारा अनूदित
देखें गाथा 27 से 30

36. ण कुदोचि वि उप्पण्णो जम्हा कज्जं ण तेण सो सिद्धो।
उप्पादेदि ण किंचि वि कारणमवि तेण ण स होदि।।

ण	अव्यय	नहीं
कुदोचि (कुओइ)	अव्यय	किसी से
वि	अव्यय	भी
उप्पण्णो	(उप्पण्ण) भूकृ 1/1 अनि	उत्पन्न हुआ
जम्हा	अव्यय	चूँकि
कज्जं	(कज्ज) 1/1	कार्य
ण	अव्यय	नहीं
तेण	अव्यय	इसलिए
सो	(त) 1/1 सवि	वह
सिद्धो	(सिद्ध) 1/1	सिद्ध
उप्पादेदि	(उप्पाद) व 3/1 सक	उत्पन्न करता है
ण	अव्यय	नहीं
किंचि	अव्यय	कुछ
वि	अव्यय	भी
कारणमवि	[(कारणं)+(अवि)]	
	कारणं (कारण) 1/1	कारण
	अवि (अ) = भी	भी
तेण	अव्यय	इसलिए
ण	अव्यय	नहीं
स	(त) 1/1 सवि	वह
होदि	(हो) व 3/1 अक	होता है

अन्वय- जम्हा कुदोचि वि उप्पण्णो ण तेण सो सिद्धो कज्जं ण किंचि वि ण उप्पादेदि तेण स कारणमवि ण होदि।

अर्थ- चूँकि (सिद्ध जीव) किसी से भी उत्पन्न नहीं हुआ (है) इसलिए वह सिद्ध कार्य नहीं (है) (और)(चूँकि) (सिद्ध) कुछ भी उत्पन्न नहीं करते हैं इसलिए वह (सिद्ध जीव) कारण भी नहीं है।

37. सस्सदमध उच्छेदं भव्वमभव्वं च सुण्णमिदरं च।
विण्णाणमविण्णाणं ण वि जुज्जदि असदि सब्भावे।।

सस्सदमध	[(सस्सदं)+(अध)]	
	सस्सदं (सस्सद) 2/1 वि	शाश्वत को
	अध (अ) = और	और
उच्छेदं	(उच्छेद) 2/1	नाश को
भव्वमभव्वं	[(भव्वं)+(अभव्वं)]	
	भव्वं (भव्व) 2/1 वि	भव्य को
	अभव्वं (अभव्व) 2/1 वि	अभव्य को
च	अव्यय	और
सुण्णमिदरं	[(सुण्णं)+(इदरं)]	
	सुण्णं (सुण्ण) 2/1 वि	शून्य को
	इदरं (इदर) 2/1 वि	विपरीत (पूर्ण) को
च	अव्यय	और
विण्णाणमविण्णाणं	[(विण्णाणं)+(अविण्णाणं)]	
	विण्णाणं (विण्णाण) 2/1 वि	ज्ञान को
	अविण्णाणं (अविण्णाण) 2/1 वि	अज्ञान को
ण	अव्यय	नहीं
वि	अव्यय	भी
जुज्जदि[1]	(जुज्ज) व 3/1 सक	जोड़ता है
असदि	(असदि) 7/1 वि अनि	अभाव होने पर
सब्भावे	(सब्भाव) 7/1	अस्तित्व में

अन्वय– सब्भावे असदि सस्सदमध उच्छेदं भव्वमभव्वं च सुण्णमिदरं च विण्णाणमविण्णाणं ण वि जुज्जदि ।

अर्थ– अस्तित्व में (जीव का) अभाव होने पर (जीव के) (द्रव्यरूप से) शाश्वत को औार (पर्यायरूप से) नाश (होने) को, भव्य (मोक्षगामी) को और अभव्य (मोक्ष के अयोग्य) (होने) को, शून्य को और विपरीत (पूर्ण को), ज्ञान को और अज्ञान को (कोई) भी नहीं जोड़ेगा।

1. हेम-प्राकृत-व्याकरणः 4/109

38. कम्माणं फलमेक्को एक्को कज्जं तु णाणमध एक्को।
चेदयदि जीवरासी चेदगभावेण तिविहेण।।

कम्माणं	(कम्म) 6/2	कर्मों के
फलमेक्को	[(फलं)+(एक्को)]	
	फलं (फल) 2/1	फल
	एक्को (एक्क) 1/1 वि	कोई
एक्को	(एक्क) 1/1 वि	कोई
कज्जं	(कज्ज) 2/1	कर्म
तु	अव्यय	और
णाणमध	[(णाणं)+(अध)]	
	णाणं (णाण) 2/1	ज्ञान
	अध (अ) = और	और
एक्को	(एक्क) 1/1 वि	कोई
चेदयदि	(चेदयदि) व 3/1 सक अनि	अनुभव करता है
जीवरासी	[(जीव)-(रासि) 1/1]	जीवों का समूह
चेदगभावेण	[(चेदग) वि -	चेतनावाला जीव,
	(भाव) 3/1→7/1]	स्वरूप में/अस्तित्व में
तिविहेण	[(ति) वि-(विह) 3/1]	तीन प्रकार से

अन्वय- एक्को जीवरासी कम्माणं फलमेक्को कज्जं तु एक्को णाणमध चेदयदि चेदगभावेण तिविहेण।

अर्थ- कोई जीवों का समूह (तो) (केवल) कर्मों के (सुखदुखरूप) फल का (अनुभव करता है) और कोई (जीवों का समूह) (इष्ट-अनिष्ट) कर्म का (अनुभव करता है) और कोई (जीवों का समूह) (केवल) ज्ञान का अनुभव करता है। (इस प्रकार) चेतनावाला जीव (अपने) स्वरूप में/अस्तित्व में तीन प्रकार (कर्मफल, कर्म और ज्ञान) से (वर्णित है)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर तृतीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

39. सव्वे खलु कम्मफलं थावरकाया तसा हि कज्जजुदं।
पाणित्तमदिक्कंता णाणं विंदंति ते जीवा।।

सव्वे	(सव्व) 1/2 सवि	समस्त
खलु	अव्यय	निश्चय ही
कम्मफलं	[(कम्म)-(फल) 2/1]	कर्मों का फल
थावरकाया	[(थावर)-(काय) 1/2]	स्थावरकाय/एकेन्द्रिय जीव
तसा	(तस) 1/2	त्रस/दो इन्द्रियादि जीव
हि	अव्यय	निश्चय ही
कज्जजुदं	[(कज्ज)-(जुद) भूकृ 1/1 अनि]	कार्यों से युक्त
पाणित्तमदिक्कंता	[(पाणित्तं)+(अदिक्कंता)]	
	पाणित्तं (पाणित्त) 2/1 द्वितीयार्थक अव्यय	प्राणीपन से/ प्राणित्व से
	अदिक्कंता (अदिक्कंत)1/2 वि	रहित
णाणं	(णाण) 2/1	ज्ञान
विंदंति	(विंद) व 3/2 सक	अनुभव करते हैं
ते	(त) 1/2 सवि	वे
जीवा	(जीव) 1/2	जीव

अन्वय- खलु सव्वे थावरकाया कम्मफलं तसा हि कज्जजुदं पाणित्तमदिक्कंता ते जीवा णाणं विंदंति।

अर्थ- निश्चय ही समस्त स्थावरकाय/एकेन्द्रिय जीव कर्मों के (सुखदुखरूप) फल का (अनुभव करते हैं), त्रस/दो इन्द्रिय आदि जीव निश्चय ही (कर्मों का सुखदुखरूप जो फल है उसको इष्ट अनिष्ट पदार्थों में) कार्यों से युक्त (होकर) (अनुभव करते हैं) (और) प्राणीपन से/प्राणित्व से रहित वे जीव ज्ञान का अनुभव करते हैं।

40. उवओगो खलु दुविहो णाणेण य दंसणेण संजुत्तो।
जीवस्स सव्वकालं अणण्णभूदं वियाणीहि।।

उवओगो	(उवओग) 1/1	उपयोग
खलु	अव्यय	वाक्यालंकार
दुविहो	[(दु) वि-(विह) 1/1]	दो प्रकार
णाणेण	(णाण) 3/1	ज्ञान
य	अव्यय	और
दंसणेण	(दंसण) 3/1	दर्शन
संजुत्तो	(संजुत्त) भूक 1/1 अनि	सहित
जीवस्स	(जीव) 6/1	जीव का
सव्वकालं[1]	[(सव्व) सवि-(काल) 2/1→7/1]	सब काल में
अणण्णभूदं	[(अणण्ण) वि-(भूद) भूक 2/1 अनि]	एकमेक हुए
वियाणीहि	(वियाणीहि) विधि 2/1 सक अनि	जानो

अन्वय- जीवस्स उवओगो दुविहो णाणेण य दंसणेण संजुत्तो खलु सव्वकालं अणण्णभूदं वियाणीहि।

अर्थ- जीव का उपयोग दो प्रकार का (है)- ज्ञान-सहित (ज्ञानोपयोग) और दर्शन-सहित (दर्शनोपयोग) (है)। (जीव के साथ) सब काल में एकमेक हुए (उपयोग को) जानो।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

41. आभिणिसुदोधिमणकेवलाणि णाणाणि पंचभेयाणि।
कुमदिसुदविभंगाणि य तिण्णि वि णाणेहिं संजुत्ते।।

आभिणिसुदोधिमण-	[(आभिणिसुद)+	
केवलाणि	(ओधिमणकेवलाणि)]	
	[(आभिणि)-(सुद)-(ओधि)-	मति, श्रुत, अवधि
	(मण)-(केवल) 1/2]	मनःपर्यय और केवल
णाणाणि	(णाण) 1/2	ज्ञान
पंचभेयाणि	[(पंच) वि-(भेय) 1/2]	पाँच प्रकार
कुमदिसुदविभंगाणि	[(कु-मदि)-(कु-सुद)-]	कुमति, कुश्रुत और
	(विभंग) 2/2]	कुअवधि
य	अव्यय	तथा
तिण्णि	(ति) 2/2 वि	तीनों को
वि	अव्यय	पादपूरक
णाणेहिं	(णाण) 3/2	ज्ञानों के साथ
संजुत्ते	(संजुत्त) भूकृ 2/2 अनि	सम्मिलित हुए

अन्वय– णाणाणि पंचभेयाणि आभिणिसुदोधिमणकेवलाणि य कुमदिसुदविभंगाणि तिण्णि वि णाणेहिं संजुत्ते।

अर्थ– ज्ञान पाँच प्रकार का (होता है)- मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय और केवल। तथा कुमति, कुश्रुत और कुअवधि (इन) तीनों को (पूर्वोक्त पाँच) ज्ञानों के साथ सम्मिलित हुए (जानो)।

42. दंसणमवि चक्खुजुदं अचक्खुजुदमवि य ओहिणा सहियं।
अणिधणमणंतविसयं केवलियं चावि पण्णत्तं।।

दंसणमवि	[(दंसणं)+(अवि)]	
	दंसणं (दंसण) 1/1	दर्शन
	अवि (अ) = भी	भी
चक्खुजुदं	[(चक्खु)-(जुद) भूकृ 1/1 अनि]	चक्षुसहित
अचक्खुजुदमवि	[(अचक्खुजुदं)+(अवि)]	
	[(अचक्खु)-(जुद) भूकृ 1/1 अनि]	अचक्षुसहित
	अवि (अ) = और	और
य	अव्यय	तथा
ओहिणा	(ओहि) 3/1	अवधि
सहियं	(सहिय) भूकृ 1/1 अनि	सहित
अणिधणमणंतविसयं	[(अणिधणं)+(अणंतविसयं)]	
	अणिधणं (अ-णिधण) 1/1 वि	अन्तरहित
	[(अणंत)-(विसय) 1/1 वि]	अनन्त विषयवाला
केवलियं	(केवलिय) 1/1 वि	केवल संबंधी
चावि	[(च)+(अवि)]	
	च (अ) = और	और
	अवि (अ) = पादपूरक	पादपूरक
पण्णत्तं	(पण्णत्त) भूकृ 1/1 अनि	कहा गया

अन्वय– दंसणमवि चक्खुजुदं अचक्खुजुदमवि ओहिणा सहियं य अणिधणं च अणंतविसयं अवि केवलियं पण्णत्तं।

अर्थ– दर्शन भी चक्षुसहित और अचक्षुसहित, अवधिसहित तथा अन्तरहित और अनन्त विषयवाला केवल संबंधी (दर्शन) कहा गया (है)।

43. ण वियप्पदि णाणादो णाणी णाणाणि होंति णेगाणि।
तम्हा दु विस्सरूवं भणियं दवियं ति णाणीहि।।

ण	अव्यय	नहीं
वियप्पदि	(वियप्प) व 3/1 सक	संशय करता है
णाणादो	(णाण) 5/2	ज्ञानों के कारण
णाणी	(णाणि) 1/1 वि	ज्ञानी
णाणाणि	(णाण) 1/2	ज्ञान
होंति	(हो) व 3/2 अक	होते हैं
णेगाणि	(णेग) 1/2 वि	अनेक
तम्हा	अव्यय	इसलिए
दु	अव्यय	किन्तु/तो भी
विस्सरूवं	(विस्सरूव) 1/1 वि	अनेक प्रकारवाला
भणियं	(भण) भूकृ 1/1	कहा गया
दवियं ति[1]	[(दवियं)+(इति)]	
	दवियं (दविय) 1/1	द्रव्य
	इति (अ) = ही	ही
णाणीहि	(णाणि) 3/2 वि	ज्ञानियों द्वारा

अन्वय– णाणाणि णेगाणि होंति दु णाणी णाणादो ण वियप्पदि तम्हा णाणीहि विस्सरूवं दवियं ति भणियं।

अर्थ– ज्ञान अनेक होते हैं किन्तु/तो भी ज्ञानी (विभिन्न) ज्ञानों के कारण (आत्मा की उनसे) (अपृथकता में) संशय नहीं करता है। इसलिए ही ज्ञानियों द्वारा अनेक प्रकारवाला द्रव्य कहा गया (है) (तो भी ज्ञानी द्रव्यों में भेदों के कारण उनमें व्याप्त अस्तित्व की अपृथकता में संशय नहीं करता है)।

---

1. हेम-प्राकृत-व्याकरणः 1/42

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

44. जदि हवदि दव्वमण्णं गुणदो य गुणा य दव्वदो अण्णे।
दव्वाणंतियमधवा दव्वाभावं पकुव्वंति।।

जदि	अव्यय	यदि
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
दव्वमण्णं	[(दव्वं)+(अण्णं)]	
	दव्वं (दव्व) 1/1	द्रव्य
	अण्णं (अण्ण) 1/1 वि	पृथक
गुणदो	(गुण) 5/1	गुण से
	पंचमीअर्थक 'दो' प्रत्यय	
य	अव्यय	पादपूरक
गुणा	(गुण) 1/2	गुण
य	अव्यय	पादपूरक
दव्वदो	(दव्व) 5/1	द्रव्य से
	पंचमीअर्थक 'दो' प्रत्यय	
अण्णे	(अण्ण) 1/2 वि	पृथक
दव्वाणंतियमधवा	[(दव्व)+(अणंत)+ (इयं)+(अधवा)]	
	[(दव्व)-(अणंत) वि-(इ) भूकृ 1/1]	अनन्त द्रव्य घटित
	अधवा (अ) = अथवा	अथवा
दव्वाभावं	[(दव्व)-(अभावं) 2/1]	द्रव्य अभाव को
पकुव्वंति	(पकुव्व) व 3/2 सक	हासिल/प्राप्त करते हैं

अन्वय– जदि दव्वं गुणदो अण्णं हवदि दव्वाणंतियमधवा य गुणा य दव्वदो अण्णे दव्वाभावं पकुव्वंति।

अर्थ– यदि द्रव्य गुण से पृथक होता है (तो) अनन्त द्रव्य घटित (होंगे) अथवा (यदि) गुण द्रव्य से पृथक (होते हैं) (तो) द्रव्य (ही) अभाव को हासिल/प्राप्त करते हैं (करेंगे)। (चूँकि गुण आश्रयरहित नहीं रहते हैं अतः पृथक अनन्त गुणों के लिए आश्रयरूप अनन्त द्रव्यों की कल्पना करनी होगी जो अर्थहीन होगी अथवा चूँकि द्रव्य गुणों का समूह होता है अतः गुण की पृथक कल्पना करने से द्रव्य का ही अभाव हो जायेगा)।

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

45. अविभत्तमणण्णत्तं दव्वगुणाणं विभत्तमण्णत्तं।
णेच्छंति णिच्चयण्हू तव्विवरीदं हि व तेसिं।।

अविभत्तमणण्णत्तं	[(अविभत्तं)+(अणण्णत्तं)]	
	अविभत्तं (अविभत्त) 1/1 वि	अविभाजित
	अणण्णत्तं (अणण्णत्त) 1/1	अपृथकता
दव्वगुणाणं[1]	[(दव्व)-(गुण) 6/2→7/2]	द्रव्य और गुणों में
विभत्तमण्णत्तं	[(विभत्तं)+(अण्णत्तं)]	
	विभत्तं (विभत्त) 2/1 वि	विभाजित
	अण्णत्तं (अण्णत्त) 2/1	पृथकता को
णेच्छंति	[(ण)+(इच्छंति)]	
	ण (अ) = नहीं	नहीं
	इच्छंति (इच्छ) व 3/2 सक	स्वीकार करते हैं
णिच्चयण्हू	(णिच्चयण्हु) 1/1 वि	वास्तविक स्वरूप के जाननेवाले
तव्विवरीदं	(तव्विवरीदं) 2/1 वि अनि	उसके विपरीत (तादात्म्य को)
हि	अव्यय	इसलिए
व	अव्यय	पादपूरक
तेसिं[1]	(त) 6/2→7/2 सवि	उनमें

अन्वय– दव्वगुणाणं अविभत्तमणण्णत्तं हि व तेसिं विभत्तमण्णत्तं तव्विवरीदं णिच्चयण्हू णेच्छंति ।

अर्थ– द्रव्य और गुणों में अविभाजित अपृथकता (है)। इसलिए उन (द्रव्य और गुणों) में विभाजित पृथकता को (तथा) उसके विपरीत (तादात्म्य को) वास्तविक स्वरूप के जाननेवाले (जो) (ज्ञानी) (हैं) (वे) स्वीकार नहीं करते हैं।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम प्राकृत व्याकरण 3-134)

46. ववदेसा संठाणा संखा विसया य होंति ते बहुगा।
ते तेसिमणण्णत्ते अण्णत्ते चावि विज्जंते।।

ववदेसा	(ववदेस) 1/2	नाम
संठाणा	(संठाण) 1/2	संरचना/आकार
संखा	(संखा) 1/2	संख्या
विसया	(विसय) 1/2	उद्देश्य
य	अव्यय	और
होंति	(हो) व 3/2 अक	होती हैं
ते	(त) 1/2 सवि	वे
बहुगा	(बहुग) 1/2 वि	अनेक
	'ग' स्वार्थिक	
ते	(त) 1/2 सवि	वे
तेसिमणण्णत्ते	[(तेसिं)+(अणण्णत्ते)]	
	तेसिं (त) 6/2 सवि	उनकी
	अणण्णत्ते (अणण्णत्त) 7/1	अपृथकता में
अण्णत्ते	(अण्णत्त) 1/2	पृथकताएँ
चावि	[(च)+(अवि)]	
	च (अ) = तथा	तथा
	अवि (अ) = भी	भी
विज्जंते	(विज्ज) व 3/2 अक	विद्यमान होती हैं

अन्वय- ववदेसा संठाणा संखा य विसया ते अण्णत्ते बहुगा होंति च ते तेसिमणण्णत्ते अवि विज्जंते।

अर्थ- (वस्तुओं का) नाम, (उनकी) संरचना/आकार, (उनकी) संख्या और (उनके) उद्देश्य- वे पृथकताएँ अनेक (होती हैं), तथा वे (पृथकताएँ) उनकी (द्रव्य और गुणों की) अपृथकता में भी विद्यमान होती हैं।

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

47. **णाणं धणं च कुव्वदि धणिणं जह णाणिणं च दुविधेहिं।**
भण्णंति तह पुधत्तं एयत्तं चावि तच्चण्हू।।

णाणं	(णाण) 1/1	ज्ञान
धणं	(धण) 1/1	धन
च	अव्यय	और
कुव्वदि	(कुव्व) व 3/1 सक	बनाता है
धणिणं	(धणिणं) 2/1 वि अनि	धनी
जह	अव्यय	जैसे
णाणिणं	(णाणिणं) 2/1 वि अनि	ज्ञानी
च	अव्यय	पादपूरक
दुविधेहिं	[(दु) वि-(विध) 3/2]	दो प्रकारों से
भण्णंति	(भण्ण) व 3/2 सक	कहते हैं
तह	अव्यय	वैसे
पुधत्तं	(पुधत्त) 2/1	पृथकत्व
एयत्तं	(एयत्त) 2/1	एकत्व
चावि	[(च)+(अवि)]	
	च (अ) = और	और
	अवि (अ) = भी	भी
तच्चण्हू	(तच्चण्हु) 1/2 वि	तत्वज्ञ

अन्वय– जह धणं धणिणं च णाणं णाणिणं च कुव्वदि तह तच्चण्हू दुविधेहिं पुधत्तं च एयत्तं अवि भण्णंति।

अर्थ– जैसे धन (व्यक्ति को) धनी (बनाता है) (यहाँ प्रदेशभिन्नता है) और ज्ञान (व्यक्ति को) ज्ञानी बनाता है (यहाँ प्रदेशएकता है) वैसे (ही) तत्वज्ञ दो प्रकारों से पृथकत्व (प्रदेशभिन्नता) और एकत्व (प्रदेशएकता) को भी कहते हैं।

48. णाणी णाणं च सदा अत्थंतरिदा दु अण्णमण्णस्स।
दोण्हं अचेदणत्तं पसजदि सम्मं जिणावमदं।।

णाणी	(णाणि) 1/1 वि	ज्ञानी
णाणं	(णाण) 1/1	ज्ञान
च	अव्यय	और
सदा	अव्यय	सदा
अत्थंतरिदा	(अत्थंतरिद) 1/2 वि	अर्थ में भिन्न
दु	अव्यय	तो
अण्णमण्णस्स[1]	(अण्णमण्ण) 6/1→7/1 वि	परस्पर में
दोण्हं	(दो) 6/2→7/2 वि	दोनों में
अचेदणत्तं	(अचेदणत्त) 1/1	अचेतनता
पसजदि	(पसज) व 3/1 अक	प्राप्त होती है
सम्मं	अव्यय	यथार्थरूप से
जिणावमदं	[(जिण)+(अवमदं)]	
	[(जिण)-(अवमद)	जिनेन्द्र द्वारा स्वीकृत
	भूकृ 1/1 अनि]	

अन्वय- णाणी च णाणं सदा अण्णमण्णस्स अत्थंतरिदा दु दोण्हं अचेदणत्तं पसजदि सम्मं जिणावमदं।

अर्थ- (यदि) ज्ञानी (आत्मा) और ज्ञान सदा परस्पर में अर्थ में भिन्न (हों) तो दोनों (आत्मा और ज्ञान) में अचेतनता (जानने रूप क्रिया शून्यता) प्राप्त होती है। (अर्थात् बिना ज्ञान के आत्मा कैसे जानेगा? और बिना आत्मा के ज्ञान निराश्रय हो जायेगा तो वह भी कैसे जानेगा?)। यथार्थरूप से (यह बात) जिनेन्द्र द्वारा स्वीकृत (है)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम प्राकृत व्याकरण 3-134)

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

49. ण हि सो समवायादो अत्थंदरिदो दु णाणादो णाणी।
अण्णाणि त्ति य वयणं एगत्तपसाधगं होदि।।

ण	अव्यय	नहीं
हि	अव्यय	निश्चय ही
सो	(त) 1/1 सवि	वह
समवायादो	(समवाय) 5/1	अविच्छिन्न संयोग के कारण
अत्थंदरिदो	(अत्थंदरिद) 1/1 वि	अर्थ में भिन्न
दु	अव्यय	तो
णाणादो	(णाण) 5/1	ज्ञान से
णाणी	(णाणि) 1/1 वि	ज्ञानी (आत्मा)
अण्णाणि त्ति	[(अण्णाणी)+(इति)]	
	अण्णाणी (अण्णाणि) 1/1 वि	अज्ञानी
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
य	अव्यय	और
वयणं	(वयण) 1/1	कथन
एगत्तपसाधगं	[(एगत्त)-(पसाधग) 1/1 वि]	एकत्व को साधनेवाला
होदि	(हो) व 3/1 अक	होता है

अन्वय- णाणी हि समवायादो णाणादो अत्थंदरिदो ण य सो अण्णाणि त्ति दु वयणं एगत्तपसाधगं होदि।

अर्थ- ज्ञानी (आत्मा) निश्चय ही अविच्छिन्न संयोग के कारण ज्ञान से अर्थ में भिन्न नहीं (है) और (यदि कहो कि) वह (आत्मा) (ज्ञान से पूर्व) अज्ञानी (है) तो (स्वभाव से वह अज्ञानी हो जायेगा)। इस प्रकार का कथन (अज्ञान से) एकत्व को साधनेवाला होता है।

50. समवत्ती समवाओ अपुधब्भूदो य अजुदसिद्धो य।
तम्हा दव्वगुणाणं अजुदा सिद्धि त्ति णिद्दिट्ठा।।

समवत्ती	(समवत्ति) 1/1	साथ-साथ रहना
समवाओ	(समवाअ) 1/1	समवाय
अपुधब्भूदो	(अपुधब्भूद) 1/1 वि	अपृथक बना हुआ
य	अव्यय	और
अजुदसिद्धो	(अजुदसिद्ध) 1/1 वि	अपृथक्करणीय
य	अव्यय	और
तम्हा	अव्यय	इसलिए
दव्वगुणाणं	[(दव्व)-(गुण) 6/2]	द्रव्य और गुणों का
अजुदा	(अजुदा) 1/1 वि	अनादि
* सिद्धि त्ति	[(सिद्धि)+(इति)]	
	सिद्धि (सिद्धि) 1/1	वैधता
	इति (अ) =	वाक्यार्थद्योतक
णिद्दिट्ठा	(णिद्दिट्ठा) भूकृ 1/1 अनि	प्रतिपादित की गई

अन्वय– दव्वगुणाणं समवत्ती समवाओ य अपुधब्भूदो य अजुदसिद्धो तम्हा अजुदा सिद्धि त्ति णिद्दिट्ठा।

अर्थ– द्रव्य और गुणों का साथ-साथ रहना (जिनधर्म में) समवाय (घनिष्ट संबंध) (है) और (वह संबंध) अपृथक बना हुआ (प्रदेशभेदरहित) (है) और अपृथक्करणीय (जानना चाहिए)। इसलिए (जिनेन्द्र द्वारा) (द्रव्य और गुण के संबंध में) अनादि वैधता प्रतिपादित की गई (है)।

---

* प्राकृत में किसी भी कारक के लिए मूल संज्ञा शब्द काम में लाया जा सकता है। (पिशलः प्राकृत भाषाओंका व्याकरण, पृष्ठ 517)

51. वण्णरसगंधफासा परमाणुपरूविदा विसेसेहि।
दव्वादो य अणण्णा अण्णत्तपगासगा होंति।।

वण्णरसगंधफासा	[(वण्ण)-(रस)-(गंध)-(फास) 1/2]	वर्ण, रस, गंध और स्पर्श
परमाणुपरूविदा	[(परमाणु)-(परूव) भूकृ 1/2]	परमाणु कहे गये
विसेसेहि	(विसेस) 3/2	विशेषों से युक्त
दव्वादो	(दव्व) 5/1	द्रव्य से
य	अव्यय	और
अणण्णा	(अणण्ण) 1/2 वि	अभिन्न
अण्णत्तपगासगा	[(अण्णत्त)-(पगासग) 1/2 वि]	पृथकताओं को प्रकाशित करनेवाले
होंति	(हो) व 3/2 अक	होते हैं

अन्वय- वण्णरसगंधफासा विसेसेहि परमाणुपरूविदा य दव्वादो अणण्णा अण्णत्तपगासगा होंति।

अर्थ- वर्ण, रस, गंध और स्पर्श- (इन) विशेषों से युक्त परमाणु कहे गये (हैं) और (ये चारों गुण) द्रव्य (पुद्गल) से अभिन्न (पृथक नहीं) है। (किन्तु) (पूर्व कथित) पृथकताओं को प्रकाशित करने वाले (भी) होते हैं।

52. दंसणणाणाणि जहा जीवणिबद्धाणि णण्णभूदाणि।
ववदेसदो पुधत्तं कुव्वंति हि णो सभावादो।।

दंसणणाणाणि	[(दंसण)-(णाण) 1/2]	दर्शन और ज्ञान
जहा	अव्यय	जैसे
जीवणिबद्धाणि	[(जीव)-(णिबद्ध) भूकृ 1/2 अनि]	जीव से संयुक्त
णण्णभूदाणि	[(ण) अ-(अण्णभूद) भूकृ 1/2]	पृथक नहीं हुए
ववदेसदो	(ववदेस) 5/1 पंचमीअर्थक 'दो' प्रत्यय	कथन से
पुधत्तं	(पुधत्त) 2/1	पृथकता/भेदभाव को
कुव्वंति	(कुव्व) व 3/2 सक	करते हैं
हि	अव्यय	निश्चय ही
णो	अव्यय	नहीं
सभावादो	(सभाव) 5/1	स्वभाव से

अन्वय– जहा जीवणिबद्धाणि दंसणणाणाणि णण्णभूदाणि ववदेसदो पुधत्तं कुव्वंति हि सभावादो णो।

अर्थ– जैसे (वर्ण, रस गंध और स्पर्श गुण द्रव्य से अभिन्न/पृथक नहीं है) (वैसे) (ही) जीव से संयुक्त दर्शन और ज्ञान (भी) पृथक नहीं हुए (हैं) (आचार्य नाम आदि भेद के) कथन से पृथकता/भेदभाव करते हैं (फिर भी) निश्चय ही स्वभाव से (भेद) नहीं (है)।

53. जीवा अणाइणिहणा संता णंता य जीवभावादो।
सब्भावदो अणंता पंचग्गगुणप्पधाणा य।।

जीवा	(जीव) 1/2	जीव
अणाइणिहणा	(अणाइणिहण) 1/2 वि	आदिअंतरहित/ शाश्वत
संता	(स-अंत) 1/2 वि	अंतसहित
णंता	[(ण) अ-(अंत) 1/2 वि]	अंतरहित
य	अव्यय	और
जीवभावादो	[(जीव)-(भाव) 5/1]	जीवों में भावों की अपेक्षा
सब्भावदो	(सब्भाव) 5/1 पंचमीअर्थक 'दो' प्रत्यय	स्वभाव से
अणंता	(अणंत) 1/2 वि	अनन्त
पंचग्गगुणप्पधाणा	[(पंच) वि -(अग्ग) वि-(गुण)-(प्पधाण) 1/2 वि]	पाँच सर्वोपरि भाव प्रधान
य	अव्यय	ही

अन्वय– जीवा अणाइणिहणा पंचग्गगुणप्पधाणा जीवभावादो संता य णंता सब्भावदो अणंता य।

अर्थ– जीव (तो) आदिअंतरहित/शाश्वत (है)। (किन्तु जीवों के भाव शाश्वत-अशाश्वत होते हैं)। (जीवों में) पाँच प्रधान भाव (औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक और पारिणामिक) सर्वोपरि हैं। (जिनमें औदयिक, औपशमिक, क्षायोपशमिक और क्षायिक भाव कर्म सापेक्ष है और पारिणामिक भाव कर्म निरपेक्ष है)(कर्म सापेक्ष) भावों की अपेक्षा जीवों में अन्तसहित (भाव भी होते हैं) और अन्तरहित (भाव होते हैं)। स्वभाव से (कर्म निरपेक्ष दृष्टि से) (जीव में) अनन्त (भाव) ही (होते हैं)।

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

54. एवं सदो विणासो असदो जीवस्स होइ उप्पादो।
इदि जिणवरेहिं भणिदं अण्णोण्णविरुद्धमविरुद्धं।।

एवं	अव्यय	इस प्रकार
सदो	(सदो) 6/1 वि अनि	विद्यमान का
विणासो	(विणास) 1/1	नाश
असदो	(असदो) 6/1 वि अनि	अविद्यमान का
जीवस्स	(जीव) 6/1	जीव का
होइ	(हो) व 3/1 अक	होता है
उप्पादो	(उप्पाद) 1/1	उत्पाद
इदि	अव्यय	इस प्रकार
जिणवरेहिं	(जिणवर) 3/2	जिनेन्द्रों के द्वारा
भणिदं	(भण) भूकृ 1/1	कहा गया
अण्णोण्ण-	[(अण्णोण्ण)-(विरुद्धं)+	
विरुद्धमविरुद्धं	(अविरुद्धं)]	
	[(अण्णोण्ण) वि-	परस्पर/आपस में
	(विरुद्ध)-भूकृ 1/1 अनि]	दिखाई देनेवाला विरोध
	अविरुद्धं (अविरुद्ध)भूकृ1/1 अनि	अविरोध

अन्वय- एवं सदो जीवस्स विणासो असदो उप्पादो होइ इदि जिणवरेहिं अण्णोण्णविरुद्धमविरुद्धं भणिदं।

अर्थ- इस प्रकार (पूर्व कथनानुसार) (कर्म सापेक्ष भावों के कारण) विद्यमान जीव (मनुष्यादिक पर्याय) का नाश और अविद्यमान (देवादिक जीव पर्याय) का उत्पाद होता है (जीव तो शाश्वत है)। इस प्रकार जिनेन्द्रों के द्वारा परस्पर/आपस में (दिखाई देनेवाला) विरोध (भी) अविरोध (ही) कहा गया (है)।

55. णेरइयतिरियमणुया देवा इदि णामसंजुदा पयडी।
कुव्वंति सदो णासं असदो भावस्स उप्पादं।।

णेरइयतिरियमणुया	[(णेरइय) वि-(तिरिय) वि-(मणुय) 1/2]	नारकी, तिर्यंच, मनुष्य
देवा	(देवा) 1/2	देव
इदि	अव्यय	इस प्रकार
णामसंजुदा	[(णाम) अ-(संजुद) भूकृ 1/2 अनि]	नामों से युक्त
पयडी	(पयडि) 1/2	कर्म प्रकृतियाँ
कुव्वंति	(कुव्व) व 3/2 सक	करती हैं
सदो	(सदो) 6/1 वि अनि	विद्यमान का
णासं	(णास) 2/1	नाश
असदो	(असदो) 6/1 वि अनि	अविद्यमान का
भावस्स	(भाव) 6/1	पर्याय का
उप्पादं	(उप्पाद) 2/1	उत्पाद

अन्वय– इदि णेरइयतिरियमणुया देवा णामसंजुदा पयडी सदो भावस्स णासं असदो उप्पादं कुव्वंति।

अर्थ– इस प्रकार नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और देव नामों से युक्त कर्म प्रकृतियाँ विद्यमान पर्याय का नाश (और) अविद्यमान (पर्याय) का उत्पाद करती हैं।

56. उदयेण उवसमेण य खयेण दुहिं मिस्सिदेहिं परिणामे।
जुत्ता ते जीवगुणा बहुसु य अत्थेसु वित्थिण्णा।।

उदयेण	(उदय) 3/1	उदय से
उवसमेण	(उवसम) 3/1	उपशम से
य	अव्यय	और
खयेण	(खय) 3/1	क्षय से
दुहिं	(दु) वि 3/2	दोनों से
मिस्सिदेहिं	(मिस्सिद) भूक 3/2 अनि	मिले हुए
परिणामे[1]	(परिणाम) 7/1→3/1	स्वभाव से
जुत्ता	(जुत्त) भूक 1/2 अनि	संयुक्त
ते	(त) 1/2 सवि	वे
जीवगुणा	[(जीव)-(गुण) 1/2]	जीव के आश्रित
बहुसु	(बहु) 7/2 वि	अनेक
य	अव्यय	और
अत्थेसु	(अत्थ) 7/2	अर्थों में
वित्थिण्णा	(वित्थिण्ण) भूक 1/2 अनि	विस्तार लिये हुए

अन्वय– उदयेण उवसमेण खयेण मिस्सिदेहिं दुहिं य परिणामे जुत्ता ते जीवगुणा य बहुसु अत्थेसु वित्थिण्णा।

अर्थ– (जो भाव) (कर्मों के) उदय से, उपशम से, क्षय से, (उपशम और क्षय) मिले हुए दोनों से और (अपने) स्वभाव से संयुक्त (है) वे (पाँचों भाव) जीव के आश्रित (है) और (वे) (भाव) अनेक अर्थों में विस्तार लिये हुए (हैं)।

---

1. यहाँ सप्तमी विभक्ति का प्रयोग तृतीया अर्थ में हुआ है।
(हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

57. कम्मं वेदयमाणो जीवो भावं करेदि जारिसयं।
सो तेण तस्स कत्ता हवदि त्ति य सासणे पढिदं ।।

कम्मं	(कम्म) 2/1	कर्म को
वेदयमाणो	(वेदयमाण) वकृ 1/1 अनि	भोगता हुआ
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
भावं	(भाव) 2/1	भाव
करेदि	(कर) व 3/1 सक	करता है
जारिसयं	(जारिस) 2/1 वि	जैसे
	'य' स्वार्थिक	
सो	(त) 1/1 सवि	वह
तेण	अव्यय	उस कारण से
तस्स	(त) 6/1 सवि	उसका
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	करनेवाला
हवदि त्ति	[(हवदि)+(इति)]	
	हवदि (हव) व 3/1 अक	होता है
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
य	अव्यय	पादपूरक
सासणे	(सासण) 7/1	आगम में
पढिदं	(पढ) भूकृ 1/1	कहा गया

अन्वय– कम्मं वेदयमाणो जीवो जारिसयं भावं करेदि सो तेण तस्स कत्ता हवदि त्ति य सासणे पढिदं।

अर्थ–कर्म को भोगता हुआ जीव जैसे भाव करता है (वैसे ही) वह उस कारण से उस (भाव) का करनेवाला होता है। आगम में इस प्रकार (यह) कहा गया (है)।

58. कम्मेण विणा उदयं जीवस्स ण विज्जदे उवसमं वा।
खइयं खओवसमियं तम्हा भावं तु कम्मकदं।।

कम्मेण[1]	(कम्म) 3/1	(द्रव्य) कर्म के
विणा	अव्यय	सिवाय
उदयं[2]	(उदय) 2/1→7/1	उदय में (औदयिक भाव में)
जीवस्स	(जीव) 4/1	जीव के लिए
ण	अव्यय	नहीं
विज्जदे	(विज्ज) व 3/1 अक	विद्यमान होता है
उवसमं[2]	(उवसम) 2/1→7/1 वि	उपशम में (औपशमिक भाव में)
वा	अव्यय	अथवा
खइयं[2]	(खइय) 2/1→7/1 वि	क्षायिक (भाव) में
खओवसमियं[2]	(खओवसमिय)2/1→7/1 वि	क्षायोपशमिक (भाव) में
तम्हा	अव्यय	इसलिए
भावं	(भाव) 1/1	भाव समूह
तु	अव्यय	निश्चय ही
कम्मकदं	[(कम्म)-(कद) भूकृ 1/1 अनि]	(द्रव्य) कर्म द्वारा उत्पन्न किये गये

अन्वय– कम्मेण विणा जीवस्स उदयं उवसमं खइयं वा खओवसमियं ण विज्जदे तम्हा भावं तु कम्मकदं।

अर्थ– (द्रव्य) कर्म के सिवाय जीव के लिये उदय में (औदयिक भाव में), उपशम में (औपशमिक भाव में), क्षायिक (भाव) में अथवा क्षायोपशमिक (भाव) में (अन्य कुछ भी) विद्यमान नहीं होता है। इसलिए (चारों) भाव समूह (द्रव्य) कर्म द्वारा निश्चय ही उत्पन्न किये गये (हैं)।

---

1. 'बिना' के योग में द्वितीया, तृतीया तथा पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।
2. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

59. भावो जदि कम्मकदो अत्ता कम्मस्स होदि किध कत्ता।
ण कुणदि अत्ता किंचि वि मुत्ता अण्णं सगं भावं।।

भावो	(भाव) 1/1	भाव
जदि	अव्यय	यदि
कम्मकदो	[(कम्म)-(कद) भूकृ 1/1 अनि]	(द्रव्य) कर्म द्वारा उत्पन्न किया गया
अत्ता	(अत्त) 1/1	आत्मा
कम्मस्स	(कम्म) 6/1	(द्रव्य) कर्म का
होदि[1]	(हो) व 3/1 अक	होता है
किध	अव्यय	कैसे
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	कर्ता
ण	अव्यय	नहीं
कुणदि	(कुण) व 3/1 सक	करता है
अत्ता	(अत्त) 1/1	आत्मा
किंचि	अव्यय	कुछ
वि	अव्यय	भी
मुत्ता	(मुत्ता) संकृ अनि	छोड़कर
अण्णं	(अण्ण) 2/1 वि	अन्य
सगं	(सग) 2/1 वि	निजी
भावं	(भाव) 2/1	भाव

अन्वय– जदि भावो कम्मकदो अत्ता कम्मस्स कत्ता किध होदि अत्ता सगं भावं मुत्ता अण्णं किंचि वि ण कुणदि।

अर्थ– यदि (पूर्व कथित औदयिकादि) (आत्मा का) भाव (द्रव्य) कर्म द्वारा उत्पन्न किया गया (है) (तो) (प्रश्न है कि) आत्मा (द्रव्य) कर्म का (या) (उससे उत्पन्न भाव का) कर्ता कैसे होगा? (क्योंकि) (जिन सिद्धान्त में कहा गया है कि) आत्मा निजी भाव को छोड़कर अन्य कुछ भी नहीं करता है।

---

1. प्रश्नवाचक शब्दों के साथ वर्तमानकाल का प्रयोग प्रायः भविष्यत्काल के अर्थ में होता है।

60. भावो कम्मणिमित्तो कम्मं पुण भावकारणं हवदि।
ण दु तेसिं खलु कत्ता ण विणा भूदा दु कत्तारं।।

भावो	(भाव) 1/1	भाव
कम्मणिमित्तो	[(कम्म)-(णिमित्त) 1/1]	कर्म के कारण
कम्मं	(कम्म) 1/1	कर्म
पुण	अव्यय	और
भावकारणं	[(भाव)-(कारण) 1/1]	भाव के कारण
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
ण	अव्यय	नहीं
दु	अव्यय	किन्तु
तेसिं[1]	(त) 6/2→7/2 सवि	उनमें
खलु	अव्यय	निश्चय ही
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	कर्ता
ण	अव्यय	नहीं
विणा	अव्यय	बिना
भूदा	(भूद) भूक 1/2 अनि	हुए
दु	अव्यय	किन्तु
कत्तारं[2]	(कत्तार) 2/1 वि	कर्ता

अन्वय- भावो कम्मणिमित्तो पुण कम्मं भावकारणं हवदि दु तेसिं खलु कत्ता ण दु कत्तारं विणा ण भूदा।

अर्थ- (औदयिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक) भाव (द्रव्य) कर्म के कारण (होता है) और (द्रव्य) कर्म (औदयिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक) भाव के कारण होता है, किन्तु उनमें (भाव और द्रव्यकर्मों में) निश्चय ही (कोई भी) कर्ता नहीं (है) किन्तु (यह मानना संगत होगा कि) (वे) (भाव और कर्म) कर्ता के बिना (भी) नहीं हुए हैं।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)
2. 'बिना' के योग में द्वितीया, तृतीया तथा पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

61. कुव्वं सगं सहावं अत्ता कत्ता सगस्स भावस्स।
ण हि पोग्गलकम्माणं इदि जिणवयणं मुणेयव्वं।।

कुव्वं	(कुव्वं) वकृ 2/1 अनि	करता हुआ
सगं	(सग) 2/1 वि	निजी
सहावं	(सहाव) 2/1	स्वभाव को
अत्ता	(अत्त) 1/1	आत्मा
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	कर्ता
सगस्स	(सग) 6/1 वि	निजी
भावस्स	(भाव) 6/1	भाव का
ण	अव्यय	नहीं
हि	अव्यय	निश्चय ही
पोग्गलकम्माणं	[(पोग्गल)-(कम्म) 6/2]	पुद्गल कर्मों का
इदि	अव्यय	इस प्रकार
जिणवयणं	[(जिण)-(वयण) 1/1]	जिन-वचन
मुणेयव्वं	(मुण) विधिकृ 1/1	समझा जाना चाहिये

अन्वय- सगं सहावं कुव्वं अत्ता सगस्स भावस्स कत्ता हि पोग्गलकम्माणं ण इदि जिणवयणं मुणेयव्वं।

अर्थ-निजी स्वभाव को करता हुआ आत्मा निजी भाव का (ही) कर्ता (है)। (वह) निश्चय ही पुद्गल-कर्मों का (कर्ता) नहीं (है)। इस प्रकार जिन-वचन समझा जाना चाहिए।

62. कम्मं पि सगं कुव्वदि सेण सहावेण सम्ममप्पाणं।
जीवो वि य तारिसओ कम्मसहावेण भावेण।।

कम्मं	(कम्म) 2/1	(द्रव्य) कर्म
पि	अव्यय	निश्चय ही
सगं	(सग) 2/1 वि	अपने को
कुव्वदि	(कुव्व) व 3/1 सक	करता है
सेण	(स) 3/1 वि	निजी
सहावेण	(सहाव) 3/1	स्वभाव से
सम्ममप्पाणं	[(सम्मं)+(अप्पाणं)]	
	सम्मं (अ) = सम्यक्	सम्यक्
	अप्पाणं (अप्पाण) 2/1	स्वरूप को
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
वि	अव्यय	भी
य	अव्यय	निस्सन्देह
तारिसओ	(तारिसअ) 1/1 वि	वैसे ही
	'अ' स्वार्थिक	
कम्मसहावेण	(कम्मसहाव) 3/1 वि	कर्म-स्वभाववाली
भावेण	(भाव) 3/1	प्रकृति से

अन्वय–कम्मं पि कम्मसहावेण भावेण सगं कुव्वदि तारिसओ जीवो वि सेण सहावेण य सम्ममप्पाणं।

अर्थ– (द्रव्य) कर्म निश्चय ही कर्म-स्वभाववाली प्रकृति से अपने को (ही) करता है (और) वैसे (ही) जीव भी निजी स्वभाव से निस्सन्देह (अपने) सम्यक् स्वरूप को (करता है)।

63. कम्मं कम्मं कुव्वदि जदि सो अप्पा करेदि अप्पाणं।
किध तस्स फलं भुंजदि अप्पा कम्मं च देदि फलं।।

कम्मं	(कम्म) 1/1	(द्रव्य) कर्म
कम्मं	(कम्म) 2/1	(द्रव्य) कर्म को
कुव्वदि	(कुव्व) व 3/1 सक	करता है
जदि	अव्यय	यदि
सो	(त) 1/1 सवि	वह
अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा
करेदि	(कर) व 3/1 सक	करता है
अप्पाणं	(अप्पाण) 2/1	स्वरूप को
किध	अव्यय	कैसे
तस्स	(त) 6/1 सवि	उसका
फलं	(फल) 2/1	फल
भुंजदि[1]	(भुंज) व 3/1 सक	भोगता है
अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा
कम्मं	(कम्म) 1/1	(द्रव्य) कर्म
च	अव्यय	परन्तु
देदि	(दे) व 3/1 सक	देता है
फलं	(फल) 2/1	फल

अन्वय– ***जदि कम्मं कम्मं कुव्वदि सो अप्पा अप्पाणं करेदि च कम्मं फलं देदि अप्पा तस्स फलं किध भुंजदि।***

अर्थ– यदि (द्रव्य) कर्म (अपने) (द्रव्य) कर्म को करता है (और) (यदि) वह आत्मा (अपने) स्वरूप को करता है, परन्तु (जब) (द्रव्य) कर्म फल देता है (तो) आत्मा उस (द्रव्यकर्म) का फल कैसे भोगेगा?

---

1. प्रश्नवाचक शब्दों के साथ वर्तमानकाल का प्रयोग प्रायः भविष्यत्काल के अर्थ में होता है।

64. ओगाढगाढणिचिदो पोग्गलकायेहिं सव्वदो लोगो।
सुहमेहिं बादरेहिं य णंताणंतेहिं विविधेहिं।।

ओगाढगाढणिचिदो	[(ओगाढ) वि-(गाढ) (अ)-(णिचिद) भूकृ 1/1 अनि]	गहरा, अत्यधिक भरा हुआ
पोग्गलकायेहिं	[(पोग्गल)-(काय) 3/2]	पुद्गल-समूहों से
सव्वदो	अव्यय	सब ओर से
लोगो	(लोग) 1/1	लोक
सुहुमेहिं	(सुहुम) 3/2 वि	सूक्ष्म
बादरेहिं	(बादर) 3/2 वि	स्थूल
य	अव्यय	और
णंताणंतेहिं	(णंताणंत) 3/2 वि	अनन्तानन्त
विविधेहिं	(विविध) 3/2 वि	अनेक प्रकारों सहित

अन्वय- लोगो सव्वदो पोग्गलकायेहिं ओगाढगाढणिचिदो सुहमेहिं बादरेहिं णंताणंतेहिं य विविधेहिं।

अर्थ- (यह समस्त) लोक सब ओर से पुद्गल-समूहों से अत्यधिक गहरा भरा हुआ (है) (जो) सूक्ष्म, स्थूल, अनन्तानन्त और अनेक प्रकारों सहित (होते हैं)।

65. अत्ता कुणदि सभावं तत्थ गदा पोग्गला सभावेहिं।
गच्छंति कम्मभावं अण्णण्णोगाहमवगाढा।।

अत्ता	(अत्त) 1/1	आत्मा
कुणदि	(कुण) व 3/1 सक	करता है
सभावं	(सभाव) 2/1	स्वभाव को
तत्थ	अव्यय	वहाँ
गदा	(गद) भूकृ 1/2 अनि	स्थित
पोग्गला	(पोग्गल) 1/2	पुद्गल
सभावेहिं	(सभाव) 3/2	अपनी प्रकृति से
गच्छंति	(गच्छ) व 3/2 सक	प्राप्त करते हैं
कम्मभावं	[(कम्म)-(भाव) 2/1]	द्रव्यकर्म-प्रकृति को
अण्णण्णोगाहमवगाढा	[(अण्णण्ण)+(ओगाहं)+ (अवगाढा)]	
	[(अण्णण्ण) वि-(ओगाह) 2/1→7/1]	परस्पर एक क्षेत्र में
	अवगाढा (अवगाढ) 5/1 वि	व्याप्त होने के कारण

अन्वय- अत्ता सभावं कुणदि तत्थ गदा पोग्गला अण्णण्णो-गाहमवगाढा सभावेहिं कम्मभावं गच्छंति।

अर्थ- (संसार अवस्था में अनादि कर्मबंध से उत्पन्न आत्मविस्मरण के कारण) आत्मा (अशुद्ध) स्वभाव (राग-द्वेष-मोह) को करता है (तब) वहाँ (उनके साथ) स्थित (वे) पुद्गल एक क्षेत्र में परस्पर व्याप्त होने के कारण अपनी प्रकृति से द्रव्यकर्म-प्रकृति को प्राप्त करते हैं।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

66. जह पुग्गलदव्वाणं बहुप्पयारेहिं खंधणिव्वत्ती।
अकदा परेहिं दिट्ठा तह कम्माणं वियाणीहि।।

जह	अव्यय	जैसे
पुग्गलदव्वाणं	[(पुग्गल)-(दव्व) 6/2]	पुद्गल द्रव्यों के
बहुप्पयारेहिं	[(बहु) वि-(प्पयार) 3/2→7/2]	अनेक भेदों में
खंधणिव्वत्ती	[(खंध)-(णिव्वत्ति) 1/1]	स्कंधों का उत्पादन
अकदा	(अ-कदा) भूकृ 1/1 अनि	नहीं किया हुआ
परेहिं	(पर) 3/2 वि	अन्य किन्हीं के द्वारा
दिट्ठा	(दिट्ठा) भूकृ 1/1 अनि	देखा गया
तह	अव्यय	वैसे ही
कम्माणं	(कम्म) 6/2	कर्मों के
वियाणीहि	(वियाणीहि) विधि 2/1 सक अनि	जानो

अन्वय- जह पुग्गलदव्वाणं खंधणिव्वत्ती बहुप्पयारेहिं परेहिं अकदा दिट्ठा तह कम्माणं वियाणीहि।

अर्थ- जैसे पुद्गलद्रव्यों के स्कंधों का अनेक भेदों में उत्पादन अन्य किन्हीं के द्वारा (प्रेरित) नहीं किया हुआ देखा गया (है), वैसे ही कर्मों के (उत्पादन को) जानो।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर तृतीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

67. **जीवा पुग्गलकाया अण्णण्णोगाढगहणपडिबद्धा।**
काले विजुज्जमाणा सुहदुक्खं देंति भुंजंति।।

जीवा	(जीव) 1/2	जीव
पुग्गलकाया	[(पुग्गल)-(काय) 1/2]	पुद्गलसमूह
अण्णण्णोगाढ-गहणपडिबद्धा	[(अण्णण्ण)+(ओगाढगहणपडिबद्धा)]	
	[(अण्णण्ण)-(ओगाढ) वि-(गहण)-(पडिबद्ध) भूकृ 1/2 अनि]	परस्पर में गहरी पकड़ से संबद्ध
काले	(काल) 7/1	समय आने पर
विजुज्जमाणा[1]	(विजुज्ज) वकृ 3/1	अलग होते हुए
सुहदुक्खं	[(सुह)-(दुक्ख) 2/1]	सुख और दुख
देंति	(दे) व 3/2 सक	देते हैं
भुंजंति	(भुंज) व 3/2 सक	भोगते हैं

अन्वय- जीवा पुग्गलकाया अण्णाण्णोगाढगहणपडिबद्धा काले विजुज्जमाणा सुहदुक्खं देंति भुंजंति।

अर्थ- जीव (और) (कर्म) पुद्गलसमूह (अनादिकाल से) परस्पर में गहरी पकड़ से संबद्ध (है)। (वे) (कर्म पुद्गलसमूह) समय आने पर अलग होते हुए सुख और दुख देते हैं और (जीव) भोगते हैं।

---

1. वि+जु+ज्ज+माण = विजुज्जमाण

68. तम्हा कम्मं कत्ता भावेण हि संजुदोध जीवस्स।
भोत्ता दु हवदि जीवो चेदगभावेण कम्मफलं।।

तम्हा	अव्यय	इसलिए
कम्मं	(कम्म) 1/1	कर्म
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	कर्ता
भावेण	(भाव) 3/1	भाव/परिणाम से
हि	अव्यय	क्योंकि
संजुदोध	[(संजुदो)+(अध]	
	संजुदो (संजुद) भूकृ 1/1 अनि संयुक्त	
	अध (अ) = तब	तब
जीवस्स	(जीव) 6/1	जीव के
भोत्ता	(भोत्तु) 1/1 वि	भोक्ता
दु	अव्यय	और
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
चेदगभावेण	[(चेदग) वि-(भाव) 3/1]	सचेतन रीति से
कम्मफलं	[(कम्म)-(फल) 2/1]	(द्रव्य)कर्म फल को

अन्वय– तम्हा कम्मं जीवस्स कत्ता हि भावेण संजुदोध कम्मफलं दु जीवो चेदगभावेण भोत्ता हवदि।

अर्थ– इसलिए (द्रव्य) कर्म जीव के (अशुद्ध भावों का) कर्ता (है) क्योंकि तब (अशुद्ध रागादिरूप) भाव/परिणाम से संयुक्त होता है (समय आने पर) (द्रव्य) कर्म (सुख-दुख) फल को (देते हैं) और जीव सचेतन रीति से (उसका) भोक्ता होता है।

69. एवं कत्ता भोत्ता होज्जं अप्पा सगेहिं कम्मेहिं।
हिंडदि पारमपारं संसारं मोहसंछण्णो।।

एवं	अव्यय	इस प्रकार
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	कर्ता
भोत्ता	(भोत्तु) 1/1 वि	भोक्ता
होज्जं*	(होज्ज) व 3/1 अक	होता है
अप्पा	(अप्प) 1/1	आत्मा
सगेहिं	(सग) 3/2 वि	अपने
	'ग' स्वार्थिक	
कम्मेहिं[1]	(कम्म) 3/2	कर्मों के कारण
हिंडदि	(हिंड) व 3/1 सक	भ्रमण करता है
पारमपारं[2]	[(पारं)+(अपारं)]	
	पारं (पार) 2/1→7/1	समुद्र में
	अपारं (अपार) 2/1→7/1 वि	अनन्त
संसारं[2]	(संसार) 2/1→7/1	संसार
मोहसंछण्णो	[(मोह)-(संछण्ण)	मोह से आच्छादित
	भूकृ 1/1 अनि]	

अन्वय– एवं मोहसंछण्णो अप्पा सगेहिं कम्मेहिं कत्ता भोत्ता होज्जं पारमपारं संसारं हिंडदि।

अर्थ– इस प्रकार मोह से आच्छादित आत्मा अपने कर्मों के कारण कर्ता (और) भोक्ता होता है (और) (अपने ही कर्मों के कारण) अनन्त संसार समुद्र में भ्रमण करता है।

---

* यहाँ पाठ 'होज्ज' होना चाहिये।

1. कारण व्यक्त करनेवाले शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है।
(प्राकृत-व्याकरण, पृष्ठ 36)

2. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है।
(हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

70. उवसंतखीणमोहो मग्गं जिणभासिदेण समुवगदो।
णाणाणुमग्गचारी णिव्वाणपुरं वजदि धीरो।।

उवसंतखीणमोहो	{[(उवसंत)-(खीण)-(मोह)] 1/1 वि}	दमन किया गया, नष्ट किया गया मोह
मग्गं[1]	(मग्ग) 2/1→7/1	मार्ग पर
जिणभासिदेण[2]	[(जिण)-(भास) भूकृ 3/1→7/1]	जिनेन्द्र द्वारा उपदिष्ट
समुवगदो	(समुवगद) भूकृ 1/1 अनि	भली प्रकार से गया
णाणाणुमग्गचारी	[(णाण)-(अणु) अ-(मग्गचारी) 1/1 वि]	ज्ञान के अनुरूप सम्मत मार्ग पर चलनेवाला
णिव्वाणपुरं[1]	(णिव्वाणपुर) 2/1→7/1	मोक्ष नगर में
वजदि	(वज) व 3/1 सक	जाता है
धीरो	(धीर) 1/1 वि	धैर्यवान (व्यक्ति)

अन्वय- उवसंतखीणमोहो जिणभासिदेण मग्गं समुवगदो णाणाणुमग्गचारी धीरा णिव्वाणपुरं वजदि।

अर्थ- (जिसके द्वारा) मोह (पूर्णरूप से) दमन किया गया (है) (या) नष्ट किया गया (है), (जो) जिनेन्द्र द्वारा उपदिष्ट (मार्ग पर) भली प्रकार से गया (है) (ऐसा) ज्ञान के अनुरूप (ज्ञान) सम्मत मार्ग पर चलनेवाला धैर्यवान (व्यक्ति) मोक्ष नगर में जाता है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)
2. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर तृतीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

71. एक्को चेव महप्पा सो दुवियप्पो तिलक्खणो होदि।
चदु-चंकमणो भणिदो पंचग्गगुणप्पधाणो य।।

एक्को	(एक्क) 1/1 वि	एक
चेव	अव्यय	ही
महप्पा	[(मह) वि-(अप्प) 1/1]	श्रेष्ठ आत्मा
सो	(त) 1/1 सवि	वह
दुवियप्पो	(दु-वियप्प) 1/1 वि	दो भेदवाला
तिलक्खणो	(ति-लक्खण) 1/1 वि	तीन प्रकारवाला
होदि	(हो) व 3/1 अक	होता है
चदु-चंकमणो	(चदु-चंकमण) 1/1 वि	चार गतियों में परिभ्रमण करनेवाला
भणिदो	(भण) भूकृ 1/1	कहा गया
पंचग्गगुणप्पधाणो	(पंच-अग्ग-गुण-प्पधाण) 1/1 वि	पाँच सर्वोपरि मुख्य भाववाला
य	अव्यय	और

अन्वय- सो महप्पा चेव एक्को दुवियप्पो तिलक्खणो होदि चदु-चंकमणो य पंचग्गगुणप्पधाणो भणिदो।

अर्थ- (छह द्रव्यों में आत्म द्रव्य मूल्यात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ है इसलिए आत्मा को महान कहा गया है)। आत्मा को विभिन्न दृष्टि से समझा जा सकता है-(1) वह श्रेष्ठ आत्मा ही एक (लक्षणवाला है) (चैतन्य स्वरूप)। (2) (वह) (जीव द्रव्य) दो भेदवाला (संसारी और मुक्त) (है)। (3) (वह) तीन प्रकारवाला है (कर्मचेतना, कर्मफलचेतना, ज्ञानचेतना से युक्त) (तथा) (उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य से युक्त) होता है। (4) (वह) (संसारी आत्मा) चार गतियों (मनुष्य, देव, नरक, तिर्यंच) में परिभ्रमण करनेवाला और (5) (वह) (कर्मसापेक्ष और कर्मनिरपेक्ष भाव सहित होता है अर्थात् सर्वोपरि पाँच मुख्य (औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक और पारिणामिक) भाववाला कहा गया (है)।

---

1. संपादक द्वारा अनूदित

72. छक्कापक्कमजुत्तो उवउत्तो सत्तभंगसब्भावो।
अट्ठासओ णवट्ठो जीवो दसठाणगो भणिदो।।

छक्कापक्कमजुत्तो	[(छक्क-अपक्कम) वि-(जुत्त) भूकृ 1/1 अनि]	क्रमरहित (वक्र) छह प्रकार की दिशाओं से युक्त
उवउत्तो	(उवउत्त) भूकृ 1/1 अनि	तर्कोचित
सत्तभंगसब्भावो	(सत्त-भंग-सब्भाव) 1/1 वि	सात प्रकार के कथन स्वभाववाला
अट्ठासओ	(अट्ठ-आसअ) 1/1 वि	आठ कर्म/गुण का आधार
णवट्ठो	(णव-अट्ठ) 1/1 वि	नौ प्रकार से कर्म विवेचनवाला
जीवो	(जीव) 1/1	जीव
दसठाणगो	(दस-ठाणग) 1/1 वि	दस भेदवाला
भणिदो	(भण) भूकृ 1/1	कहा गया

अन्वय– जीवो छक्कापक्कमजुत्तो उवउत्तो सत्तभंगसब्भावो अट्ठासओ णवट्ठो दसठाणगो भणिदो।

अर्थ– जीव क्रमरहित छह प्रकार की दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊपर व नीचे) से युक्त, तर्कोचित सात प्रकार (अस्ति, नास्ति, अस्ति-नास्ति, अवक्तव्य, अस्ति-अवक्तव्य, नास्ति-अवक्तव्य और अस्ति-नास्ति-अवक्तव्य) के कथन स्वभाववाला, आठ कर्म (ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र तथा अन्तराय) या आठ गुण (अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख, अनंत वीर्य, सूक्ष्मत्व गुण, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व तथा अव्याबाधत्व) का आधार, नौ प्रकार (जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य और पाप) से कर्म विवेचनवाला, दस (पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय व असंज्ञी पंचेन्द्रिय) भेदवाला कहा गया है।

73. **पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधेहिं सव्वदो मुक्को।**
उड्ढं गच्छदि सेसा विदिसावज्जं गदिं जंति।।

पयडिट्ठिदिअणुभाग-	[(पयडि)-(ट्ठिदि)-(अणुभाग)	प्रकृति, स्थिति,
प्पदेसबंधेहिं	(प्पदेसबंध) 3/2]	अनुभाग तथा प्रदेश बंध से
सव्वदो	अव्यय	सर्वथा/पूर्णरूप से
मुक्को	(मुक्क) भूक 1/1 अनि	मुक्त
उड्ढं	(उड्ढ) 2/1	ऊर्ध्व/सिद्ध (गति) को
गच्छदि	(गच्छ) व 3/1 सक	गमन करता है
सेसा	(सेस) 1/2	शेष
विदिसावज्जं	(विदिसा)[1] 2/2	विदिशाओं के
	वज्जं (अ) = सिवाय	सिवाय/बिना
गदिं	(गदि) 2/1	गति
जंति	(जा) व 3/1 सक	करते हैं

अन्वय– पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधेहिं सव्वदो मुक्को उड्ढं गच्छदि सेसा विदिसावज्जं गदिं जंति।

अर्थ– प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश बंध से सर्वथा/पूर्णरूप से मुक्त (जीव) ऊर्ध्व/सिद्ध (गति) को गमन करता है। (मुक्त जीवों को छोड़कर) शेष (जीव) विदिशाओं के सिवाय/बिना (अन्य छह दिशाओं में) गति करते हैं।

---

1. 'बिना' के योग में द्वितीया, तृतीया तथा पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

74. खंधा य खंधदेसा खंधपदेसा य होंति परमाणू।
इदि ते चदुव्वियप्पा पुग्गलकाया मुणेयव्वा।।

खंधा	(खंध) 1/2	स्कंध
य	अव्यय	पादपूरक
खंधदेसा	(खंधदेस) 1/2	स्कंधदेश
खंधपदेसा	(खंधपदेस) 1/2	स्कंधप्रदेश
य	अव्यय	और
होंति	(हो) व 3/2 अक	होते हैं
परमाणू	(परमाणु) 1/2	परमाणु
इदि	अव्यय	इस प्रकार
ते	(त) 1/2 सवि	वे
चदुव्वियप्पा	[(चदु) वि-(व्वियप्प) 1/2]	चार प्रकार के
पुग्गलकाया	(पुग्गलकाय) 1/2	पुद्गलास्तिकाय
मुणेयव्वा	(मुण) विधिकृ 1/2	समझे जाने चाहिए

अन्वय- खंधा य खंधदेसा खंधपदेसा य परमाणू होंति इदि ते चदुव्वियप्पा पुग्गलकाया मुणेयव्वा।

अर्थ- स्कंध, स्कंधदेश, स्कंधप्रदेश और परमाणु (पुद्गलद्रव्य के भेद) हैं। इस प्रकार वे चार प्रकार के पुद्गलास्तिकाय समझे जाने चाहिए।

75. खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसो त्ति।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणू चेव अविभागी।।

खंधं	(खंध) 1/1	स्कंध
सयलसमत्थं	[(सयल)-(समत्थ) भूकृ 1/1 अनि]	पूरे मिले हुए/संयुक्त
तस्स	(त) 6/1 सवि	उसका
दु	अव्यय	और
अद्धं	(अद्ध) 1/1 वि	आधा
भणंति	(भण) व 3/2 सक	कहते हैं
देसो त्ति	[(देसो)+(इति)]	
	देसो (देस) 1/1	देश
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
अद्धद्धं	(अद्धद्ध) 1/1 वि	आधे का आधा/ चौथाई
च	अव्यय	फिर
पदेसो	(पदेस) 1/1	प्रदेश
परमाणू	(परमाणु) 1/1	परमाणु
चेव	अव्यय	पादपूरक
अविभागी	(अविभागी) 1/1 वि अनि	विभाजन-रहित

अन्वय- सयलसमत्थं खंधं तस्स दु अद्धं देसो त्ति अद्धद्धं च पदेसो चेव अविभागी परमाणू भणंति।

अर्थ- पूरे मिले हुए/संयुक्त (परमाणु) स्कंध (है), उस (स्कंध) का आधा (स्कंध) देश (है) फिर (उस स्कंध के) आधे का आधा/चौथाई (स्कंध) प्रदेश (है) और विभाजन-रहित परमाणु (है)। (जिनेन्द्र देव) इस प्रकार कहते हैं।

76. बादरसुहुमगदाणं खंधाणं पुग्गलो त्ति ववहारो।
ते होंति छप्पयारा तेलोक्कं जेहिं णिप्पण्णं।।

बादरसुहुमगदाणं	[(बादर) वि-(सुहुम)-वि (गद) भूक 4/2 अनि]	बादर और सूक्ष्म में विभाजित
खंधाणं	(खंध) 4/2	स्कंधों के लिए
पुग्गलो त्ति	[(पुग्गलो)+(इति)]	
	पुग्गलो (पुग्गल) 1/1	पुद्गल
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार
ववहारो	(ववहार) 1/1	व्यवहार
ते	(त) 1/2 सवि	वे
होंति	(हो) व 3/2 अक	होते हैं
छप्पयारा	[(छ) वि-(प्पयार) 1/2]	छ प्रकार
तेलोक्कं	(तेलोक्क) 1/1	तीन लोक
जेहिं	(ज) 3/2 सवि	जिनसे
णिप्पण्णं	(णिप्पण्ण) भूक 1/1 अनि	संपन्न

अन्वय– बादरसुहुमगदाणं खंधाणं पुग्गलो त्ति ववहारो ते छप्पयारा होंति जेहिं तेलोक्कं णिप्पण्णं।

अर्थ– बादर (स्थूल) और सूक्ष्म में विभाजित स्कंधों के लिए पुद्गल (शब्द का) व्यवहार (है)। इस प्रकार वे (पुद्गल) छ प्रकार के (बादरबादर, बादर, बादरसूक्ष्म, सूक्ष्मबादर, सूक्ष्म और सूक्ष्मसूक्ष्म) होते हैं, जिनसे तीन लोक संपन्न (है)।

77. सव्वेसिं खंधाणं जो अंतो तं वियाण परमाणू।
सो सस्सदो असद्दो एक्को अविभागि मुत्तिभवो।।

सव्वेसिं[1]	(सव्व) 6/2→7/2 सवि	समस्त
खंधाणं[1]	(खंध) 6/2→7/2	स्कंधों में
जो	(ज) 1/1 सवि	जो
अंतो	(अंत) 1/1 वि	अंतिम
तं	(त) 2/1 सवि	उसको
वियाण	(वियाण) विधि 2/1 सक	जानो
परमाणू	(परमाणु) 1/1	परमाणु
सो	(त) 1/1 सवि	वह
सस्सदो	(सस्सद) 1/1 वि	शाश्वत
असद्दो	(अ-सद्द) 1/1 वि	शब्द-रहित
एक्को	(एक्क) 1/1 वि	एक
अविभागि[2]	(अविभागी) 1/1 वि अनि	विभाजन-रहित
मुत्तिभवो	[(मुत्ति)-(भव) 1/1 वि]	मूर्त भाव में रहनेवाला/होनेवाला

अन्वय– सव्वेसिं खंधाणं जो अंतो परमाणू तं वियाण सो सस्सदो असद्दो एक्को अविभागि मुत्तिभवो।

अर्थ– समस्त स्कंधों में जो अंतिम (भेद) (है) (वह) परमाणु (है) उसको जानो। वह (परमाणु) शाश्वत (है), शब्द-रहित (है), एक (प्रदेशी) (है), विभाजन-रहित (है) (और) मूर्त भाव (रूप, रस, गंध, स्पर्श गुण) में रहनेवाला/होनेवाला (है)।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)
2. यहाँ छन्द की मात्रा की पूर्ति हेतु 'अविभागी' का 'अविभागि' किया गया है।

78. आदेसमेत्तमुत्तो धादुचदुक्कस्स कारणं जो दु।
सो णेओ परमाणू परिणामगुणो सयमसद्दो।।

आदेसमेत्तमुत्तो	[(आदेस)-(मेत्त)-(मुत्त) 1/1 वि]	उपदेश मात्र से मूर्तिक
धादुचदुक्कस्स	[(धादु)-(चदुक्क) 6/1 वि]	चार धातुओं का
कारणं	(कारण) 1/1	कारण
जो	(ज) 1/1 सवि	जिन
दु	अव्यय	किन्तु
सो	(त) 1/1 सवि	वह
णेओ	(णेअ) विधिकृ 1/1 अनि	जानने-योग्य
परमाणू	(परमाणु) 1/1	परमाणु
परिणामगुणो	(परिणामगुण) 1/1 वि	परिणमन स्वभाववाला
सयमसद्दो	[(सयं)+(असद्द)]	
	सयं (अ) = स्वयं	स्वयं
	असद्दो (असद्द) 1/1 वि	शब्द-रहित

अन्वय– परमाणू जो आदेसमेत्तमुत्तो दु धादुचदुक्कस्स कारणं परिणामगुणो सयमसद्दो सो णेओ।

अर्थ– परमाणु जिन उपदेश मात्र से मूर्तिक (रूप, रस, स्पर्श, गंधवाला) (कहा गया है) किन्तु (जो) चार धातुओं (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु) का कारण (है), (जो) परिणमन स्वभाववाला (है), स्वयं शब्द-रहित (है) (किन्तु शब्द का कारण) (है) वह जानने-योग्य (है)।

79. सद्दो खंधप्पभवो खंधो परमाणुसंगसंघादो।
पुट्ठेसु तेसु जायदि सद्दो उप्पादगो णियदो।।

सद्दो	(सद्द) 1/1	शब्द
खंधप्पभवो[1]	[(खंध)-(प्पभवो) 1/1]	स्कंध से उत्पन्न होनेवाला/उत्पादित
खंधो	(खंध) 1/1	स्कंध
परमाणुसंगसंघादो	[(परमाणु)-(संग)-(संघाद) 1/1]	परमाणुओं के मेल का समूह
पुट्ठेसु	(पुट्ठ) भूक 7/2 अनि	छुआ हुआ होने पर
तेसु[2]	(त) 7/2→5/2 सवि	उनसे
जायदि	(जाय) व 3/1 अक	उत्पन्न होता है
सद्दो	(सद्द) 1/1	शब्द
उप्पादगो	(उप्पादग) 1/1 वि	फलोत्पादक
णियदो	(णियद) भूक 1/1 अनि	निश्चित

अन्वय– सद्दो खंधप्पभवो परमाणुसंगसंघादो खंधो तेसु पुट्ठेसु णियदो उप्पादगो सद्दो जायदि।

अर्थ– शब्द स्कंध से उत्पन्न होनेवाला/उत्पादित (है)। परमाणुओं के मेल का समूह स्कंध (है)। उन (स्कंधों) से (आपस में) छुआ हुआ होने पर निश्चित (विभिन्न प्रकार का) फलोत्पादक शब्द उत्पन्न होता है।

---

1. प्रायः समास के अन्त में 'उत्पन्न होनेवाला' अर्थ को प्रकट करता है।
2. कभी-कभी पंचमी विभक्ति के स्थान पर सप्तमी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

80. णिच्चो णाणवकासो ण सावकासो पदेसदो भेत्ता।
खंधाणं पि य कत्ता पविहत्ता कालसंखाणं।।

णिच्चो	(णिच्च) 1/1	नित्य
णाणवकासो	[(ण)+(अणवकासो)]	
	ण (अ) = नहीं	नहीं
	अणवकासो (अणवकास) 1/1 वि	स्थान-रहित
ण	अव्यय	नहीं
सावकासो	(स-अवकास) 1/1 वि	स्थान-सहित
पदेसदो	(पदेस) 5/1 पंचमी अर्थक 'दो' प्रत्यय	प्रदेश के कारण
भेत्ता	(भेत्तु) 1/1 वि	भेद करनेवाला
खंधाणं	(खंध) 6/2	स्कंधों का
पि	अव्यय	भी
य	अव्यय	और
कत्ता	(कत्तु) 1/1 वि	निर्माता
पविहत्ता	(पविहत्त) 1/2 भूकृ अनि	भिन्न किया
कालसंखाणं[1]	[(काल)-(संखा) 6/2→2/2]	काल की गणनाओं को

अन्वय– णिच्चो णाणवकासो पदेसदो सावकासो ण खंधाणं भेत्ता पि य कत्ता कालसंखाणं पविहत्ता।

अर्थ– (परमाणु) नित्य (है), (गुणों के लिए) स्थान-रहित नहीं (है), एक प्रदेशी होने के कारण (अन्य प्रदेशों के लिए) स्थान-सहित भी नहीं (है), (एक प्रदेशी के कारण ही) स्कंधों का भेद करनेवाला भी (है), (स्कंधों का) निर्माता (है) और (परमाणुओं ने) काल की गणनाओं को भिन्न किया (है)।

---

1. कभी-कभी द्वितीया विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)

81. एयरसवण्णगंधं दोफासं सद्दकारणमसद्दं।
खंधंतरिदं दव्वं परमाणुं तं वियाणेहि।।

एयरसवण्णगंधं	[(एय) वि-(रस)-(वण्ण) (गंध) 1/1]	एक रस, वर्ण, गंध
दोफासं	[(दो) वि-(फास) 1/1]	दो स्पर्श
सद्दकारणमसद्दं	[(सद्दकारणं)+(असद्दं)]	
	[(सद्द)-(कारण) 1/1]	शब्द का कारण
	असद्दं (असद्द) 1/1 वि	शब्द-रहित
खंधंतरिदं	[(खंध)-(अंतरिद) भूकृ 1/1 अनि]	स्कंधों से भेद किया हुआ
दव्वं	(दव्व) 2/1	द्रव्य को
परमाणुं	(परमाणु) 2/1	परमाणु
तं	(त) 2/1 सवि	उस
वियाणेहि	(वियाण) विधि 2/1 सक	जानो

अन्वय– तं दव्वं परमाणुं वियाणेहि एयरसवण्णगंधं दोफासं खंधंतरिदं सद्दकारणमसद्दं।

अर्थ– उस द्रव्य को परमाणु जानो (जिस) (द्रव्य में) (पाँच रस में से) एक रस, (पाँच वर्ण में से) (एक) वर्ण, (दो गंध में से) (एक) गंध, (चार[1] स्पर्श में से) दो (अविरोधी) स्पर्श (होते हैं)। (यह परमाणु) (स्वभाव में) स्कंधों से भेद किया हुआ (है)। (स्कन्ध अवस्था में रूपान्तरित होने पर) शब्द का कारण (बन जाता है)। (स्कंधों से पृथक होने पर) (स्वयं) शब्द-रहित (रहता है)।

---

1. परमाणु अवस्था में स्पर्श के आठ गुणों में से चार गुणः शीत, उष्ण, रूक्ष, स्निग्ध ही पाये जाते हैं। मृदु, कठोर, हल्का, भारी गुण स्कन्ध अवस्था में होते हैं।

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

82. उवभोज्जमिंदिएहि य इंदियकाया मणो य कम्माणि।
जं हवदि मुत्तमण्णं तं सव्वं पुग्गलं जाणे।।

उवभोज्जमिंदिएहि	[(उवभोज्जं)+(इंदिएहि)]	
	उवभोज्जं (उवभोज्जं) विधिकृ 1/1 अनि	भोगे जाने योग्य
	इंदिएहि (इंदिअ) 3/2	इन्द्रियों के द्वारा
य	अव्यय	और
इंदियकाया	[(इंदिय)-(काय) 1/2]	इन्द्रियाँ, शरीर
मणो	(मणो) 1/1	मन
य	अव्यय	तथा
कम्माणि	(कम्म) 1/2	कर्म
जं	(ज) 1/1 सवि	जो
हवदि	(हव) व 3/1 अक	है
मुत्तमण्णं	[(मुत्तं)+(अण्णं)]	
	मुत्तं (मुत्त) 1/1 वि	मूर्त
	अण्णं (अण्ण) 1/1 वि	अन्य
तं	(त) 1/1 सवि	वह
सव्वं	(सव्व) 1/1 सवि	सब
पुग्गलं	(पुग्गल) 1/1	पुद्गल
जाणे[1]	(जाण) विधि 2/1 सक	जानो

अन्वय– इंदिएहि उवभोज्जं य इंदियकाया मणो य कम्माणि जं मुत्तमण्णं हवदि तं सव्वं पुग्गलं जाणे।

अर्थ– इन्द्रियों के द्वारा भोगे जाने योग्य (पदार्थ), इन्द्रियाँ (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण), शरीर (औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस और कार्माण) (द्रव्य) मन और (द्रव्य) कर्म तथा जो अन्य मूर्त (पदार्थ-परमाणु व स्कंध) है, वह सब पुद्गल (है) (तुम) जानो।

---

1. प्राकृत भाषाओंका व्याकरण, पिशल, पृ.सं. 679।

नोट- संपादक द्वारा अनूदित

83. धम्मत्थिकायमरसं अवण्णगंधं असद्दमप्फासं।
लोगोगाढं पुट्ठं पिहुलमसंखादियपदेसं।।

धम्मत्थिकायमरसं	[(धम्मत्थिकायं)+(अरसं)]	
	धम्मत्थिकायं (धम्मत्थिकाय) 2/1	धर्मास्तिकाय को
	अरसं (अ-रस) 2/1 वि	रस-रहित
अवण्णगंधं	[(अ-वण्ण)-(अ-गंध) 2/1 वि]	वर्ण-रहित और गंध-रहित
असद्दमप्फासं	[(असद्दं)+(अप्फासं)]	
	असद्दं (अ-सद्द) 2/1 वि	शब्द-रहित
	अप्फासं (अ-प्फास) 2/1 वि	स्पर्श-रहित
लोगोगाढं	[(लोग)+(ओगाढं)]	
	[(लोग)-(ओगाढ) भूक 2/1 अनि]	लोक में व्याप्त
पुट्ठं	(पुट्ठ) भूक 2/1 अनि	पहुँचा हुआ
पिहुलमसंखादियपदेसं	[(पिहुलं)+(असंखादियपदेसं)]	
	पिहुलं (पिहुल) 2/1 वि	फैला हुआ
	असंखादियपदेसं(असंखादियपदेस) 2/1 वि	असंख्यात प्रदेशवाला

अन्वय- धम्मत्थिकायमरसं अवण्णगंधं असद्दमप्फासं लोगोगाढं पुट्ठं पिहुलमसंखादियपदेसं।

अर्थ- (उस) धर्मास्तिकाय को (जो) रस-रहित, वर्ण-रहित, गंध-रहित, शब्द-रहित, स्पर्श-रहित, लोक में व्याप्त, (सब ओर) पहुँचा हुआ, (तथा) फैला हुआ असंख्यात प्रदेशवाला (है) (उसको) (तुम जानो)।

नोट- संपादक द्वारा अनूदित

84. अगुरुगलघुगेहिं सया तेहिं अणंतेहिं परिणदं णिच्चं।
गदिकिरियाजुत्ताणं कारणभूदं सयमकज्जं।।

अगुरुगलघुगेहिं	(अगुरुगलघुग) 3/2 वि	अगुरुलघुगुणों से युक्त
सया	अव्यय	सदैव
तेहिं	(त) 3/2 सवि	उन
अणंतेहिं	(अणंत) 3/2 वि	अनन्त
परिणदं	(परिणद) भूकृ 1/1 अनि	रूपान्तरित/परिवर्तित
णिच्चं	(णिच्च) 1/1 वि	शाश्वत
गदिकिरियाजुत्ताणं	[(गदि)-(किरिया)-(जुत्त) भूकृ 4/2 अनि]	गमन क्रिया से युक्त (जीव और पुद्गलों) के लिए
कारणभूदं	[(कारण)-(भूद) भूकृ 1/1 अनि]	कारण हुआ
सयमकज्जं	[(सयं)+(अकज्जं)]	
	सयं (अ) = स्वयं	स्वयं
	अकज्जं (अकज्ज) 1/1 वि	किसी कारण का परिणाम नहीं (किसी से उत्पन्न नहीं)

अन्वय- तेहिं अणंतेहिं अगुरुगलघुगेहिं सया परिणदं णिच्चं गदिकिरियाजुत्ताणं कारणभूदं सयमकज्जं।

अर्थ- (धर्म द्रव्य) उन अनन्त अगुरुलघुगुणों से युक्त सदैव रूपान्तरित/परिवर्तित (होता है), (वह) शाश्वत (है), गमन क्रिया से युक्त (जीव और पुद्गलों) के लिए कारण हुआ (है) (किन्तु) स्वयं किसी कारण का परिणाम नहीं (है) अर्थात् किसी से उत्पन्न नहीं है।

85. उदयं जह मच्छाणं गमणाणुग्गहकरं हवदि लोए।
तह जीवपुग्गलाणं धम्मं दव्वं वियाणेहि।।

उदयं	(उदय) 1/1	जल
जह	अव्यय	जैसे
मच्छाणं	(मच्छ) 4/2	मछलियों के लिए
गमणाणुग्गहकरं	[(गमण)+(अणुग्गहकरं)] [(गमण)-(अणुग्गहकर) 1/1 वि]	गमन में उपकारी
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
लोए	(लोअ) 7/1	लोक में
तह	अव्यय	वैसे ही
जीवपुग्गलाणं	[(जीव)-(पुग्गल) 4/2]	जीव और पुद्गलों के लिए
धम्मं	(धम्म) 2/1	धर्म
दव्वं	(दव्व) 2/1	द्रव्य को
वियाणेहि	(वियाण) विधि 2/1 सक	जानो

अन्वय- लोए जह मच्छाणं उदयं गमणाणुग्गहकरं हवदि तह जीवपुग्गलाणं धम्मं दव्वं वियाणेहि।

अर्थ- लोक में जैसे मछलियों के लिए जल गमन में उपकारी होता है वैसे ही जीव और पुद्गलों के लिए धर्म द्रव्य को जानो।

86. जह हवदि धम्मदव्वं तह तं जाणेह दव्वमधमक्खं।
ठिदिकिरियाजुत्ताणं कारणभूदं तु पुढवीव।।

जह	अव्यय	जैसे
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
धम्मदव्वं	[(धम्म)-(दव्व) 1/1]	धर्म द्रव्य
तह	अव्यय	वैसे ही
तं	(त) 2/1 सवि	उस
जाणेह	(जाण) विधि 2/1 सक	जानो
दव्वमधमक्खं	[(दव्वं)+(अधमक्खं)]	
	दव्वं (दव्व) 2/1	द्रव्य को
	अधमक्खं (अधमक्खा) [1] 2/1 वि	अधर्म-नामवाले/ नामक
ठिदिकिरियाजुत्ताणं	[(ठिदि)-(किरिया)-(जुत्त) भूकृ 4/2 अनि]	ठहरने की क्रिया-युक्त (जीव और पुद्गलों) के लिए
कारणभूदं	[(कारण)-(भूद) भूकृ 1/1 अनि]	कारण हुआ
तु	अव्यय	पादपूरक
पुढवीव	[(पुढवी)+(इव)]	
	पुढवी* (पुढवी) 6/1	पृथ्वी के
	इव (अ) = समान	समान

अन्वय– जह धम्मदव्वं हवदि तह तं दव्वमधमक्खं जाणेह ठिदिकिरियाजुत्ताणं तु पुढवीव कारणभूदं।

अर्थ– जैसे धर्म द्रव्य होता है वैसे ही उस अधर्म नामवाले/नामक द्रव्य को जानो। ठहरने की क्रिया-युक्त (जीव और पुद्गलों) के लिए पृथ्वी के समान कारण हुआ (है)।

---

1. समास के अन्त में अर्थ होता है नामवाला या नामक।

* प्राकृत में किसी भी कारक के लिए मूल संज्ञा शब्द काम में लाया जा सकता है। (पिशलः प्राकृत भाषाओंका व्याकरण, पृष्ठ 517)

87. जादो अलोगलोगो जेसिं सब्भावदो य गमणठिदी।
दो वि य मया विभत्ता अविभत्ता लोयमेत्ता य।।

जादो	(जा) भूकृ 1/1	उत्पन्न हुआ
अलोगलोगो	[(अलोग)-(लोग) 1/1]	अलोक और लोक
जेसिं	(ज) 6/2 सवि	जिनके
सब्भावदो	(सब्भाव) 5/1	अस्तित्व से
	पंचमीअर्थक 'दो' प्रत्यय	
य	अव्यय	तथा
गमणठिदी	[(गमण)-(ठिदि) 1/2]	गमन और स्थिति
दो वि	अव्यय	दोनों ही
य	अव्यय	और
मया	(मय) भूकृ 1/2 अनि	माने गये
विभत्ता	(विभत्त) भूकृ 1/2 अनि	भिन्न
अविभत्ता	(अविभत्त) भूकृ 1/2 अनि	अभिन्न
लोयमेत्ता	(लोयमेत्त) 1/2 वि	लोकमात्र
य	अव्यय	और

अन्वय– जेसिं सब्भावदो अलोगलोगो जादो य गमणठिदी दो वि विभत्ता य अविभत्ता मया य लोयमेत्ता।

अर्थ– जिन (धर्म और अधर्म द्रव्य) के अस्तित्व से लोक और अलोक उत्पन्न हुआ (है) तथा (जिनसे) गमन और स्थिति (होती है) (वे) दोनों ही (स्वभाव अपेक्षा) भिन्न और (प्रदेश अपेक्षा) अभिन्न माने गये (हैं) और लोकमात्र (असंख्यात प्रदेशी) (है)।

88. ण य गच्छदि धम्मत्थी गमणं ण करेदि अण्णदवियस्स।
हवदि गदिस्स य पसरो जीवाणं पुग्गलाणं च।।

ण	अव्यय	न
य	अव्यय	और
गच्छदि	(गच्छ) व 3/1 सक	गति करता है
धम्मत्थी	(धम्मत्थि) 1/1 वि	धर्मास्तिकाय
गमणं	(गमण) 2/1	गमन
ण	अव्यय	न
करेदि	(कर) व 3/1 सक	करता है
अण्णदवियस्स[1]	[(अण्ण) वि-(दवियस्स) 6/1→7/1]	अन्य द्रव्यों में
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
गदिस्स[1]	(गदि) 6/1→7/1	गति में
य	अव्यय	पादपूरक
पसरो	(पसर) 1/1	फैलाव
जीवाणं	(जीव) 6/2	जीवों की
पुग्गलाणं	(पुग्गल) 6/2	पुद्गलों की
च	अव्यय	और

अन्वय- धम्मत्थी ण गच्छदि य ण अण्णदवियस्स गमणं करेदि जीवाणं च पुग्गलाणं गदिस्स पसरो हवदि य।

अर्थ- धर्मास्तिकाय न (तो) (स्वयं) गति करता है और न अन्य द्रव्यों में गमन (उत्पन्न) करता है। (इससे) जीवों और पुद्गलों की गति में फैलाव होता है।

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-134)

89. विज्जदि जेसिं गमणं ठाणं पुण तेसिमेव संभवदि।
ते सगपरिणामेहिं दु गमणं ठाणं च कुव्वंति।।

विज्जदि	(विज्ज) व 3/1 अक	होता है
जेसिं	(ज) 6/2 सवि	जिनका
गमणं	(गमण) 1/1	गमन
ठाणं	(ठाण) 1/1	ठहरना
पुण	अव्यय	फिर
तेसिमेव	[(तेसिं)+(एव)]	
	तेसिं (त) 6/2 सवि	उनका
	एव (अ) = ही	ही
संभवदि	(संभव) व 3/1 अक	घटित होता है
ते	(त) 1/2 सवि	वे
सगपरिणामेहिं	[(सग) वि-(परिणाम) 3/2]	स्व परिणमन से
दु	अव्यय	किन्तु
गमणं	(गमण) 2/1	गमन
ठाणं	(ठाण) 2/1	ठहरना
च	अव्यय	और
कुव्वंति	(कुव्व) व 3/2 सक	करते हैं

अन्वय– जेसिं गमणं विज्जदि पुण तेसिमेव ठाणं संभवदि दु ते सगपरिणामेहिं गमणं च ठाणं कुव्वंति।

अर्थ– जिन (जीव और पुद्गलों) का गमन होता है फिर उन (जीव और पुद्गलों) का ही ठहरना घटित होता है, किन्तु वे स्व परिणमन से ही गमन और ठहरना करते हैं।

90. सव्वेसिं जीवाणं सेसाणं तह य पुग्गलाणं च।
जं देदि विवरमखिलं तं लोए हवदि आयासं।।

सव्वेसिं	(सव्व) 4/2 सवि	समस्त
जीवाणं	(जीव) 4/2	जीवों के लिए
सेसाणं	(सेस) 4/2	शेष (द्रव्यों) के लिए
तह	अव्यय	वैसे ही
य	अव्यय	और
पुग्गलाणं	(पुग्गल) 4/2	पुद्गलों के लिए
च	अव्यय	पादपूरक
जं	(ज) 1/1 सवि	जो
देदि	(दे) व 3/1 सक	देता है
विवरमखिलं	[(विवरं)+(अखिलं]	
	विवरं (विवर) 2/1	स्थान
	अखिलं (अखिल) 2/1 वि	पूरा
तं	(त) 1/1 सवि	वह
लोए	(लोअ) 7/1	लोक में
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
आयासं	(आयास) 1/1	आकाश

अन्वय– सव्वेसिं जीवाणं तह सेसाणं य पुग्गलाणं च जं विवरमखिलं देदि तं लोए आयासं हवदि।

अर्थ– (जैसे) सब जीवों के लिए वैसे ही शेष (धर्म, अधर्म और काल द्रव्यों) के लिए और पुद्गलों के लिए जो पूरा स्थान देता है, वह लोक में आकाश होता है।

91. जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा य लोगदोणण्णा।
तत्तो अणण्णमण्णं आयासं अंतवदिरित्तं।।

जीवा	(जीव) 1/2	जीव
पुग्गलकाया	[(पुग्गल)-(काय) 1/2]	पुद्गल-समूह
धम्माधम्मा	[(धम्म)-(अधम्म) 1/2]	धर्म, अधर्म द्रव्य
य	अव्यय	और
लोगदोणण्णा	[(लोगदो)+(अणण्णा)]	
	लोगदो (लोग) 5/1	लोक से
	पंचमीअर्थक 'दो' प्रत्यय	
	अणण्णा (अणण्ण) 1/2 वि	अभिन्न/अपृथक
तत्तो	(त) 5/1 सवि	उससे
अणण्णमण्णं	[(अण)+(अण्णं)+(अण्णं)]	
	अण (अ) = नहीं	नहीं
	अण्णं (अण्ण) 1/1 वि	अन्य
	अण्णं (अण्ण) 1/1 वि	अन्य
आयासं	(आयास) 1/1	आकाश
अंतवदिरित्तं	[(अंत)-(वदिरित्त) 1/1 वि]	अंत से वियुक्त (रहित)

अन्वय- जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा य लोगदोणण्णा आयासं तत्तो अणण्णमण्णं अंतवदिरित्तं।

अर्थ- जीव, पुद्गलसमूह, धर्म और अधर्म द्रव्य लोक से अभिन्न/अपृथक (है)। (लोकवाला) आकाश (भी) उस (लोक) से अन्य नहीं (है), (किन्तु) (लोक से) अन्य (आकाश) (अलोकाकाश) अंत से वियुक्त (रहित) (है)।

92. आगासं अवगासं गमणट्ठिदिकारणेहिं देदि जदि।
उड्ढंगदिप्पधाणा सिद्धा चिट्ठंति किध तत्थ।।

आगासं	(आगास) 1/1	आकाश द्रव्य
अवगासं	(अवगास) 2/1	ठौर
गमणट्ठिदिकारणेहिं[1]	[(गमण)-(ट्ठिदि)-(कारण) 3/2→7/2]	गमन और स्थिति के आधार में
देदि	(दे) व 3/1 सक	प्रदान करता है
जदि	अव्यय	यदि
उड्ढंगदिप्पधाणा	[(उड्ढं) अ (गदि)-(प्पधाण) 1/2 वि]	ऊपर की ओर गमन करने में प्रमुख
सिद्धा	(सिद्ध) 1/2	सिद्ध/मुक्त
चिट्ठंति[2]	(चिट्ठ) व 3/2 अक	ठहरते हैं
किध	अव्यय	कैसे
तत्थ	अव्यय	वहाँ

अन्वय- जदि आगासं गमणट्ठिदिकारणेहिं अवगासं देदि उड्ढं-गदिप्पधाणा सिद्धा तत्थ किध चिट्ठंति।

अर्थ- यदि आकाश द्रव्य गमन और स्थिति के आधार में ठौर प्रदान करता है (तो) ऊपर की ओर गमन करने में प्रमुख सिद्ध/मुक्त (जीव) वहाँ (लोक के अग्रभाग में) कैसे ठहरेंगे?

---

1. कभी-कभी सप्तमी विभक्ति के स्थान पर तृतीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। (हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)
2. प्रश्नवाचक शब्दों के साथ वर्तमानकाल का प्रयोग प्रायः भविष्यत्काल के अर्थ में होता है।

93. जम्हा उवरिट्ठाणं सिद्धाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं।
तम्हा गमणट्ठाणं आयासे जाण णत्थि त्ति।।

जम्हा	अव्यय	चूँकि
उवरिट्ठाणं	[(उवरि) अ-(ट्ठाण) 1/1]	ऊपर, स्थान
सिद्धाणं	(सिद्ध) 6/2	सिद्धों का
जिणवरेहिं	(जिणवर) 3/2	जिनवरों के द्वारा
पण्णत्तं	(पण्णत्त) भूकृ 1/1 अनि	कहा गया
तम्हा	अव्यय	इसलिए
गमणट्ठाणं	[(गमण)-(ट्ठाण) 1/1]	गति और स्थिति
आयासे	(आयास) 7/1→3/1	आकाश के कारण
जाण	(जाण) विधि 2/1 सक	जानो
णत्थि त्ति	[(णत्थि)+(इति)]	
	णत्थि (अ) = नहीं है	नहीं है
	इति (अ) = इस प्रकार	इस प्रकार

अन्वय- जम्हा सिद्धाणं उवरिट्ठाणं तम्हा गमणट्ठाणं आयासे णत्थि त्ति जिणवरेहिं पण्णत्तं जाण।

अर्थ- चूँकि सिद्धों का (निवास) स्थान (लोक के) ऊपर (है) इसलिए गति और स्थिति आकाश (द्रव्य) के कारण नहीं है। इस प्रकार जिनवरों के द्वारा कहा गया (है) (तुम) जानो।

---

1. यहाँ सप्तमी विभक्ति का प्रयोग तृतीया अर्थ में हुआ है।
(हेम-प्राकृत-व्याकरणः 3-137)

94. जदि हवदि गमणहेदू आगासं ठाणकारणं तेसिं।
पसजदि अलोगहाणी लोगस्स य अंतपरिवुड्ढी।।

जदि	अव्यय	यदि
हवदि	(हव) व 3/1 अक	होता है
गमणहेदू	[(गमण)-(हेदु) 1/1]	गति का कारण
आगासं	(आगास) 1/1	आकाश द्रव्य
ठाणकारणं	[(ठाण)-(कारण) 1/1]	ठहरने का कारण
तेसिं	(त) 4/2 सवि	उनके लिए
पसजदि	(पसज) व 3/1 अक	होता है
अलोगहाणी	[(अलोग)-(हाणि) 1/1]	अलोकाकाश का अभाव
लोगस्स	(लोग) 6/1	लोक की
य	अव्यय	और
अंतपरिवुड्ढी	[(अंत)-(परिवुड्ढि) 1/1]	चरम सीमा की बढ़ोतरी

अन्वय- जदि आगासं तेसिं गमणहेदू ठाणकारणं हवदि लोगस्स अंतपरिवुड्ढी य अलोगहाणी पसजदि।

अर्थ- यदि आकाश द्रव्य उन (जीव और पुद्गलों) के लिए गति का कारण (या) ठहरने का कारण होता है (तो) लोक की (प्रतिपादित) चरम सीमा की बढ़ोतरी (माननी होगी) और (उस कारण से) अलोकाकाश का अभाव हो जायेगा।

95. तम्हा धम्माधम्मा गमणट्ठिदिकारणाणि णागासं।
इदि जिणवरेहिं भणिदं लोगसहावं सुणंताणं।।

तम्हा	अव्यय	इसलिए
धम्माधम्मा	[(धम्म)-(अधम्म) 1/2]	धर्म-अधर्म द्रव्य
गमणट्ठिदिकारणाणि	[(गमण)-(ट्ठिदि)-(कारण) 1/2]	गति और स्थिति में कारण
णागासं	[(ण)+(आगासं)]	
	ण (अ) = नहीं	नहीं
	आगासं (आगास) 1/1	आकाश द्रव्य
इदि	अव्यय	इस प्रकार
जिणवरेहिं	(जिणवर) 3/2	जिनवरों के द्वारा
भणिदं	(भण) भूकृ 1/1	कहा गया
लोगसहावं[1]	[(लोग)-(सहाव) 1/1]	लोक-स्वभाव
सुणंताणं	(सुण) वकृ 4/2	सुनते हुए (श्रद्धालुओं) के लिए

अन्वय– तम्हा धम्माधम्मा गमणट्ठिदिकारणाणि आगासं ण इदि जिणवरेहिं सुणंताणं लोगसहावं भणिदं।

अर्थ– इसलिए धर्म, अधर्म द्रव्य (क्रमशः) गति और स्थिति में कारण (है) (तथा) आकाश द्रव्य (गति और स्थिति में कारण) नहीं (है)। इस प्रकार जिनवरों के द्वारा सुनते हुए (श्रद्धालुओं) के लिए लोक-स्वभाव कहा गया (है)।

नोटः यहाँ 'सहाव' शब्द नपुंसकलिंग की तरह प्रयुक्त हुआ है।

96. धम्माधम्मागासा अपुधब्भूदा समाणपरिमाणा।
पुधगुवलद्धिविसेसा करेन्ति एगत्तमण्णत्तं।।

धम्माधम्मागासा	[(धम्म)-(अधम्म)-(आगास) 1/2]	धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्य
अपुधब्भूदा	[(अपुध)-(ब्भूद) भूकृ 1/2 अनि]	अभिन्न बने हुए
समाणपरिमाणा	[(समाण)-(परिमाण) 5/1]	समान परिमाण के कारण
पुधगुवलद्धिविसेसा	[(पुधग) वि-(उवलद्धि)-(विसेस) 1/2 वि]	पृथक गुण के कारण विशिष्ट
करेन्ति	(कर) व 3/2 सक	(उत्पन्न) करते हैं
एगत्तमण्णत्तं	[(एगत्तं)+(अण्णत्तं)]	
	एगत्तं (एगत्त) 2/1	एकरूपता को
	अण्णत्तं (अण्णत्त) 2/1	पृथकता को

अन्वय– धम्माधम्मागासा समाणपरिमाणा अपुधब्भूदा पुधगुवलद्धि-विसेसा एगत्तं अण्णत्तं करेन्ति।

अर्थ– धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्य समान परिमाण के कारण अभिन्न बने हुए (हैं) (तथा) पृथक गुण के कारण विशिष्ट (हैं) (इसलिए) (वे) (परिमाण के कारण) एकरूपता को (और) (गुण के कारण) पृथकता को (उत्पन्न) करते हैं।

नोटः संपादक द्वारा अनूदित

मूल पाठ

1. इंदसदवंदियाणं तिहुअणहिदमधुरविसदवक्काणं।
अंतातीदगुणाणं णमो जिणाणं जिदभवाणं।।

2. समणमुहुग्गदमट्ठं चदुग्गदिणिवारणं सणिव्वाणं।
एसो पणमिय सिरसा समयमियं सुणह वोच्छामि।।

3. समवाओ पंचण्हं समओ त्ति जिणुत्तमेहिं पण्णत्तं।
सो चेव हवदि लोओ तत्तो अमिओ अलोओ खं।।

4. जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा तहेव आयासं।
अत्थित्तम्हि य णियदा अणण्णमइया अणुमहंता।।

5. जेसिं अत्थिसहाओ गुणेहि सह पज्जएहि विविहेहि।
ते होंति अत्थिकाया णिप्पण्णं जेहि तइलोक्कं।।

6. ते चेव अत्थिकाया तेक्कालियभावपरिणदा णिच्चा।
गच्छंति दवियभावं परियट्टणलिंगसंजुत्ता।।

7. अण्णोण्णं पविसंता देंता ओगासमण्णमण्णस्स।
मेलंता वि य णिच्चं सगं सभावं ण विजहंति।।

8. सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया।
भंगुप्पादधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवदि एक्का।।

9. दवियदि गच्छदि ताइं ताइं सब्भाव-पज्जयाइं जं।
दवियं तं भण्णंते अणण्णभूदं तु सत्तादो।।

10. दव्वं सल्लक्खणयं उप्पादव्वयधुवत्तसंजुत्तं।
गुणपज्जयासयं वा जं तं भण्णंति सव्वण्हू।।

11. उप्पत्तीव विणासो दव्वस्स य णत्थि अत्थि सब्भावो।
विगमुप्पाद-धुवत्तं करेंति तस्सेव पज्जाया।।

12. पज्जयविजुदं दव्वं दव्वविजुत्ता य पज्जया णत्थि।
दोण्हं अणण्णभूदं भावं समणा परूवेंति।।

13. दव्वेण विणा ण गुणा गुणेहिं दव्वं विणा ण संभवदि।
अव्वदिरित्तो भावो दव्वगुणाणं हवदि तम्हा।।

14. सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणो य तत्तिदयं।
दव्वं खु सत्तभंगं आदेसवसेण संभवदि।।

15. भावस्स णत्थि णासो णत्थि अभावस्स चेव उप्पादो।
गुणपज्जयेसु भावा उप्पादवए पकुव्वंति।।

16. भावा जीवादीया जीवगुणा चेदणा य उवओगो।
सुरणरणारयतिरिया जीवस्स य पज्जया बहुगा।।

17. मणुसत्तणेण णट्ठो देही देवो हवेदि इदरो वा।
उभयत्थ जीवभावो ण णस्सदि ण जायदे अण्णो।।

18. सो चेव जादि मरणं जादि ण णट्ठो ण चेव उप्पण्णो।
उप्पण्णो य विणट्ठो देवो मणुसो त्ति पज्जाओ।।

19. एवं सदो विणासो असदो जीवस्स णत्थि उप्पादो।
तावदिओ जीवाणं देवो मणुसो त्ति गदिणामो।।

20. णाणावरणादीया भावा जीवेण सुट्ठु अणुबद्धा।
तेसिमभावं किच्चा अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो।।

21. एवं भावमभावं भावाभावं अभावभावं च।
गुणपज्जयेहिं सहिदो संसरमाणो कुणदि जीवो।।

22. जीवा पुग्गलकाया आयासं अत्थिकाइया सेसा।
अमया अत्थित्तमया कारणभूदा हि लोगस्स।।

23. सब्भावसभावाणं जीवाणं तह य पोग्गलाणं च।
परियट्टणसंभूदो कालो णियमेण पण्णत्तो।।

24. ववगदपणवण्णरसो ववगददोगंधअट्ठफासो य।
अगुरुलहुगो अमुत्तो वट्टणलक्खो य कालो त्ति।।

25. समओ णिमिसो कट्ठा कला य णाली तदो दिवारत्ती।
मासोदुअयणसंवच्छरो त्ति कालो परायत्तो।।

26. णत्थि चिरं वा खिप्पं मत्तारहिदं तु सा वि खलु मत्ता।
पोग्गलदव्वेण विणा तम्हा कालो पडुच्चभवो।।

27. जीवो त्ति हवदि चेदा उवओगविसेसिदो पहू कत्ता।
भोत्ता य देहमत्तो ण हि मुत्तो कम्मसंजुत्तो।।

28. कम्ममलविप्पमुक्को उड्ढं लोगस्स अंतमधिगंता[1]।
सो सव्वणाणदरसी लहदि सुहमणिंदियमणंतं।।

29. जादो सयं स चेदा सव्वण्हू सव्वलोगदरसी य।
पप्पोदि सुहमणंतं अव्वाबाधं सगममुत्तं।।

30. पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीविस्सदि जो हु जीविदो पुव्वं।
सो जीवो पाणा पुण बलमिंदियमाउ उस्सासो।।

31. अगुरुलहुगा अणंता तेहिं अणंतेहिं परिणदा सव्वे।
देसेहिं असंखादा सियलोगं सव्वमावण्णा।।

32. केचित्तु अणावण्णा मिच्छादंसणकसायजोगजुदा।
विजुदा य तेहिं बहुगा सिद्धा संसारिणो जीवा।।

33. जह पउमरायरयणं खित्तं खीरे पभासयदि खीरं।
तह देही देहत्थो सदेहमेत्तं पभासयदि।।

34. सव्वत्थ अत्थि जीवो ण य एक्को एक्ककाए एक्कट्ठो।
अज्झवसाणविसिट्ठो चेट्ठदि मलिणो रजमलेहिं।।

35. जेसिं जीवसहावो णत्थि अभावो य सव्वहा तस्स।
ते होंति भिण्णदेहा सिद्धा वचिगोयरमदीदा।।

36. ण कुदोचि वि उप्पण्णो जम्हा कज्जं ण तेण सो सिद्धो।
उप्पादेदि ण किंचि वि कारणमवि तेण ण स होदि।।

37. सस्सदमध उच्छेदं भव्वमभव्वं च सुण्णमिदरं च।
विण्णाणमविण्णाणं ण वि जुज्जदि असदि सब्भावे।।

38. कम्माणं फलमेक्को एक्को कज्जं तु णाणमध एक्को।
चेदयदि जीवरासी चेदगभावेण तिविहेण।।

39. सव्वे खलु कम्मफलं थावरकाया तसा हि कज्जजुदं।
पाणित्तमदिक्कंता णाणं विंदंति ते जीवा।।

40. उवओगो खलु दुविहो णाणेण य दंसणेण संजुत्तो।
जीवस्स सव्वकालं अणण्णभूदं वियाणीहि।।

41. आभिणिसुदोधिमणकेवलाणि णाणाणि पंचभेयाणि।
कुमदिसुदविभंगाणि य तिण्णि वि णाणेहिं संजुत्ते।।

42. दंसणमवि चक्खुजुदं अचक्खुजुदमवि य ओहिणा सहियं।
अणिधणमणंतविसयं केवलियं चावि पण्णत्तं।।

43. ण वियप्पदि णाणादो णाणी णाणाणि होंति णेगाणि।
तम्हा दु विस्सरूवं भणियं दवियं ति णाणीहि।।

44. जदि हवदि दव्वमण्णं गुणदो य गुणा य दव्वदो अण्णे।
दव्वाणंतियमधवा दव्वाभावं पकुव्वंति।।

45. अविभत्तमणण्णत्तं दव्वगुणाणं विभत्तमण्णत्तं।
णेच्छंति णिच्चयण्हू तव्विवरीदं हि व तेसिं।।

46. ववदेसा संठाणा संखा विसया य होंति ते बहुगा।
ते तेसिमणण्णत्ते अण्णत्ते चावि विज्जंते।।

47. णाणं धणं च कुव्वदि धणिणं जह णाणिणं च दुविधेहिं।
भण्णंति तह पुधत्तं एयत्तं चावि तच्चण्हू।।

48. णाणी णाणं च सदा अत्थंतरिदा दु अण्णमण्णस्स।
दोण्हं अचेदणत्तं पसजदि सम्मं जिणावमदं।।

49. ण हि सो समवायादो अत्थंदरिदो दु णाणादो णाणी।
अण्णाणि त्ति य वयणं एगत्तपसाधगं होदि।।

50. समवत्ती समवाओ अपुधब्भूदो य अजुदसिद्धो य।
तम्हा दव्वगुणाणं अजुदा सिद्धि त्ति णिद्दिट्ठा।।

51. वण्णरसगंधफासा परमाणुपरूविदा विसेसेहि।
दव्वादो य अणण्णा अण्णत्तपगासगा होंति।।

52. दंसणणाणाणि जहा जीवणिबद्धाणि णण्णभूदाणि।
ववदेसदो पुधत्तं कुव्वंति हि णो सभावादो।।

53. जीवा अणाइणिहणा संता णंता य जीवभावादो।
सब्भावदो अणंता पंचग्गगुणप्पधाणा य।।

54. एवं सदो विणासो असदो जीवस्स होइ उप्पादो।
इदि जिणवरेहिं भणिदं अण्णोण्णविरुद्धमविरुद्धं।।

55. णेरइयतिरियमणुया देवा इदि णामसंजुदा पयडी।
कुव्वंति सदो णासं असदो भावस्स उप्पादं।।

56. उदयेण उवसमेण य खयेण दुहिं मिस्सिदेहिं परिणामे।
जुत्ता ते जीवगुणा बहुसु य अत्थेसु वित्थिण्णा।।

57. कम्मं वेदयमाणो जीवो भावं करेदि जारिसयं।
सो तेण तस्स कत्ता हवदि त्ति य सासणे पढिदं ।।

58. कम्मेण विणा उदयं जीवस्स ण विज्जदे उवसमं वा।
खइयं खओवसमियं तम्हा भावं तु कम्मकदं।।

59. भावो जदि कम्मकदो अत्ता कम्मस्स होदि किध कत्ता।
ण कुणदि अत्ता किंचि वि मुत्ता अण्णं सगं भावं।।

60. भावो कम्मणिमित्तो कम्मं पुण भावकारणं हवदि।
ण दु तेसिं खलु कत्ता ण विणा भूदा दु कत्तारं।।

61. कुव्वं सगं सहावं अत्ता कत्ता सगस्स भावस्स।
ण हि पोग्गलकम्माणं इदि जिणवयणं मुणेयव्वं।।

62. कम्मं पि सगं कुव्वदि सेण सहावेण सम्ममप्पाणं।
जीवो वि य तारिसओ कम्मसहावेण भावेण।।

63. कम्मं कम्मं कुव्वदि जदि सो अप्पा करेदि अप्पाणं।
किध तस्स फलं भुंजदि अप्पा कम्मं च देदि फलं।।

64. ओगाढगाढणिचिदो पोग्गलकायेहिं सव्वदो लोगो।
सुहमेहिं बादरेहिं य णंताणंतेहिं विविधेहिं।।

65. अत्ता कुणदि सभावं तत्थ गदा पोग्गला सभावेहिं।
गच्छंति कम्मभावं अण्णण्णोगाहमवगाढा।।

66. जह पुग्गलदव्वाणं बहुप्पयारेहिं खंधणिव्वत्ती।
अकदा परेहिं दिट्ठा तह कम्माणं वियाणीहि।।

67. जीवा पुग्गलकाया अण्णण्णोगाढगहणपडिबद्धा।
काले विजुज्जमाणा सुहदुक्खं देंति भुंजंति।।

68. तम्हा कम्मं कत्ता भावेण हि संजुदोध जीवस्स।
भोत्ता दु हवदि जीवो चेदगभावेण कम्मफलं।।

69. एवं कत्ता भोत्ता होज्जं अप्पा सगेहिं कम्मेहिं।
हिंडदि पारमपारं संसारं मोहसंछण्णो।।

70. उवसंतखीणमोहो मग्गं जिणभासिदेण समुवगदो।
णाणाणुमग्गचारी णिव्वाणपुरं वजदि धीरो।।

71. एक्को चेव महप्पा सो दुवियप्पो तिलक्खणो होदि।
चदु-चंकमणो भणिदो पंचग्गगुणप्पधाणो य।।

72. छक्कापक्कमजुत्तो उवउत्तो सत्तभंगसब्भावो।
अट्ठासओ णवट्ठो जीवो दसठाणगो भणिदो।।

73. पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसबंधेहिं सव्वदो मुक्को।
उड्ढं गच्छदि सेसा विदिसावज्जं गदिं जंति।।

74. खंधा य खंधदेसा खंधपदेसा य होंति परमाणू।
इदि ते चदुव्वियप्पा पुग्गलकाया मुणेयव्वा।।

75. खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसो त्ति।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणू चेव अविभागी।।

76. बादरसुहुमगदाणं खंधाणं पुग्गलो त्ति ववहारो।
ते होंति छप्पयारा तेलोक्कं जेहिं णिप्पण्णं।।

77. सव्वेसिं खंधाणं जो अंतो तं वियाण परमाणू।
सो सस्सदो असद्दो एक्को अविभागि मुत्तिभवो।।

78. आदेसमेत्तमुत्तो धादुचदुक्कस्स कारणं जो दु।
सो णेओ परमाणू परिणामगुणो सयमसद्दो।।

79. सद्दो खंधप्पभवो खंधो परमाणुसंगसंघादो।
पुट्ठेसु तेसु जायदि सद्दो उप्पादगो णियदो।।

80. णिच्चो णाणवकासो ण सावकासो पदेसदो भेत्ता।
खंधाणं पि य कत्ता पविहत्ता कालसंखाणं।।

81. एयरसवण्णगंधं दोफासं सद्दकारणमसद्दं।
खंधंतरिदं दव्वं परमाणुं तं वियाणेहि।।

82. उवभोज्जमिंदिएहि य इंदियकाया मणो य कम्माणि।
जं हवदि मुत्तमण्णं तं सव्वं पुग्गलं जाणे।।

83. धम्मत्थिकायमरसं अवण्णगंधं असद्दमप्फासं।
लोगोगाढं पुट्ठं पिहुलमसंखादियपदेसं।।

84. अगुरुगलघुगेहिं सया तेहिं अणंतेहिं परिणदं णिच्चं।
गदिकिरियाजुत्ताणं कारणभूदं सयमकज्जं।।

85. उदयं जह मच्छाणं गमणाणुग्गहकरं हवदि लोए।
तह जीवपुग्गलाणं धम्मं दव्वं वियाणेहि।।

86. जह हवदि धम्मदव्वं तह तं जाणेह दव्वमधमक्खं।
ठिदिकिरियाजुत्ताणं कारणभूदं तु पुढवीव।।

87. जादो अलोगलोगो जेसिं सब्भावदो य गमणठिदी।
दो वि य मया विभत्ता अविभत्ता लोयमेत्ता य।।

88. ण य गच्छदि धम्मत्थी गमणं ण करेदि अण्णदवियस्स।
हवदि गदिस्स य पसरो जीवाणं पुग्गलाणं च।।

89. विज्जदि जेसिं गमणं ठाणं पुण तेसिमेव संभवदि।
ते सगपरिणामेहिं दु गमणं ठाणं च कुव्वंति।।

90. सव्वेसिं जीवाणं सेसाणं तह य पुग्गलाणं च।
जं देदि विवरमखिलं तं लोए हवदि आयासं।।

91. जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा य लोगदोण्णा।
तत्तो अणण्णमण्णं आयासं अंतवदिरित्तं।।

92. आगासं अवगासं गमणट्ठिदिकारणेहिं देदि जदि।
उड्ढंगदिप्पधाणा सिद्धा चिट्ठंति किध तत्थ।।

93. जम्हा उवरिट्ठाणं सिद्धाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं।
तम्हा गमणट्ठाणं आयासे जाण णत्थि त्ति।।

94. जदि हवदि गमणहेदू आगासं ठाणकारणं तेसिं।
पसजदि अलोगहाणी लोगस्स य अंतपरिवुड्ढी।।

95. तम्हा धम्माधम्मा गमणट्ठिदिकारणाणि णागासं।
इदि जिणवरेहिं भणिदं लोगसहावं सुणंताणं।।

96. धम्माधम्मागासा अपुधब्भूदा समाणपरिमाणा।
पुधगुवलद्धिविसेसा करेन्ति एगत्तमण्णत्तं।।

परिशिष्ट-1

संज्ञा-कोश

संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	गा.सं.
अंत	चरम सीमा	अकारान्त पु.	94
अचक्खु	अचक्षु	*उकारान्त* पु., नपुं.	42
अचेदणत्त	अचेतनता	अकारान्त नपुं.	48
अज्झवसाण	मानसिक संकल्प	अकारान्त नपुं.	34
अट्ठ	सार तत्त्व	अकारान्त पु., नपुं.	2
	रूप		34
	विवेचन		72
अणण्णत्त	अपृथकता	अकारान्त नपुं.	45, 46
अणुभाग	अनुभाग	अकारान्त पु.	73
अण्णत्त	पृथकता	अकारान्त नपुं.	45, 46, 51, 96
अत्त	आत्मा	अकारान्त पु.	59, 61, 65
अत्थ	अर्थ	अकारान्त पु., नपुं.	56
अत्थिकाय	अस्तिकाय	अकारान्त पु.	5, 6
अत्थित्त	अस्तित्व	अकारान्त नपुं.	4, 22
अधम्म	अधर्म	अकारान्त पु.	4, 91, 95, 96
अप्प	आत्मा	अकारान्त पु.	63, 69, 71
	स्वरूप	अकारान्त पु.	63
अप्पाण	स्वरूप	अकारान्त पु.	62

अभाव	असत् पदार्थ	अकारान्त पु.	15
	नाश		20
	अविद्यमान		21
	सर्वथा अस्तित्व रहित/अनुपस्थित		35
	अभाव		44
अयण	अयन	अकारान्त पु., नपुं.	25
अलोअ	अलोक	अकारान्त पु.	3
अलोग	अलोक	अकारान्त पु.	87, 94
अवगास	ठौर	अकारान्त पु.	92
आउ	आयु	अकारान्त नपुं.	30
आगास	आकाश	अकारान्त पु., नपुं.	92, 94, 95, 96
आदि	वगैरह	**इकारान्त** पु.	20
आदेस	प्रयोजन/प्रश्न-उत्तर	अकारान्त पु.	14
	उपदेश		78
आभिणि	मतिज्ञान	**इकारान्त** नपुं.	41
आयास	आकाश	अकारान्त पु., नपुं.	4, 22, 90, 91, 93
आसअ	आधार	अकारान्त पु.	72
आसय	आधार	अकारान्त पु.	10
इंद	इन्द्र	अकारान्त पु.	1
इंदिय/इंदिअ	इन्द्रिय	अकारान्त पु., नपुं.	30, 82
उच्छेद	नाश	अकारान्त पु.	37
उड्ढ	ऊर्ध्व	अकारान्त नपुं.	73
उदय	उदय	अकारान्त पु.	56, 58
उदय	जल	अकारान्त पु., नपुं.	85

उदु	ऋतु	***उकारान्त*** पु.,नपुं., स्त्री.	25
उप्पत्ति	उत्पत्ति	**इकारान्त** स्त्री.	11
उप्पाद	उत्पाद	अकारान्त पु.	8, 10, 11, 15, 19, 54, 55
उवओग	उपयोग	अकारान्त पु.	16, 27, 40
उवलद्धि	गुण	**इकारान्त** स्त्री.	96
उवसम	उपशम	अकारान्त पु.	56, 58
उस्सास	श्वासोच्छवास	अकारान्त पु.	30
एगत्त	एकत्व	अकारान्त नपुं.	49
	एकरूपता		96
एयत्त	एकत्व	अकारान्त नपुं.	47
ओगास	स्थान	अकारान्त नपुं.	7
ओगाह	एक क्षेत्र	अकारान्त पु.	65
ओधि	अवधिज्ञान	**इकारान्त** पु., स्त्री.,	41
ओहि	अवधिज्ञान	**इकारान्त** पु., स्त्री.,	42
कज्ज	कार्य	अकारान्त नपुं.	36, 39
	कर्म		38
कट्ठा	काष्ठा	आकारान्त स्त्री.	25
कम्म	कर्म	अकारान्त पु., नपुं.	27, 28, 38, 39, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 65, 66, 68, 69, 82
कला	कला	आकारान्त स्त्री.	25
कसाय	कषाय	अकारान्त पु.	32
काअ	शरीर	अकारान्त पु.	34

काय	समूह	अकारान्त पु.	4, 64, 67, 91
	काय		22
	शरीर		39, 82
कारण	कारण	अकारान्त नपुं.	36, 60, 78, 81, 84, 86, 94, 95
कारण	आधार	अकारान्त नपुं.	22, 92
काल	काल	अकारान्त पु.	23, 24, 25, 26, 40, 80
काल	समय	अकारान्त पु.	67
किरिया	क्रिया	आकारान्त स्त्री.	84, 86
कुमदि	कुमति	**इकारान्त** स्त्री.	41
कुसुद	कुश्रुत	अकारान्त नपुं.	41
केवल	केवलज्ञान	अकारान्त नपुं.	41
ख	आकाश	अकारान्त नपुं.	3
खंध	स्कंध	अकारान्त पु.	66, 74, 75, 76, 77, 79, 80, 81
खय	क्षय	अकारान्त पु.	56
खीर	दूध	अकारान्त नपुं.	33
गंध	गंध	अकारान्त पु.	24, 51
गदि	गति	**इकारान्त** स्त्री.	2, 73, 88
	गमन		84, 92
गदिणाम	गतिनाम	अकारान्त पु., नपुं.	19
गमण	गमन	अकारान्त नपुं.	85, 87, 88, 89, 92

गमण	गति	अकारान्त नपुं.	93, 94, 95
गहण	पकड़	अकारान्त नपुं.	67
गुण	गुण	अकारान्त पु., नपुं.	1,5,10,13, 15, 16,21, 44, 45, 50
गुण	भाव	अकारान्त पु., नपुं.	53, 71
	आश्रित		56
	स्वभाव		78
गोयर	पहुँच	अकारान्त पु.	35
चंकमण	परिभ्रमण	अकारान्त नपुं.	71
चक्खु	चक्षु	*उकारान्त* पु., नपुं.	42
चित्त	जीव	अकारान्त नपुं.	32
चिर	दीर्घकाल	अकारान्त नपुं.	26
चेद	चेतना	अकारान्त पु.	27
	आत्मा		29
चेदणा	चेतना	आकारान्त स्त्री.	16
जिण	जिनेन्द्र	अकारान्त पु.	1, 48, 70
	जिन	अकारान्त पु.	3, 61
जिणवर	जिनेन्द्र	अकारान्त पु.	54
	जिनवर		93, 95
जीव	जीव	अकारान्त पु., नपुं.	4, 16, 17, 19, 20, 21,22,23,27,30, 32,34,38,39,40, 52, 53,54,56,57, 58,62,67,68,72, 85, 88, 90, 91
जीव	प्राण-धारण	अकारान्त पु., नपुं.	35

जोग	योग	अकारान्त पु.	32
ट्ठाण	स्थान	अकारान्त पु., नपुं.	93
	स्थिति	अकारान्त पु., नपुं.	93
ठाण	ठहरना	अकारान्त पु., नपुं.	89, 94
ट्ठिदि	स्थिति	**इकारान्त** स्त्री.	73, 92, 95
ठिदि	ठहरना	**इकारान्त** स्त्री.	86
	स्थिति	**इकारान्त** स्त्री.	87
णर	मनुष्य	अकारान्त पु.	16
णाण	जानना	अकारान्त नपुं.	28, 38, 39
णाण	ज्ञान	अकारान्त नपुं.	40, 41, 43, 47, 48, 49, 52, 70
णाणावरण	ज्ञानावरण	अकारान्त नपुं.	20
णाली	नाली	**ईकारान्त** स्त्री.	25
णास	नाश	अकारान्त पु.	15, 55
णिमित्त	कारण	अकारान्त नपुं.	60
		पु. की तरह प्रयुक्त	
णिमिस	निमिष	अकारान्त पु.	25
णिव्वत्ति	उत्पादन	**इकारान्त** स्त्री.	66
णिव्वाणपुर	मोक्ष नगर	अकारान्त नपुं.	70
तइलोक्क	तीन लोक	अकारान्त नपुं.	5
तस	त्रस/ दो इन्द्रियादि जीव	अकारान्त पु.	39
तिरिय	तिर्यंच	अकारान्त पु.	16, 55
तिहुअण	तीन लोक	अकारान्त नपुं.	1

तेलोक्कतीन लोक		अकारान्त नपुं.	76
थावर	स्थावरकाय/ एकेन्द्रिय जीव	अकारान्त पु.	39
दंसण	दर्शन	अकारान्त पु., नपुं.	40, 42, 52
दविय	द्रव्य	अकारान्त पु., नपुं.	6, 9, 43, 88
दव्व	द्रव्य	अकारान्त पु., नपुं.	10, 11, 12, 13, 14, 26, 44, 45, 50, 51, 66, 81, 85, 86
दव्व	वस्तु	अकारान्त पु., नपुं.	14
दुक्ख	दुख	अकारान्त पु., नपुं.	67
देव	देव	अकारान्त पु., नपुं.	17, 18, 19, 55
देस	प्रदेश	अकारान्त पु.	31
	देश		74, 75
देह	देह	अकारान्त पु., नपुं.	27, 35
देहि	जीव	**इकारान्त** पु.	17, 33
धण	धन	अकारान्त नपुं.	47
धम्म	धर्म	अकारान्त पु., नपुं.	4, 85, 86, 91, 95, 96
धम्मत्थि	धर्मास्तिकाय	अकारान्त पु.	88
धम्मत्थिकाय	धर्मास्तिकाय	अकारान्त पु.	83
धादु	धातु	***उकारान्त*** पु.	78
धुवत्त	ध्रौव्यता	अकारान्त नपुं.	10, 11

धुवत्ता	ध्रौव्यता	आकारान्त स्त्री.	8
पउमराय	लाल	अकारान्त पु.	33
पज्जअ/पज्जय	पर्याय	अकारान्त पु.	5, 9, 10, 12, 15, 16, 21
पज्जाय/	पर्याय	अकारान्त पु.	8, 18
पज्जाअ	पर्याय/परिणमन	अकारान्त पु.	11
पदेस	प्रदेश	अकारान्त पु.	74, 75, 80, 83
पयडि	प्रकृति	**इकारान्त** स्त्री.	55, 73
पयत्थ	पदार्थ	अकारान्त पु.	8
परमाणु	परमाणु	***उकारान्त*** पु.	51, 74, 75, 77, 78, 79, 81
परिणाम	स्वभाव	अकारान्त पु.	56
	परिणाम/परिणमन		78, 89
परिमाण	परिमाण	अकारान्त नपुं.	96
परियट्टण	परिमाण	अकारान्त नपुं.	6, 23
परिवुड्ढि	बढ़ोतरी	**इकारान्त** स्त्री.	94
पसर	फैलाव	अकारान्त पु.	88
पहु	प्रभु	***उकारान्त*** पु.	27
पाण	प्राण	अकारान्त पु., नपुं.	30
पाणित्त	प्राणीपन/ प्राणित्व	अकारान्त नपुं.	39
पार	समुद्र	अकारान्त पु.	69
पुग्गल	पुद्गल	अकारान्त पु., नपुं.	4,22, 66, 67,76, 82, 85,88,90,91

पुग्गलकाय	पुद्गलास्तिकाय	अकारान्त पु.	74
पुढवी	पृथ्वी	**ईकारान्त** स्त्री.	86
पुधत्त	पृथकत्व	अकारान्त नपुं.	47
	पृथकता/भेदभाव		52
पोग्गल	पुद्गल	अकारान्त पु., नपुं.	23, 26, 61, 64, 65
प्पदेस	प्रदेश	अकारान्त पु.	73
प्पभव	उत्पन्न	अकारान्त पु.	79
	(समास के अन्त में)		
प्पयार	भेद	अकारान्त पु.	66
	प्रकार		76
फल	फल	अकारान्त पु., नपुं.	38, 39, 63, 68
फास	स्पर्श	अकारान्त पु., नपुं.	24, 51, 81
बंध	बंध	अकारान्त पु.	73
बल	बल	अकारान्त पु.	30
भंग	व्यय	अकारान्त पु.	8
	कथन		72
भव	संसार	अकारान्त पु.	1
	भाव		77
भाव	पर्याय	अकारान्त पु.	6, 55
	स्वभाव		6
	भाव		12, 13, 53, 57, 58, 59, 60, 61, 68

भाव	सत् पदार्थ	अकारान्त पु.	15
	पदार्थ		15, 16, 17
	द्रव्यकर्म		20
	विद्यमान		21
	उत्पत्ति		21
	स्वरूप/अस्तित्व		38
	प्रकृति		62, 65
	रीति		68
भेय	प्रकार	अकारान्त पु., नपुं.	41
मग्ग	मार्ग	अकारान्त पु.	70
मच्छ	मछली	अकारान्त पु.	85
मण	मनःपर्ययज्ञान	अकारान्त पु., नपुं.	41
	मन	अकारान्त पु.	82
मणुय	मनुष्य	अकारान्त पु.	55
मणुस	मनुष्य	अकारान्त पु.	18, 19
मणुसत्तण	मनुष्यता	अकारान्त नपुं.	17
मत्ता	परिमाण	आकारान्त स्त्री.	26
मरण	मरण	अकारान्त पु., नपुं.	18
मल	मैल	अकारान्त पु.,नपुं.	28, 34
मास	मास	अकारान्त पु.	25
मिच्छादंसण	मिथ्यादर्शन	अकारान्त नपुं.	32
मुह	मुख	अकारान्त नपुं.	2
मेत्त	मात्र	अकारान्त नपुं.	78
मोह	मोह	अकारान्त पु.	69, 70

रज	धूल	अकारान्त पु., नपुं.	34
रत्ति	रात्रि	**इकारान्त** स्त्री.	25
रयण	रत्न	अकारान्त पु., नपुं.	33
रस	रस	अकारान्त पु., नपुं.	24, 51, 81
रासि	समूह	**इकारान्त** पु., स्त्री.	38
रूव	प्रकार	अकारान्त पु., नपुं.	43
लक्खण	प्रकार	अकारान्त पु., नपुं.	71
लिंग	लक्षण	अकारान्त नपुं.	6
लोअ	लोक	अकारान्त पु.	3, 85
लोग	लोक	अकारान्त पु.	22, 28, 29, 31, 64, 83, 87
लोय	लोक	अकारान्त पु.	87
वअ	व्यय	अकारान्त पु.	15
वक्क	वचन	अकारान्त नपुं.	1
वचि	वाणी	**इकारान्त** स्त्री.	35
वट्टणा	वर्तना	आकारान्त स्त्री.	24
वण्ण	वर्ण	अकारान्त पु.	24, 51, 81
वयण	कथन	अकारान्त पु., नपुं.	49
	वचन		61
ववदेस	नाम	अकारान्त पु.	46
	कथन		52
ववहार	व्यवहार	अकारान्त पु.	76
विगम	विनाश	अकारान्त पु.	11
विणास	विनाश	अकारान्त पु.	11, 19
	नाश		54

विदिसा	विदिशा	आकारान्त स्त्री.	73
विध	प्रकार	अकारान्त पु.	47
विभंग	कुअवधि	अकारान्त पु.	41
वियप्प	भेद	अकारान्त पु.	71
विसय	विषय	अकारान्त पु.	42
	उद्देश्य		46
विसेस	विशेष	अकारान्त पु., नपुं.	51
विह	प्रकार	अकारान्त पु.	38, 40
व्वय	व्यय	अकारान्त पु.	10
व्वियप्प	प्रकार	अकारान्त पु.	74
संखा	संख्या	आकारान्त स्त्री.	46
	गणना		80
संग	मेल	अकारान्त पु., नपुं.	79
संघाद	समूह	अकारान्त पु.	79
संठाण	संरचना/आकार	अकारान्त नपुं.	46
संवच्छर	वर्ष	अकारान्त पु.	25
संसार	संसार	अकारान्त पु.	69
सत्तभंग	सात वाक्य	अकारान्त पु.	14
सत्ता	सत्ता	आकारान्त स्त्री.	8, 9
सद्द	शब्द	अकारान्त पु., नपुं.	79, 81
सब्भाव	स्वभाव	अकारान्त पु.	9, 53, 72
	अस्तित्व	अकारान्त पु.	11, 23, 37, 87
सभाव	स्वभाव	अकारान्त पु.	7, 23, 52, 65

सभाव	अपनी प्रकृति	अकारान्त पु.	65
समअ/समय	समय	अकारान्त पु.	3, 25
	सिद्धान्त	अकारान्त पु.	2
समण	श्रमण	अकारान्त पु.	2, 12
समवत्ति	साथ-साथ रहना	**इकारान्त** पु.	50
समवाअ	समूह	अकारान्त पु.	3
	समवाय (घनिष्ट संबंध)		50
समवाय	अविच्छिन्न संयोग	अकारान्त पु.	49
सहाअ	स्वभाव	अकारान्त पु.	5
सहाव	स्वभाव	अकारान्त पु.	35, 61, 62, 95
सासण	आगम	अकारान्त नपुं.	57
सिद्धि	वैधता	**इकारान्त** स्त्री.	50
सुद	श्रुतज्ञान	अकारान्त नपुं.	41
सुर	देव	अकारान्त पु.	16
सुह	सुख	अकारान्त नपुं.	28, 29, 67
हाणि	अभाव	**इकारान्त** स्त्री.	94
हेदु	कारण	अकारान्त पु.	94

अनियमित संज्ञा

सिरसा 3/1	सिर से	2

क्रिया-कोश

अकर्मक

क्रिया	अर्थ	गा.सं.
अस	रहना	34
चिट्ठ	ठहरना	92
चेट्ठ	रहना	34
जा	उत्पन्न होना	18
जाय	उत्पन्न होना	17, 79
जीव	जीना	30
णस्स	नष्ट होना	17
पसज	प्राप्त होना	48
	होना	94
विज्ज	विद्यमान होना	46, 58
	होना	89
संभव	संभव होना	13
	प्रकट होना	14
	घटित होना	89
हव	होना	3, 8, 13, 17, 20, 27, 44, 57, 60, 68, 85, 86, 90, 94
हव	है	82
हो	होना	5, 35, 36, 43, 46, 49, 51, 54, 59, 71, 74, 76
होज्ज	होना	69

क्रिया-कोश

सकर्मक

क्रिया	अर्थ	गा.सं.
इच्छ	स्वीकार करना	45
उप्पाद	उत्पन्न करना	36
कर	करना	11, 57, 63, 88, 96
कुण	करना	21, 59, 65
कुव्व	बनाना	47
	करना	52, 55, 62, 63, 89
गच्छ	प्राप्त करना	6, 65
	प्राप्त करना	9
	गमन करना	73
	गति करना	88
जा	प्राप्त करना	18
	करना	73
जाण	जानना	82, 86, 93
जुज्ज	जोड़ना	37
दविय	गति करना	9
दे	देना	63, 67, 90
	प्रदान करना	92
पकुव्व	करना	15
	हासिल/प्राप्त करना	44
पभासय	प्रकाशित करना (प्रेरणार्थक)	33
परूव	प्रतिपादित करना	12

भण	कहना	75
भण्ण	कहना	10, 47
भुंज	भोगना	63, 67
लह	रखना	28
वज	जाना	70
विंद	अनुभव करना	39
विजह	छोड़ना	7
वियप्प	संशय करना	43
वियाण	जानना	77, 81, 85
वोच्छ	कहना	2
सुण	सुनना	2
हिंड	भ्रमण करना	69

अनियमित क्रिया

चेदयदि	अनुभव करना	38
पप्पोदि	प्राप्त करना	29
वियाणीहि	जानना	40, 66

अनियमित कर्मवाच्य

भण्णंते	कहा जाता है	9

कृदन्त-कोश

संबंधक कृदन्त

कृदन्त शब्द	अर्थ	कृदन्त	गा.सं.
अधिगंता	पहुँच कर	संकृ अनि	28
किच्चा	करके	संकृ अनि	20
पणमिय	प्रणाम करके	संकृ	2
मुत्ता	छोड़कर	संकृ अनि	59

भूतकालिक कृदन्त

अंतरिद	भेद किया हुआ	भूकृ अनि	81
अ-कद	नहीं किया हुआ	भूकृ अनि	66
अणुबद्ध	बाँधा हुआ	भूकृ अनि	20
अण्णभूद	पृथक हुआ	भूकृ अनि	52
अदीद	पार किया हुआ	भूकृ अनि	35
अवमद	स्वीकृत	भूकृ अनि	48
अविभत्त	अभिन्न	भूकृ अनि	87
अविरुद्ध	अविरोध	भूकृ अनि	54
आवण्ण	प्राप्त हुआ	भूकृ अनि	31, 32
इय	ज्ञात	भूकृ	16
	घटित	भूकृ	44
उप्पण्ण	उत्पन्न हुआ	भूकृ अनि	18, 36
उवउत्त	तर्कोचित	भूकृ अनि	72
ओगाढ	व्याप्त	भूकृ अनि	83

कद	किया गया	भूकृ अनि	58
खित्त	डाला हुआ	भूकृ अनि	33
गद	स्थित	भूकृ अनि	65
	विभाजित	भूकृ अनि	76
जाद	हुआ	भूकृ	29
	उत्पन्न हुआ	भूकृ	87
जिद	जीत लिया	भूकृ अनि	1
जीविद	जीया	भूकृ	30
जुत्त	संयुक्त	भूकृ अनि	56
	युक्त		72, 84, 86
जुद	युक्त	भूकृ अनि	32, 39
	सहित		42
णट्ठ	नष्ट हुआ	भूकृ अनि	17, 18
णिचिद	भरा हुआ	भूकृ अनि	64
णिद्दिट्ठ	प्रतिपादित	भूकृ अनि	50
	किया गया		
णिप्पण्ण	संपन्न	भूकृ अनि	5, 76
णिबद्ध	संयुक्त	भूकृ अनि	52
णियद	ध्रुव	भूकृ अनि	4
	निश्चित		79
दिट्ठ	देखा गया	भूकृ अनि	66
पडिबद्ध	संबद्ध	भूकृ अनि	67
पढिद	कहा गया	भूकृ	57
पण्णत्त	कहा गया	भूकृ अनि	3, 23, 42, 93

परिणद	परिवर्तित हुआ	भूकृ अनि	6
	रूपान्तरित		31
	रूपान्तरित/परिवर्तित		84
परूविद	कहा गया	भूकृ	51
पविहत्त	भिन्न किया	भूकृ अनि	80
पुट्ठ	पहुँचा हुआ	भूकृ अनि	83
	छुआ हुआ		79
भणिद	कहा गया	भूकृ	54, 71, 72, 95
भणिय	कहा गया	भूकृ	43
भासिद	उपदिष्ट	भूकृ	70
भिण्ण	विछिन्न	भूकृ अनि	35
ब्भूद	बना हुआ	भूकृ अनि	96
भूद	बना हुआ	भूकृ अनि	9, 12, 22
	हुआ		40, 60, 84, 86
मय	माना गया	भूकृ अनि	87
मिस्सिद	मिला हुआ	भूकृ अनि	56
मुक्क	मुक्त	भूकृ अनि	73
रहिद	बिना	भूकृ अनि	26
वंदिय	वंदित	भूकृ	1
ववगद	रहित	भूकृ अनि	24
विजुद	रहित	भूकृ अनि	12, 32
विजुत्त	रहित	भूकृ अनि	12
विणट्ठ	नष्ट हुआ	भूकृ अनि	18

वित्थिण्ण	विस्तार लिया हुआ	भूकृ अनि	56
विप्पमुक्क	छुटकारा पाया हुआ	भूकृ अनि	28
विभत्त	भिन्न	भूकृ अनि	87
विरुद्ध	विरोध	भूकृ अनि	54
विसिट्ठ	युक्त	भूकृ अनि	34
विसेसिद	परिभाषित	भूकृ अनि	27
संछण्ण	आच्छादित	भूकृ अनि	69
संजुत्त	युक्त	भूकृ अनि	6, 10, 27
	सहित		40
	सम्मिलित हुआ		41
संजुद	युक्त	भूकृ अनि	55
	संयुक्त		68
संभूद	उपस्थित रहा	भूकृ अनि	23
समत्थ	मिले हुए/ संयुक्त	भूकृ अनि	75
समुवगद	भली प्रकार से गया	भूकृ अनि	70
सहिय	सहित	भूकृ अनि	42

विधि कृदन्त

उवभोज्ज	भोगे जाने योग्य	विधिकृ अनि	82
णेअ	जानने योग्य	विधिकृ अनि	78
मुणेयव्व	समझा जाना चाहिये	विधिकृ	61, 74

वर्तमान कृदन्त

कुव्वं	करता हुआ	वकृ अनि	61
देंत	देता हुआ	वकृ	7
पविसंत	प्रवेश करता हुआ	वकृ	7
मिलन्त	मिलता हुआ	वकृ	7
विजुज्जमाण	अलग होता हुआ	वकृ	67
वेदयमाण	भोगता हुआ	वकृ अनि	57
संसरमाण	परिभ्रमण करता हुआ	वकृ	21
सुणंत	सुनता हुआ	वकृ	95

विशेषण–कोश

शब्द	अर्थ	गा.सं.
अंत	अन्त	1, 28, 53, 91
	अंतिम	77
अकज्ज	परिणाम-नहीं (उत्पन्न नहीं)	84
अखिल	पूरा	90
अगंध	गंध-रहित	83
अगुरुगलघुग	अगुरुलघुगुण से युक्त	84
अगुरुलहुग	अगुरुलघुगुण-संयुक्त	24
अगुरुलहुग	अगुरुलघुगुण से युक्त	31
अग्ग	सर्वोपरि	53, 71
अजुद (अजुदा)	अनादि	50
अजुदसिद्ध	अपृथक्करणीय	50
अणंत	अनन्त	8, 28, 29, 31, 42, 44, 53, 84
अणण्ण	अपृथक	9, 12
	एकमेक	40
	अभिन्न	51
	अभिन्न/अपृथक	91
अणण्णमइय	अपृथक/अभिन्न बने हुए	4
अणवकास	स्थान-रहित	80
अणाइणिहण	आदि अंत-रहित/शाश्वत	53
अणिंदिय	अतीन्द्रिय	28

अणिधन	अन्तरहित	42
अणुग्गहकर	उपकारी	85
अण्ण	अन्य/नया	17
	अन्य	59, 82, 88, 91
	पृथक	44
अण्णण्ण	परस्पर	65, 67
अण्णमण्ण	एक दूसरे में	7
	परस्पर	48
अण्णाणि	अज्ञानी	49
अण्णोण्ण	परस्पर/एक दूसरे में	7
	परस्पर/आपस में	54
अतीद	रहित	1
अत्थंतरिद	अर्थ में भिन्न	48, 49
अत्थिकाइय	अस्तिकायिक	22
अदिक्कंत	रहित	39
अद्ध	आधा	75
अद्धद्ध	आधे का आधा/चौथाई	75
अधमक्खा	अधर्म नामवाले/नामक	86
अपक्कम	क्रमरहित	72
अपार	अनन्त	69
अपुध	अभिन्न	96
अपुधब्भूद	अपृथक बना हुआ (प्रदेशभेद-रहित)	50

अप्फास	स्पर्श-रहित	83
अभव्व	अभव्य	37
अभूदपुव्व	अपूर्व	20
अमय	किसी से संरचित नहीं	22
अमिअ	परिमाण-रहित	3
अमुत्त	अमूर्त	24, 29
अरस	रस-रहित	83
अवगाढ	व्याप्त	65
अवण्ण	वर्ण-रहित	83
अविण्णाण	अज्ञान	37
अविभत्त	अविभाजित	45
अव्वत्तव्व	अवक्तव्य	14
अव्वदिरित्त	अपृथक	13
अव्वाबाध	अखंडित	29
असंखाद	असंख्यात	31
असंखादिय	असंख्यात	83
असद्द	शब्द-रहित	77, 78, 81, 83
आदि	प्रथम/प्रमुख	16
इदर	अन्य	17
	विपरीत (पूर्ण)	37
उग्गद	निकला हुआ	2
उत्तम	श्रेष्ठ	3
उप्पादग	फलोत्पादक	79

उवसंत	दमन किया गया	70
उहय	दोनों	14
एक्क	सामान्य	8
	समरूप	34
	कोई	38
ओगाढ	गहरा	64, 67
कत्तार	करनेवाला	60
कत्तु	कर्त्ता	27, 59, 61, 68, 69
	करनेवाले	57, 60
	निर्माता	80
केवलिय	केवल संबंधी	42
खइय	क्षायिक	58
खओवसमिय	क्षायोपशमिक	58
खिप्प	शीघ्र	26
खीण	नष्ट किया गया	70
चेदग	चेतनावाला जीव	38
	सचेतन	68
जारिस	जैसा	57
ठाणग	भेदवाला	72
णंताणंत	अनन्तानन्त	64
णाणि	ज्ञानी	43, 48, 49
णारय	नारकी	16
णिच्च	शाश्वत	6, 80, 84

णिच्चयण्हु	निश्चय स्वरूप को जाननेवाले	45
णियद	ध्रुव	4
णिवारण	हटानेवाला	2
णेग	अनेक	43
णेरइय	नारकी	55
तच्चण्हु	तत्त्वज्ञ	47
तारिस	वैसे ही	62
तेक्कालिय	तीन काल में उत्पन्न	6
देहत्थ	देह में स्थित	33
धीर	धैर्यवान	70
पगासग	प्रकाशित करनेवाला	51
पर	अन्य	66
परायत्त	पराधीन	25
परावर	पूर्वापर	104
पसाधग	साधनेवाला	49
पिहुल	फैला हुआ	83
पुधग	पृथक	96
प्पधाण	मुख्य	53, 71
	प्रमुख	92
बहु	अनेक	56, 66
बहुग	अनेक	16, 32, 46
बादर	स्थूल	64
	बादर	76

भोत्तु	भोक्ता	27, 68, 69
भव	उत्पन्न	26
भव्व	भव्य	37
भेत्तु	भेद करनेवाला	80
मग्गचारी	सम्मत मार्ग पर चलनेवाला	70
मधुर	मधुर	1
मय	युक्त	22
मलिण	मलिन	34
मह	श्रेष्ठ	71
महंत	बड़े	4
मत्त	परिमाणवाला	27
मुत्त	मूर्त	27, 82, 77
	मूर्तिक	78, 97
मेत्त	मात्र	87
लक्ख	लक्षणवाला	24
वस	के कारण (अधीन)	14
वदिरित्त	वियुक्त	91
विण्णाण	ज्ञान	37
विभत्त	विभाजित	45
विविध	अनेक प्रकार	64
विविह	नाना प्रकार	5
विसद	स्पष्ट	1
विसेस	विशिष्ट	96
विस्स	अनेक	43

संसारि	संसारी	32
स	निजी	62
स-अंत	अंत-सहित	53
स-अवकास	स्थान-सहित	80
सग	अपना	7
	आत्मीय	29
	निजी	59, 61, 62
	अपना	62, 69
	स्व	89
स-णिव्वाण	निर्वाण-सहित	2
स-देहमेत्त	अपनी देह मात्र	33
स-प्पडिवक्ख	प्रतिपक्ष-सहित	8
समाण	समान	96
सयल	पूरा	75
सल्लक्खणय	सत् लक्षणवाला	10
स-विस्सरूव	नाना स्वरूपों	8
	में विद्यमान	
सव्वण्हु	सर्वज्ञ देव	10, 29
सस्सद	शाश्वत	37, 77
सहिद	युक्त	21
सिद्ध	सिद्ध	20, 32, 35, 36, 92, 93
सुण्ण	शून्य	37
सुहुम	सूक्ष्म	64, 76

सेस	शेष	22, 73, 90
हिद	हितकारी	1

अनियमित विशेषण

अविभागी 1/1	विभाजन-रहित	75, 77
असदि 7/1	अभाव होने पर	37
असदो 6/1	असत्	19
	अविद्यमान	54, 55
तत्तिदयं 1/1	वह तीन का समूह	14
तावदिओ 1/1	वास्तव में यह	19
तव्विवरीदं 2/1	उसके विपरीत	45
दरसी 1/1	देखनेवाला	28, 29
णाणिणं 2/1	ज्ञानी	47
धणिणं 2/1	धनी	47
सदो 6/1	सत्	19
	विद्यमान	54, 55

संख्यावाची विशेषण

अट्ठ	आठ	24, 72
एक्क	एक	71, 77
एय	एक	81
चदु	चार	2, 30, 71, 74, 78
छक्क	छ प्रकार	72
छ	छ	76
णव	नौ	72
ति	तीन	38, 41, 71
दस	दस	72
दु	दो	40, 47, 56, 71
दो	दो	12, 24, 48, 81, 100
पंच	पाँच	3, 41, 53, 71, 103
पण	पाँच	24
सत्त	सात	72
सद	सौ	1

सर्वनाम-कोश

सर्वनाम शब्द	अर्थ	लिंग	गा.सं.
इम	यह	पु., नपुं.	2
एत	यह	पु., नपुं.	2
क	कई	पु., नपुं.	32
ज	जो	पु., नपुं.	5, 10, 30, 35, 76, 77, 78, 82, 87, 89, 90
त	वह	पु., नपुं.	3, 5, 6, 9, 10, 11, 18, 20, 28, 29, 30, 31, 32, 35, 36, 39, 45, 46, 49, 56, 57, 60, 63, 71, 73, 74, 75, 76, 77, 78,79, 81, 82, 84, 86, 89,90, 91, 94
ता	वह	स्त्री.	26
सव्व	सब	पु., नपुं.	8, 28, 40, 82
	समस्त		29, 31, 39, 77, 90

अव्यय-कोश

अव्यय	अर्थ	गा.सं.
अण	नहीं	32, 91
अणु	अत्यधिक	4
	अनुरूप	85
अत्थि	अस्तित्व	5
	है	11
	अस्ति	14
अध	और	37, 38
	तब	68
अधवा	अथवा	44
अवि	भी	36, 42, 46, 47
	और	42
	पादपूरक	42
इति	शब्द स्वरूपद्योतक	3, 27
	अतः	18
	क्योंकि	19
	इस प्रकार	24,25,49,57,75,76, 93
	ही	43
	वाक्यार्थद्योतक	50
इदि	इस प्रकार	54, 55, 61, 74, 95
इव	समान	86

उ	किन्तु	32
उड्ढं	ऊपर की ओर	28, 92
उभयत्थ	दोनों अवस्थाओं में	17
उवरि	ऊपर	93
एव	ही	11, 89
एवं	पूर्वोक्त रीति से	19
	इस प्रकार	21, 54, 69
किंचि	कुछ	36, 59
किध	कैसे	59, 63, 92
कुदोचि(कुओइ)	किसी से	36
खलु	निश्चय ही	26, 39, 60
	वाक्यालंकार	40
खु	ही	14
गाढ	अत्यधिक	64
च	और	21, 37, 42, 47, 48, 88, 89
	पादपूरक	23, 90, 47
	तथा	46
	परन्तु	63
	फिर	75
चेव	ही	3, 15, 18, 71
	निश्चय ही	6
	पादपूरक	75

जं	जो	9
जदि	यदि	44, 59, 63, 92, 94
जम्हा	चूँकि	36, 93
जह	जिस प्रकार	33
	जैसे	47, 66, 85, 86
जहा	जैसे	52
ण	नहीं	7, 13, 27, 34, 36, 37, 43, 45, 49, 52, 58, 59, 60, 61, 80, 95
	न	17, 18, 88
	नहीं (रहित)	53
णत्थि	नहीं है	11, 12, 15, 19, 26, 35, 93
	नास्ति	14
णमो	नमस्कार	1
णाम	नाम	55
णिच्चं	सदैव	7
णियमेण	नियमपूर्वक/ आवश्यकरूप से	23
णो	नहीं	52
तत्तो	उसके बाद	3
तत्थ	वहाँ	65, 92
तदो	उससे	25

तम्हा	इसलिये	13, 43, 50, 58, 68, 93, 95
	इस कारण से	26
तह	उसी प्रकार	23, 33
	वैसे	47
	वैसे ही	66, 85, 86, 90
तहेव	उसी प्रकार	4
तु	और	9, 26, 38
	निश्चय ही	58
	पादपूरक	86
तेण	इसलिए	36
	उस कारण से	57
दिवा	दिन	25
दु	किन्तु/तो भी	43
	किन्तु	60, 78, 89
	तो	48, 49
	और	68, 75
दोवि	दोनों ही	87
पडुच्च	आश्रय करके	26
पि	निश्चय ही	62
	भी	80
पुण	और	30, 60
	फिर	89

पुणो	इसके अनन्तर	14
पुव्वं	विगत काल में	30
य	और	4, 7, 12, 14, 16, 18, 23, 24, 25, 27, 29, 32, 40, 46, 49, 50, 51, 53, 56, 64, 71, 74, 80, 82, 87, 88, 90, 91, 94
	किन्तु	11, 35
	पादपूरक	24, 44, 57, 74, 88
	परन्तु	34
	तथा	41, 42, 87
	ही	53
	निस्सन्देह	62
व	अथवा	11
	पादपूरक	45
वज्जं	सिवाय/बिना	73
वा	तथा	10
	अथवा	17, 26, 58
वि	भी	7, 26, 36, 37, 59, 62
	पादपूरक	41
विणा	बिना	13, 26, 60
	सिवाय	58
सदा	सदा	48

सम्मं	यथार्थ रूप से	48
	सम्यक्	62
सयं	स्वयं	29, 78, 84
सया	सदैव	84
सव्वत्थ	सभी जगह/सभी पर्याय	34
सव्वदो	सब ओर से	64
	सर्वथा/पूर्ण रूप से	73
सव्वहा	बिल्कुल	35
सह	सहित	5
सिय	किसी प्रकार से	14
	किसी एक प्रकार से	31
सुट्ठु	भली-भाँति	20
हि	निश्चय ही	22, 39, 49, 52, 61
	भी	27
	इसलिए	45
	क्योंकि	68
हु	निश्चय ही	30

परिशिष्ट–2

छंद[1]

छंद के दो भेद माने गए है-

1. मात्रिक छंद 2. वर्णिक छंद

1. मात्रिक छंद– मात्राओं की संख्या पर आधारित छंदो को 'मांत्रिक छंद' कहते हैं। इनमें छंद के प्रत्येक चरण की मात्राएँ निर्धारित रहती हैं। किसी वर्ण के उच्चारण में लगनेवाले समय के आधार पर दो प्रकार की मात्राएँ मानी गई हैं- ह्रस्व और दीर्घ। ह्रस्व (लघु) वर्ण की एक मात्रा और दीर्घ (गुरु) वर्ण की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं-

लघु (ल) (।) (ह्रस्व)

गुरु (ग) (ऽ) (दीर्घ)

(1) संयुक्त वर्णों से पूर्व का वर्ण यदि लघु है तो वह दीर्घ/गुरु माना जाता है। जैसे- 'मुच्छिय' में 'च्छि' से पूर्व का 'मु' वर्ण गुरु माना जायेगा।

(2)जो वर्ण दीर्घस्वर से संयुक्त होगा वह दीर्घ/गुरु माना जायेगा। जैसे- रामे। यहाँ शब्द में 'रा'और 'मे' दीर्घ वर्ण है।

(3) अनुस्वार-युक्त ह्रस्व वर्ण भी दीर्घ/गुरु माने जाते हैं। जैसे- 'वंदिऊण' में 'व' ह्रस्व वर्ण है किन्तु इस पर अनुस्वार होने से यह गुरु (ऽ) माना जायेगा।

(4) चरण के अन्तवाला ह्रस्व वर्ण भी यदि आवश्यक हो तो दीर्घ/गुरु मान लिया जाता है और यदि गुरु मानने की आवश्यकता न हो तो वह ह्रस्व या गुरु जैसा भी हो बना रहेगा।

---

1. देखें, अपभ्रंश अभ्यास सौरभ (छंद एवं अलंकार)

2. **वर्णिक छंद**– जिस प्रकार मात्रिक छंदों में मात्राओं की गिनती होती है उसी प्रकार वर्णिक छंदों में वर्णों की गणना की जाती है। वर्णों की गणना के लिए गणों का विधान महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक गण तीन मात्राओं का समूह होता है। गण आठ हैं जिन्हें नीचे मात्राओं सहित दर्शाया गया है-

यगण - ।ऽऽ

मगण - ऽऽऽ

तगण - ऽऽ।

रगण - ऽ।ऽ

जगण - ।ऽ।

भगण - ऽ।ऽ

नगण - ।।।

सगण - ।।ऽ

पंचास्तिकाय में मुख्यतया **गाहा छंद** का ही प्रयोग किया गया है। इसलिए यहाँ **गाहा छंद** के लक्षण और उदाहरण दिये जा रहे हैं।

लक्षण–

गाहा छंद के प्रथम और तृतीय पाद में 12 मात्राएँ, द्वितीय पाद में 18 तथा चतुर्थ पाद में 15 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण–

ऽ I I I ऽ I ऽ ऽ　　I I I I I I I I I I I I ऽ ऽ ऽ

इंदसदवंदियाणं　　तिहुअणहिदमधुरविसदवक्काणं।

ऽ ऽ ऽ I I ऽ ऽ　　I ऽ　I ऽ ऽ　I I I ऽ ऽ

अंतातीदगुणाणं　　णमो　जिणाणं　जिदभवाणं।।

ऽ ऽ　ऽ I I ऽ ऽ　ऽ ऽ ऽ ऽ　I ऽ I　ऽ ऽ ऽ

जीवा　पुग्गलकाया　धम्माधम्मा तहेव आयासं।

ऽ ऽ ऽ I　I I I ऽ　I ऽ I I I ऽ　I I I ऽ ऽ

अत्थित्तम्हि य णियदा　अणण्णमइया अणुमहंता।।

ऽ ऽ I I ऽ I I ऽ　I ऽ ऽ ऽ ऽ I ऽ　I ऽ I I I

दव्वेण विणा ण गुणा　गुणेहिं दव्वं विणा ण संभवदि।

ऽ I I ऽ ऽ　ऽ ऽ　ऽ I I ऽ ऽ　I I I　ऽ ऽ

अव्वदिरित्तो　भावो　दव्वगुणाणं　हवदि　तम्हा।।

I I ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ　　ऽ ऽ　I I ऽ I ऽ I ऽ I I ऽ

ववदेसा संठाणा　　संखा　विसया य होंति ते बहुगा।

ऽ ऽ I I ऽ ऽ ऽ　　ऽ ऽ ऽ　ऽ I　ऽ ऽ ऽ

ते तेसिमणण्णत्ते　　अण्णत्ते　चावि　विज्जंते।।

सहायक पुस्तकें एवं कोश

1.	पंचास्तिकाय	: हिन्दी अनुवादक-पन्नालाल बाकलीवाल (श्रीपरमश्रुत प्रभावक मण्डल, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास, चतुर्थ आवृत्ति, 1985)
2.	Pañcāstikāya-Sāra	: Edited and Translated by Prof. A. Chakravarti Nayanar and Prakrir text etc. edited in the present form by Dr. A.N. Upadhye (Bharatiya Jnanpith, New Delhi,2001)
3.	पाइय-सद्द-महण्णवो	: पं. हरगोविन्ददास त्रिविक्रमचन्द्र सेठ (प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी,1986)
4.	कुन्दकुन्द-शब्दकोश	: डॉ. उदयचन्द्र जैन (श्री दिगम्बर जैन साहित्य-संस्कृति संरक्षण समिति, दिल्ली, 1989)
5.	प्राकृत-हिन्दी शब्दकोश	: डॉ. उदयचन्द्र जैन (न्यु भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली, 2005)
6.	संस्कृत-हिन्दी कोश	: वामन शिवराम आप्टे (कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996)

7.	हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण, भाग 1-2	: व्याख्याता श्री प्यारचन्द जी महाराज (श्री जैन दिवाकर-दिव्य ज्योति कार्यालय, मेवाड़ी बाजार, ब्यावर, 2006)
8.	प्राकृत भाषाओं का व्याकरण	: लेखक -डॉ. आर. पिशल हिन्दी अनुवादक - डॉ. हेमचन्द्र जोशी (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1958)
9.	प्राकृत रचना सौरभ	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2003)
10.	प्राकृत अभ्यास सौरभ	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2004)
11.	प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ, भाग-1	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 1999)
12.	अपभ्रंश अभ्यास सौरभ (छंद एवं अलंकार)	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)
13.	प्राकृत- हिन्दी-व्याकरण (भाग-1, 2)	: लेखिका- श्रीमती शकुन्तला जैन संपादक- डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2012, 2013)
14.	प्राकृत-व्याकरण (संधि- समास- कारक-तद्धित-स्त्रीप्रत्यय-अव्यय)	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर, 2008)
15.	सवार्थसिद्धि	: सम्पादन-अनुवाद सिद्धान्ताचार्य पं. फूलचन्द्र शास्त्री (भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली)